मैक्सिम गोर्की

मेरा बचपन

मेरा बचपन

[मैक्सिम गोर्की की आत्मकथा के प्रथम भाग
(My Childhood) का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक

श्री ओंकार शरद

मूल्य २॥)

प्रकाशक
जन साहित्य
३७, शिवचरनलाल रोड
प्रयाग

मुद्रक
रामशरण अग्रवाल
प्रगति प्रेस,
प्रयाग

मेरा बचपन

विश्व साहित्य में मैक्सिम गोर्की का क्या स्थान है, हिन्दी के पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं परन्तु उनके साहित्य से भी अधिक विचित्र तथा संघर्षपूर्ण उनका जीवन रहा है। उनकी आत्मकथा के प्रथम भाग का अनुवाद 'मेरा बचपन' के नाम से पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। शेष दो भाग भी शीघ्र ही तैयार हो जाएँगे, ऐसी आशा है। यों तो 'मेरा बचपन' में ही गोर्की के जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू सामने आ जाता है।

हिन्दी में गोर्की के भक्तों की कमी नहीं और इसलिए पुस्तक का स्वागत होगा ही यह विश्वास है।

—शरद

'परिमली' साथियों को सस्नेह

—शरद

एक

एक छोटे से कच्चे मकान के कमरे की खिड़की के नीचे, ज़मीन पर, मेरा पिता लेटा था। काफी लम्बा, सफेद कपड़ों में लिपटा। उसके नंगे पाँवों की उँगलियाँ बुरी तरह फैल गई थीं। और उसके प्यारे हाथों की उँगलियाँ उसके कलेजे पर थीं। उसकी चमकती सी आँखें बंद थी और चेहरा नीला हो गया था। उसके दाँतों की जमी हुई पंक्तियों को देखकर मैं भयभीत हो रहा था।

मेरी माँ लाल कपड़े पहने उसपर झुकी उसके बालों को पीछे की ओर काढ़ रही थी। उसी कंघी से जिससे मैंने भी पहले अपने बाल काढ़े थे। वह बहुत धीमे स्वर में कुछ बुदबुदा सी रही थी। उसकी भूरी आँखें फूल आई थीं और मानो आँसू के रूप में पिघल कर बह रहीं थीं।

मेरी नानी मेरा हाथ पकड़े थी। मेरी नानी एक गोल, मोटी औरत जिसका सिर काफी बड़ा था, आँखें भी और नाक काफी फूली थी। वह भी रो रही थी। लेकिन उसका रोना अजीब था कि वह मेरी माँ को समझा भी रही थी। वह दूर ओर देखकर मुझे पिता की ओर ढकेल रही थी परन्तु मैं पीछे सरक रहा था,

उसके लँहगे में अपने को छुपा रहा था। मैं तनिक भयभीत और परेशान सा था।

मैंने इसके पूर्व इतने उम्र वालों या बुढ़ियों को रोते न देखा था। और नानी की वह बातें भी पूरी तरह समझ में न आ रही थीं।

'जा अपने पिता को अन्तिम प्रणाम कर। अब तू उसे फिर न देख पाएगा। वह मर गया है, मेरा प्यारा, अभी उम्र ही क्या थी...'

मैं एक कठिन बीमारी से अभी ही उठा था और मुझे याद है कि बीमारी में मेरा पिता आकर मेरे साथ खेला करता था, मुझे हँसाता था। लेकिन अचानक एक दिन वह गायब हो गया और उसकी जगह मेरी नानी मेरे पास आई। मैंने पूछा था,

'तुम कहाँ से आ रही हो?'

'उत्तर निजनी से। मैं चल कर नहीं, सवारी पर आई हूँ।' उसने कहा था। फिर वह हँसी भी थी। उसके बोलने का ढंग बहुत प्यारा था। वह काफी दयालु और अच्छी लगी थी। और उस पहले दिन से ही हम दोनों में खूब दोस्ती हो गई थी।

माँ को देख कर मैं परीशान था। उसके आँसू और उसका दुःखी चेहरा देख कर मेरे मन में भयानक चिन्ता उपज रही थी। मैंने इसके पूर्व उसे इतनी द्रवित कभी नहीं देखा था। यों वह तो ऐसे ही स्वभाव की थी कि व्यर्थ के लिए एक शब्द भी न बोलती थी। वह काफी गम्भीर, साफ और मजबूत थी। परन्तु आज उसकी अजीब हालत थी। उसके कपड़े फटे थे। और उसके बाल जो सदा ही काफी साफ रहते और किसी अच्छी हैट द्वारा ढंके रहते या जूड़ा बँधा रहता, वही बाल आज उसके सूने कंधों पर और आँखों पर झुके थे और एक

लट मेरे पिता के शान्त, निद्रामग्न चेहरे पर भी झूल रही थी। मैं काफी देर तक कमरे में खड़ा रहा परन्तु एक बार भी उसने मेरी ओर न देखा। वह लगातार रोती हुई पिता के बाल काढ़ रही थी।

जो सिपाही बाहर पहरे पर था भीतर घूर कर बोला, 'जल्दी, जल्दी, और उसे पड़ा मत रहने दो।' भयंकर तरह से चीख कर उसने कहा था।

खिड़की पर शाल का परदा पड़ा था जो इस समय पाल की तरह फहरा रहा था। एक बार मेरा पिता जब एक छोटे जहाज पर मुझे सैर को ले गया था तब रास्ते में बिजली चमकने लगी थी। मेरा पिता डर गया था। मुझे अपने घुटनों में छुपा कर चीख पड़ा था।

'डरो मत बेटे, बैठे रहो। सब ठीक हो जाएगा।'

कि एकाएक मेरी माँ तेजी से उठी और फौरन ही पीठ के बल गिर पड़ी। उसके बाल धरती पर फैल गए। उसका निर्जीव सा चेहरा नीला होने लगा। उसके दाँत भी पिता की तरह ही चिपक गए थे।

'दरवाजा बन्द कर दो और एलेक्सी को बाहर निकाल लो।' नानी गरज उठी।

इसे एक पागल करके नानी दरवाजे की ओर लपकी।

'भले आदमी! डरो मत।' वह चीखी. 'उसे मत छूना। भागो। खुदा के लिए हटो। यह ज्वर का दौरा नहीं है। यह तो प्रसव का दर्द शुरू हो रहा है।'

एक अँधेरे कोने की बड़ी सी सन्दूक के पीछे मैं छिप गया जहाँ से मैं आसानी से माँ को धरती पर तड़पते और दाँत चबाते देख सकता था जब कि नानी चारों ओर खुशी से शोर करती दौड़ रही थी।

'बाप और बेटे के नाम पर इसे सहो धारवर !'

मैं डर गया था। लोग पिता के चारों ओर घूम घूम कर बहुत सी बातें और राय मशविरा कर रहे थे परन्तु वह अचल पड़ा था मानों जल्दी ही उठ कर हँसने वाला है। यह क्रम काफी देर तक चला। माँ उसके पाँव पर अपने सिर को रगड़ती और नानी आकर उसे अलग करती कि अचानक उसी अँधेरे कमरे में बच्चे के रोने की आवाज उठी।

'खुदा का शुक्र !' सांस लेकर नानी ने कहा, 'लड़का है।' और उसने एक और मोमबत्ती जला दी।

फिर शायद उसी कोने में मैं सो गया था क्यों कि और कुछ मुझे याद नहीं।

और जो दूसरी धुँधली सी याद है वह है बरसाती दिनों के कब्रगाह का वह सूना सा हिस्सा। मैं थोड़ी फिसलनवाली ऊँची सी जमीन पर खड़ा उस खुदे हुए गड्ढे को देख रहा था जिसमें लोग पिता का ताबूत रख रहे थे। उस गड्ढे का निचला भाग पानी से गीला और मेढ़कों से भरा था—दो तो अभी अभी उस संदूक पर कूदे भी थे।

कब्र के पास केवल इतने लोग थे—वहाँ का पहरेदार, दो मजदूर फावड़ा लिए हुए, मेरी नानी और मैं। हम सभी वर्षा की सुन्दर फुहार से नहा गए थे।

'उसे गाड़ दो।' पहरेदार ने कहा और चला गया।

मेरी नानी रो पड़ी, अपने शाल के किनारे में अपना मुँह छुपा लिया। मजदूर झुक गए, उन्होंने एक फावड़ा मिट्टी उस पर छोड़ी। पानी हिल गया और मेंढ़क कब्र की दीवारों के सहारे उछलने लगे परन्तु दीवाल उन्हें पुनः गिरा देती।

'दूर हटो, अलेक्सी!' नानी ने कहा और मुझे बाहों में भर

लिया। परन्तु मैं उससे दूर हो गया क्योंकि मैं अभी जाना न चाहता था।

'या खुदा!' उसने कुछ इस तरह से शंका के स्वर में कहा कि मैं न जान पाया कि वह मेरी या खुदा की शिकायत कर रही है। थोड़ी देर तक सिर झुकाए वह वहीं खड़ी रही। यहाँ तक कि जब कब्र पूरी तरह मुंद गई तब भी वह खड़ी ही रही।

मजदूरों ने फावड़े के दूसरे छोर से जमीन को पीट कर बराबर और मजबूत कर दिया। हवा का एक तेज झोंका आया और वर्षा को उड़ा ले गया। मेरी नानी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दूर क्रास के वन में अंधेरे गिरजा की ओर ले चली।

'तुम रोए क्यों नहीं?' कब्रगाह के बाहर आकर उसने प्रश्न किया, 'तुम्हें रोना चाहिए था।'

'मुझे रुलाई नहीं आई न ऐसा कुछ लगा।' मैंने कहा।

'अगर रुलाई नहीं आई तो अब न रोना।' उसने धीरे से कहा।

कितने अचरज की बात है। उसे पहले ही कहना चाहिए था कि मुझे रोना चाहिए। मैं कठिनाई से रोया—जब मेरी भावनाओं को चोट लगी। मेरे रोने पर मेरा पिता सदा हँसता था और माँ डाँटती थी—

'खबरदार जो रोए!'

फिर हम लोग अँधेरे लाल मकानों के बीच कीचड़वाली गली में चलने लगे।

'क्या वे मेंढक नहीं निकल पायेंगे?' मैंने पूछा।

'नहीं वे नहीं निकलेंगे। उन्हें खुदा बचाए।' उसने उत्तर दिया।

मेरी माँ व मेरे पिता ने कभी भी खुदा का नाम इस ढंग से और इतने प्यार से नहीं लिया था।

कुछ दिनों बाद मेरी माँ, नानी और मैं छावनीवाली एक छोटी नाव पर यात्रा कर रहे थे। मेरा छोटा भाई मैक्सिम मर गया था जिसकी लाश सफेद कफन में लिपटी और लाल फीतों में बँधी कोने की मेज पर रखी थी।

मैं संदूकों व बिस्तरों पर बैठा बाहरी छटा देख रहा था और मुझे लग रहा था जैसे मैं घोड़े पर सवार होऊं। कभी-कभी जब नाव में थोड़ा भी पानी भर आता तो मैं कूदने-कूदने हो जाता।

'डरो मत।' कह कर नानी अपने मुलायम हाथों का सहारा दे मुझे पुनः बिस्तरों पर जमा देती। कभी-कभी एक बड़ा सा भूरे रंग का मेंढ़क पानी के ऊपर आता तो लगता कि धरती का एक भाग उठ आया है जो दूसरे ही क्षण विलीन हो जाता। यह सभी काफी चीजें हमें भुलाए थीं। केवल मेरी माँ बहुत गम्भीर और अचल बनी खड़ी थी। अपने सिर के पीछे हथेलियाँ रखे, कस कर आँखें बन्द किए वह दीवाल के सहारे खड़ी थी। उसका चेहरा काला और निष्प्रभ था। वह एक शब्द भी न बोली और बिल्कुल नई तथा बदली हुई औरत मालूम होती थी। कपड़े भी तो जो पहने थी मेरे लिए अपरिचित थे।

और हर क्षण के बाद नानी उसे बहुत कोमलता से समझाती, 'कुछ न खाओगी तो कैसे होगा, वारवरा ?'

लेकिन माँ वैसी ही खामोश और अडिग बनी रही।

नानी मुझसे फुसफुसा कर बोलती और माँ से अधिक जोर से। लेकिन दबी आवाज में ही। इससे मुझे लगा मानो नानी माँ से डर रही थी। इस भावना से मैं नानी के और पास आ गया।

'सारातोव,' अचानक माँ ने तेज व कड़ी आवाज में कहा, 'मल्लाह कहाँ है ?'

उसके शब्द भी मुझे अजीब लगे, 'सारातोव,' 'मल्लाह ।'

तभी उस नाव के उस छावनीवाली झोपड़ी में एक लम्बे कंधों, भूरे बालों वाला व्यक्ति जो नीले कपड़े पहने था एक संदूक लेकर आया । नानी ने उसे लेकर उसमें मेरे भाई के मृत शरीर को रखना शुरू किया । और जब यह क्रिया वह समाप्त कर चुकी तब संदूक को लेकर वह झोपड़ी के बाहर चली लेकिन वह इतनी मोटी थी कि बिना घूमे उस दरवाजे से न निकल सकती थी इसलिए वह वहाँ रुक गई परन्तु इस समय वह मुझे हास्य की प्रतिमा सी दिखाई पड़ी ।

'ओह, माँ !' अधीर होकर माँ चीख उठी और ताबूत अपने हाथों में ले लिया । और फिर दोनों चली गईं । झोपड़ी में मैं ही केवल नीले कपड़े वाले व्यक्ति के साथ रह गया ।

'तो तुम्हारा भाई हमें छोड़ गया ।' मुझ पर झुक कर उसने कहा ।

'तुम कौन हो ?'

'एक मल्लाह ।'

'सारातोव क्या है ?'

'वह शहर, उधर देखो बाहर ।'

मैंने बाहर देखा । जमीन पीछे छूट रही थी ।

'नानी कहाँ गई है ?'

'अपने पोते को गाड़ने ।'

'क्या उसे जमीन के नीचे गाड़ेगी ?'

'हाँ ।'

मैंने मल्लाह से बताया कि किस तरह बाप को गाड़ते वक्त मेंढ़कों को भी गाड़ दिया गया था। उसने मुझे अपनी बाहों में कस कर उठाया और चूम लिया।

'ओह बेटे! तुम यह सब अभी न समझोगे।' उसने 'कहा, उन मेंढ़कों पर रहम नहीं खाना है। अपनी माँ का दुःख देखो!'

अचानक स्टीमर जोरों से हिला। फिर भी मैं डरा नहीं, समझा नाव की आदत है। तभी मल्लाह ने मुझे नीचे उतार दिया और भाग कर बाहर गया। कहता गया।

'भागना पड़ेगा।'

मैं भी भागा। झोपड़ी के बाहर आया। उस अंधेरे में कोई न दिखाई पड़ा। केवल सीढ़ी का पीतल चमक रहा था। तभी मुझे लगा कि लोग अपना असबाब लिए जा रहे हैं। अब पता लग गया कि सभी इस नाव को छोड़ रहे थे। इसके बाद हमें भी छोड़ना पड़ेगा।

परन्तु जब मैं मजदूरों व मल्लाहों के बीच डेक पर पहुंचा तो सभी एक साथ चीखने लगे,

'तुम कौन हो? किसके साथ हो?'

'मैं नहीं जानता।'

देर तक वे मुझे धक्का देते रहे, झकझोरते रहे। अन्त में वही भूरे बालों वाला मल्लाह आया और उसने कहा,

'वह अस्पताल से आया है—अपनी झोपड़ी के बाहर... ...' मुझे उठाकर वह झोपड़ी में वापस भागा। मुझे बिस्तरे पर बैठा दिया और ऊँगली दिखा कर कहा,

'तुम पिटोगे।' बाहर जाते हुए उसने मुझे धमकाया।

थोड़ी देर मैं बैठा रहा। आखिर झोपड़े में हमें ही अकेले छोड़कर सब क्यों भाग गए?

मैं दरवाजे तक गया। यह बन्द था, कसकर। मैं पीतल की सिटकनी न खिसका सका। एक बोतल से दूध भरा था। मैंने उसे उठा लिया और अपनी पूरी शक्ति भरकर कुंडी पर मारा बोतल टूट गई और दूध मेरे हाथों और जूतों पर फैल गया।

अपनी हार पर खीझ कर मैं उन्हीं बिस्तरों पर लेट कर सोने की कोशिश करने लगा।

जब मैं जगा तब नाव फिर हिल रही थी। लहरें उछल रही थीं और सूरज की तरह ही खिड़की चमक रही थी। मेरी नानी पास में बैठी बुदबुदाती हुई अपने बालों में कंघी कर रही थी। उसके बाल काफी बड़े और कुछ नीले व काले से थे, सभी उसके कंधों पर, छाती पर, घुटनों पर छा गए, कुछ जमीन भी चूमने लगे। एक हाथ से उन्हें समेट कर उसने पकड़ा, दूसरे हाथ से एक बड़ी काठ की कंघी उसने उसमें डाल कर खींचा, दर्द से उसी का चेहरा फैल गया। आखों में लालिमा आ गई और बालों की भीड़ में उसका चेहरा छोटा दिखाई पड़ने लगा।

आज उसका मन कुछ चिढ़ा सा था। परन्तु जब मैंने पूछा कि बाल इतने लम्बे कैसे हुए तो वह पहले दिन की तरह मुलायम और सरल होकर बोल उठी।

'कंघी करने से। पहले मुझे अच्छे लगते थे परन्तु अब बुढ़ापे में बुरे लगते हैं—लेकिन तुम सो जाओ। अभी समय काफी है।'

'मैं नहीं सोना चाहता।'

'अच्छा न चाहो तो न सही।' वह मान गई। अपना जूड़ा ठीक करती हुई माँ की ओर देखा जो उसके पीछे ही कमान की तरह टेढ़ी हो कर लेटी थी। 'तुमने वह बोतल कैसे तोड़ी, ठीक-ठीक बताना।'

बात पूछने का उसका अजीब तरीका था। साफ और सुन्दर शब्द जैसे फूल। और जब वह हँसती तो उसकी आँखें फैल जातीं और उनमें चमक भर जाती। उसके सफेद दाँतों की पंक्तियाँ खिल उठतीं और गालों पर झुर्रियों के बावजूद भी वह काफी जवान और तेज मालूम होती। उसकी सारी सुन्दरता में केवल एक ही खराबी थी—उसकी लाल फूली हुई नाक। और नाक के फूले हुए नथुने। वह सदा एक चाँदी की डिबिया में सुंघनी अपने साथ रखती।

ऐसा लगता है कि उसके आने तक मैं खूब गहरी नींद में सोता रहा होऊँगा। तभी तो आकर उसने रोशनी जलाई और मुझे जगाया। वही तो मेरी एक मात्र मित्र थी जो मुझे भी बहुत प्यारी थी तथा मुझे समझती थी। उसी के अटूट प्यार ने मुझे वह शक्ति दी जिसके बलपर मैं अपने कठोर भविष्य के लिए तैयार हो सका।

चालीस साल पूर्व वे नावें बहुत धीरे चलती थीं। निजनी नोवगोरोड पहुँचने में बहुत समय लगा और मुझे वहाँ का वह सुन्दर व पहला दिन अब भी खूब याद है।

मौसम सुहाना था, और सुबह से रात तक मैं अपनी नानी के साथ डेक पर ही रहता था। वोल्गा के सुन्दर वसन्ती, सिल्क पर बने फूलों के किनारों पर, आसमान के नीचे ही सारा समय शीतल नीली चमकदार लहरों पर भूरे रंग की नावें सदा विचरती रहतीं। हमें सब नया नया सा लगता। हरी पहाड़ियाँ जैसे धरती पर बिछ गई थीं। दूर दूर पर बसे गाँव ऐसे लगते जैसे पानी की सतह पर तैरती हुई सुनहरी पत्तियाँ।

डेक पर एक ओर से दूसरी ओर जाते हुए नानी कहती—'देखो कैसा अद्भुत दृश्य है।' उसका चेहरा खिला रहता आँखें खुशी से फैली रहतीं।

कभी-कभी मेरी उपस्थिति को भूल कर वह अनमनी सी किनारों पर खड़ी होकर उत्तर की ओर घूरा करती। अपनी छाती पर हाथ मोड़ कर रख लेती। एक फीकी मुस्कुराहट से ओंठ फैले हुए होते। और आँखों में आँसू छलकते होते। और तब मैं खीझकर उसका फूलों वाला काला लंहगा खींच लेता।

'ओह!' वह भी चिढ़ जाती, 'क्या मैं सो रही थी या सपना देख रही थी जो यों जगा रहा है।

'तुम रो क्यों रही हो?'

'यह तो खुशी के कारण हैं, बेटे,' वह हँसी बना कर कहती, 'मैं अब कितनी बूढ़ी हो गई—कितनी गर्मियाँ मैंने देखीं।'

तब सुँघनी की एक चुटकी लेकर वह मुझे, अजीब भयानक, साधुओं, जानवरों और डाकुओं की कहानियाँ सुनाने लगती।

वह अपनी कहानी बड़े रहस्यमयी वाणी में सुनाती। उसका चेहरा बिल्कुल मुझसे लगा होता। वह मेरी आँखों में घूरती रहती जैसे कोई ताकत वह मेरे हृदय में उँडेल रही हो। जब वह भावमग्न होती तो लगता कि वह गा रही है। और उसका ढंग प्रतिक्षण अधिक संगीतमय होता जाता। उसकी ऐसी बातें सुनना बहुत आनन्दभरा था और जब वह कहानी समाप्त कर लेती तो मैं कह उठता।

'कहे चलो।'

'फिर तब ऐसा हुआ कि......चूल्हे के नीचे पंजों के बल चूहा बैठा रहा।'

वह कहते हुए खुद भी पंजों के बल बैठ कर सफल अभिनय करने लगती। जैसे उसकी यह आदत हो।

उसे देखने-सुनने को मल्लाहों की भीड़ लग जाती। अच्छे

स्वभावों वाले। दाढ़ी वाले बूढ़े, और जवान वे सुनते और हँसते। खुश होते और, और सुनाने की प्रार्थना करते।

'हाँ कहे चलो। दूसरी कहानी भी।'

और वे फिर कहते।

'आज मेरे ही साथ खाना खाओ।'

और खाने में नानी को वे लोग वोदका भेंट करते और मुझे तरकारियों पर ही टाल देते क्योंकि वहाँ एक व्यक्ति ऐसा था जो किसी को फल न खाने देता। और अगर कोई खाता तो उसे वह पानी में फेंक देता। वह पहरेदारों का कपड़ा पहने था परन्तु उसके बटन पीतल के थे और वह सदा ही शराब पिए रहता था। लोग उससे छिपते और बचते थे।

मेरी माँ डेक पर बहुत कम आती और सदा ही हम लोगों से कतराती थी। सदा की भाँति ही वह शांत रहती थी। आज भी मुझे उसकी लम्बी, सुन्दर आकृति और हंसमुख चेहरा याद है।

एक दिन उसने नानी से अचानक कहा था।

'माँ, तूने तो अपने को हंसी का खजाना बना दिया है।'

'अगर वे हंसना चाहते हैं तो,' नानी ने अपनी स्वाभाविक सरलता में कहा, 'संसार में हँसने के क्षण कम ही होते हैं।

और मुझे याद है जब निजनी की पहली झांकी देख कर बच्चों की तरह चीख उठी थी, 'देखो, कितना सुन्दर है।' और मुझे भी घसीट कर रेलिंग के पास ले गई थी।

'देखो, यह तुम्हारा सुन्दर निजनी है। देखो चिड़ओं के झुण्डों को। जैसे वे उड़ रहे हैं।' वह माँ की ओर घूमी। उसकी आँखें तर थीं; 'वारोश्का, एक बार तो देख। तू तो इसे बिल्कुल भूल गई। एकबार तो खुशी पी ले।'

माँ ने उदासी में हंसी लाने की कोशिश की।

उस प्यारे शहर के सामने स्टीमर रुका। नदी के बीचों बीच रुका जहाँ हजारों नावों की भीड़ लगी थी। तभी एक बड़ी नाव जिसमें खूब आदमी भरे थे आकर हमारे स्टीमर के पास रुकी और उसके लोग कूद-कूद कर मेरी स्टीमर के डेक पर आने लगे। सब से पहले थोड़ा झुक कर चलने वाला एक बूढ़ा आया जो लम्बा काला कोट पहने था। उसकी आँखें हरी थीं। उठी हुई नाक थी और लाल दाढ़ी सोने की तरह चमकती थी।

'पापा!' मेरी माँ ने तेजी से कहा और उसकी बाहों में समा गई। उसने माँ का सिर अपने छोटे-छोटे लाल हाथों से उठाया और तनिक उत्सुकता से उसके गालों को थपथपाने लगा।

'अरे, तू आ गई। अरे...रे...। क्या बात है?'

तभी नानी आगे बढ़ कर सभी आगन्तुकों को चूमने व प्यार करने लगी। फिर मुझे उनके आगे बढ़ा कर कहने लगी 'जल्दी देख, देख यह तेरा मामा है माइक, और यह तेरा मामा जैक है, यह मामी नातालिया है, यह दोनों उनके बच्चे हैं, दोनों के नाम शाश्का हैं और मामा की लड़की कतारिना है। यही मेरा पूरा परिवार है—देखो कितने लोग हैं?'

'क्या तुम अच्छी हो?' मेरे नाना ने पूछा। और नानी ने उसे तीन बार चूमा। फिर नाना ने मुझे भीड़ में से खींच लिया और सिर पर हाथ रख कर पूछा, 'और तुम कौन हो?'

'मैं अस्त्राखान से आ रहा हूँ।'

'यह क्या कह रहा है?' मेरी माँ की ओर घूम कर नाना ने पूछा और उत्तर का इन्तजार किए बिना ही कहा, 'दुड्डी तो बिल्कुल बाप की ही तरह है।' फिर रुक कर कहा, 'चलो नाव में उतरो।'

हम नाव के सहारे किनारे पर उतरे। वहाँ हरी पीली घास का गलीचा बिछा था।

मेरा नाना माँ के साथ आगे आगे चला। नाना, मेरी माँ के कंधों तक ही ऊँचा था और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता था। माँ ने ऊँचाई से उसे ताका तो लगा उसे हवा उड़ाए चल रही है उनके पीछे मेरा मामा माइक चुपचाप चल रहा था, वह भी नाना की तरह दुबला था और उसके बाल लम्बे थे। जैक के बाल घुँघराले थे। तब फिर छ बच्चों के साथ एक काली औरत चमकदार कपड़े पहने हुए आई। सभी बच्चे मुझसे बड़े थे। मैं अपनी नानी व मामी नातालिया के साथ बढ़ रहा था। वह पीली थी—आँखें नीली थीं और कुछ मोटी भी। हर कदम पर कहती थी—

'आह, अब एक कदम भी मैं नहीं चल सकती।'

'तो फिर तू साथ के सब आई क्यों, नालायक?' क्रुद्ध कर नानी डाटतीं।

मुझे न तो वे बच्चे अच्छे लगे न वे बड़े लोग ही। उनके बीच में मैं अजनबी सा बन गया था। खास तौर पर मुझे अपना मामा अच्छा न लगा। मुझे उसमें शत्रु की झलक दिखाई पड़ी।

हम लोग पहुँच गए। सामने एक छोटा सा मकान दिखाई पड़ा। यह गंदे पीले रंग से पुता था और उसकी छतें भी झुकी हुई थीं। बाहर से देखने में मकान बड़ा मालूम पड़ता था परन्तु भीतर कमरे छोटे, आंधे और भरे हुए थे। सड़ी सी हल्की गंध भी आ रही थी।

मैं भाग कर आँगन में आ गया पर वह भी अच्छा न लगा वहाँ बड़े बड़े पीपों में गहरा रंग भरा था और चारों ओर

कपड़े सूख रहे थे। एक कोने में लकड़ी का एक चूल्हा जल रहा था—कुछ उबल भी रहा था और कोई चीख रहा था—

'स्तालिन—नीला—तेजाब.......'

दो

इस प्रकार, एक संघर्ष-पूर्ण, घटना पूर्ण और अजीब जिन्दगी का आरम्भ हुआ। और मुझे यह सब लगता कि जैसे कोई कहानी किसी ने बहुत दर्द भरे दिल से सुनाई हो। आज जब मैं सब कुछ याद करता हूँ तो विश्वास भी नहीं होता कि ऐसी घटनाएँ भी घटी होंगी। बहुत सी बातों को मैं खुद नहीं मान सकता। परन्तु सचाई को मानना ही पड़ेगा। यह मैं अपना ही जीवन चरित्र नहीं लिख रहा, बल्कि यह उस परिस्थित का नक्शा है जिसमें साधारण रूसी रहते थे और अब भी रहते हैं।

मेरे नाना के परिवार में गृह कलह की भयानक बीमारी घुस आई थी। सभी बड़ों पर उसका पूरा प्रकोप था और बच्चे भी प्रभावित थे। क्योंकि मैं नानी से सुन चुका था कि मेरे सभी मामा उसी दिन से जिस दिन से मेरी माँ आई थी इस बात को जिद्द करते थे, कि परिवार की जायदादों का फौरन ही बँटवारा हो जाना चाहिये। माँ के अचानक वापस आने से तो उन्होंने बँटवारे की बातें शुरू कर दी थीं। उन्हें इस बात का डर था कि माँ अपने दहेज का दावा माँगेगी जो नाना ने दबा रखा था। क्योंकि माँ ने ऐसे व्यक्ति से शादी की थी जो नाना को नापसन्द था। मेरे मामा दहेज का धन नहीं देना चाहते थे ताकि उसमें उनको

भी भाग मिल जाए। इस झगड़े से उनके बीच में पहले से जारी बहस बन्द हो गई थी—वे चाहते थे कि रंगसाजी की एक दूकान और खोली जाए, चाहे शहर में या ओक नदी के किनारे कुनाविन गाँव में।

हम लोगों के आने के कुछ दिन बाद ही खाने के समय झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मेरे मामा उछलने लगे और लम्बी गरदन हिला-हिला कर कुत्तों की तरह टेबिल पर झुक गये तथा नाना की ओर भूँकने लगे और नाना का चेहरा लाल हो गया। उसने टेबुल पर अपना चम्मच पटकते हुए गरज कर कहा।

'मैं तुम्हें घर से निकाल दूँगा—गलियों में भीख माँगने के लिए।'

नानी का चेहरा व्यथा से भर गया और उसने कहा,

'वे जो चाहते हैं उन्हें दे दो, यदि घर में शांति रखना चाहते हो?'

'अपना मुँह बंद कर, बेवकूफ!' नाना ने डाँटा। उसकी आँखों से आग बरस रही थी।

इस पर मेरी माँ चुपचाप उठी और खिड़की पर जाकर सबों की ओर पीठ किये खड़ी हो गई।

एकाएक मामा माइक ने अपनी उल्टी हथेली से अपने भाई के चेहरे पर बहुत कस कर चपत लगाई। दूसरा मामा उस पर पिल पड़ा। दोनों ज़मीन पर एक दूसरे को गालियाँ देते हुए मल्लयुद्ध करने लगे। मामी नातालिया जो गर्भवती थी एकाएक ज़ोरों से चिल्लाकर रो पड़ी। फिर बच्चे भी चीखने लगे। माँ ने झटककर नातालिया को लिपटा लिया और बाहर की ओर ले चली। एवजेनिया, एक ग़रीब नौकरानी ने बच्चों को कमरे के बाहर किया। फिर दोनों लड़नेवाले भाइयों को अलग करते

हुए जो कुर्सियों के बीच फंस गए थे, दूकान का एक नौकर सीगान मामा माइक की पीठपर सवार हो गया। जब दूसरे नौकर ग्रेगरी ने जिसके सिर के बाल उड़े थे और दाढ़ी थी, और वह काला चश्मा लगाता था ने आकर उसका हाथ तौलिया से कस कर बाँध दिया।

काली दाढ़ी वाला मामा माइक बुरी तरह गालियाँ बक रहा था। तभी मेज की ओर बढ़ कर बूढ़े नाना ने कहा, 'ये दोनों भाई हैं, एक खून के। कितने शर्म की बात है।'

जब लड़ाई शुरू हुई थी तब मैं डर कर चूल्हे पर सवार हो गया था। वहीं से मैंने देखा कि नाना एक भीगे कपड़े से मामा जैक का चेहरा पोंछने लगे। मामा जैक पाँव पटकता हुआ रो रहा था कि तभी बहुत व्यथा पूर्ण आवाज में नानी ने कहा।

'ये दुष्ट, जैसे जंगली जानवरों का परिवार हो। जाने इन्हें कब सुबुद्धि होगी।'

अपनी बाहों को सिकोड़ कर नाना ने कहा, 'कमबख्त बूढ़ी औरत, तू ही इन जानवरों को दुनिया में लाई।'

और जब मामा जैक चला गया तब नानी कमरे में गई और कोने में खड़ी होकर प्रार्थना करने लगी, 'ऐ देवी देवताओ, इन नालायकों को सुबुद्धि दो।'

नानी ने फिर टेबिल की सभी टूटी और उल्टी पुल्टी चीजों को देख कर कहा, 'इनको देखो और बेचारी वारवरा को देखो जिसपर ये सभी इतने क्रुद्ध हैं.....देखो किसका दिल महान है!'

'खुदा के लिए अब हमें चुप ही रहना चाहिए। कमीज की मरम्मत होनी चाहिए उसे उतार डालो।' कहते हुए जब वह नानी की ओर झुका तो उसका चेहरा नानी के गाल से छू

गया । वह इतना छोटा था कि नानी को झुक कर उसका माथा चूमना पड़ा ।

'अब सब ठीक है ।' उसने कहा ।

'हाँ सब योंही ठीक हो जाएगा ।'

यह उस संधि वार्ता का प्रारम्भ था । परन्तु बात करते करते दूसरे ही क्षण नाना जमीन पर यों रेंगने लगा जैसे लड़ाई के लिए तैयार होता हुआ कोई मुर्गा । नानी के चेहरे की ओर उँगली उठा कर उसने रोष के साथ कहा, 'मैं तुम सबों को खूब जानता हूँ । तुम मुझसे अधिक उन सबों के लिए विचार करती हो और 'मुझसे अधिक उनका ख्याल रखती हो ।' कहते-कहते उसकी आवाज तेज हो गई । तुम्हारा माइक बिल्कुल बेइमान है ! और तुम्हारा जैक—पूरा नास्तिक है झूठा ! मेरी कमाई पर ही उनका पेट पलता है, कोढ़ी हैं वे । मेरे पास जो भी है वे हजम कर जाएँगे ।'

तभी मैंने अपनी बाँह घुमाई । चूल्हे पर रक्खा लोहे का ढक्कन उलट गया और झनझना कर जमीन पर गिरा । दौड़ कर नाना आया । चूल्हे के किनारे खड़े होकर मुझे घसीट कर खींचा और यों घूरने लगा जैसे मुझे जीवन में पहली बार देख रहा हो ।

'तुझे किसने चूल्हे पर चढ़ाया ? तेरी माँ ने ?'

'मैं खुद चढ़ आया था ।'

'झूठा !'

'नहीं नहीं, मैं खुद आया था । मैं डर गया था ।'

उसने मुझे खींचा और माथे पर एक चपत लगाई फिर घृणा से कहा, 'बिल्कुल अपने बाप की तरह है ! दूर हो मेरी आँखों के सामने से !'

मैं भाग कर रसोई घर के बाहर आया। काफी खुश था कि जान छूटी।

नाना की तेज चमकदार हरी आँखें सदा ही मुझ पर गड़ी रहती थीं जिनके कारण मैं सदा ही डर से काँपा करता था। मुझे याद है कि किस तरह सदा ही मैं उन तेज आँखों से बचने के लिए छिपता फिरता था। मुझे उसके कृत्य बड़े नीचता पूर्ण मालूम होते थे। वह हर आदमी से इस प्रकार बात करता था कि सभी को कष्ट होता, तथा सबों को वह बातों में क्रोधित कर दिया करता था। वह सदा कहता, 'अरे तू!' और इस अरे में वह 'रे' को इतनी दूर तक खींचता कि सुन कर सदा ही मेरे रोंगटे, घृणा और बेचैनी से खड़े हो जाते। शाम को दूकान बन्द होने पर नाना मेरे मामाओं तथा दूकान में काम करने वालों को रसोई घर में चाय पीने के लिए लिवा लाता। वे थके होते, उनके हाथों पर धुलाई की दवाइयों से जले हुए निशान होते, अपने बालों को फीतों द्वारा वे पीछे को खींच कर बाँधे रहते। उनके चेहरे काले होते जैसे रसोई घर में ही रहे हों। और आतंक की इस घड़ी में नाना मुझे अपने सामने बैठाता और दूसरे लड़कों को अपने आस-पास तथा पूरे समय तक मेरे ऊपर ही नजर गड़ाए रहता तथा औरों से अधिक मुझसे ही बातें भी करता।

नाना बहुत तेज और साफ आदमी था। उसकी [illegible] कामदानी साटन का वेस्टकोट फटा था और सूती रंगीन कमीज साफ बताती थी अधिक से ज्यादा धुलाई उसको हो चुकी है; पाजामें के घुटनों पर पैबन्द थे—लेकिन वह देखने में काफी साफ सुथरा तथा सुरुचि पूर्ण व्यक्ति मालूम होता था जब कि उसके बेटे जो टाई बाँधते थे वे वैसे न लगते थे।

मेरे आने के कुछ दिनों बाद से उसने हमें प्रार्थना सिखानी

शुरू किया। दूसरे बच्चे मुझसे बड़े थे इसलिए पढ़ना लिखना सीखते थे।

उन्हें उस्पेस्की गिरजा का पादरी पढ़ाता था। मेरी शिक्षिका थी, वह महीन आवाज वाली डरपोक मामी नातालिया। उसकी शक्ल भी बच्चों जैसी थी और उसकी आँखों में देखकर मैं जान सकता था कि उसके खोपड़े में क्या घूम रहा है। मुझे उसकी सूनी आँखों में लगातार घूरना अच्छा लगता। और मैं यही किया करता इससे वह बेचैन हो जाती और उसकी उंगलियाँ हिलने लगती, वह आँखें घुमा लेती, सिर झटकती और फुसफुसाहट के स्वर में कहती, 'बस करो...कहो, 'मेरे पिता जो स्वर्ग में हैं...' मैं पूछता, 'इसके क्या माने? पिता स्वर्ग में...।' वह घबड़ा कर अपने चारों ओर देखती फिर सहम कर कहती, 'ऐसे सवाल करना बुरा है, अशुभ है। केवल मेरे कहे को दुहराओ—'मेरे पिता......।'

ऐसी बातों से मैं चिढ़ जाता। सवाल पूछना क्यों बुरा है? मामी जो दुहराने को कहती उसके अर्थ मैं समझ न पाता। बेचारी मामी, पीली, थकी हुई परन्तु हिम्मत न हारती, अपना गला साफ करके कहती—'ऐसा नहीं—समझ कर कहो—काफी आसान है।'

परन्तु न तो वह ही न उसके बताए शब्द ही मुझे अच्छे लगे न समझ में आए। इससे मैं पूरी तरह ऊब गया मेरे लिये प्रार्थना याद रखना भी बहुत कठिन हो गया।

एक दिन नाना ने मेरी इस हरकत पर अंकुश रखा। 'अच्छा आलसी? तुम दिन रात क्या किया करते हो? कैसे? तेरे चेहरे पर संतोष के निशान नहीं बताते हैं। ये खरोंच लगाना आसान है परन्तु हमारे पिता-परमात्मा के लिए क्या? यह शायद तेरे दिमाग में नहीं घुसता?'

'इसकी याददास्त अच्छी नहीं है।' मेरी भली मामी ने धीरे से कहा। इसे सुनकर लगा जैसे नाना खुश हुआ। वह अट्टहास कर उठा और अपनी बरौनियों को ऊपर किया। 'यह कुछ नहीं। वह मार खाएगा फिर सब ठीक हो जाएगा।' फिर मेरी ओर घूम कर उसने कहा, 'क्या कभी तूने अपने बाप से मार खाई है ?'

वह क्या कह रहा था मेरी समझ में न आया, इसलिए मैं खामोश रहा। तभी माँ ने कहा, 'मैक्सिम ने कभी उसपर हाथ भी नहीं उठाया, और वह सदा मुझे भी न मारने की ही सलाह देता था।'

'ऐसा क्यों ?'

'वह कहता था कि मार से बच्चे कभी कुछ नहीं सीखते।'

'तेरा मैक्सिम ! वह पूरा बुद्धू था।' क्रोध से तेज शब्दों में नाना ने कहा, 'मृतक के लिए ऐसे शब्दों के प्रयोग के लिए खुदा मुझे क्षमा करे।'

उसके इन शब्दों से मैं क्रुद्ध हुआ और नाना ने यह देख लिया।

'तू अपना मुँह ऐसे क्यों बना रहा है ? अरे.....तू !' कह कर अपने चाँदी जैसे बालों को हिला कर वह कहता गया, 'अगले शनिवार को देखना। इसी निगाह के लिए साशा पर बेंत पड़ेगी।'

'यह बेंत क्या ?' मैं पूछ बैठा।

मेरी बात से सभी हँस पड़े और नाना ने कहा, 'सब्र रख तू खुद जान जाएगा।'

मैं बेंत के बारे में लगातार सोचता रहा। मैं जान गया कि वह मार खाने जैसी ही कोई चीज है। मैंने घोड़ों, कुत्तों और बिल्लियों को मार खाते देखा है। और अस्त्राखान में मैंने पार-

सियों को पुलिस द्वारा पिटते देखा है परन्तु यहाँ केवल यही छोटे बच्चों को पिटते देखा। यहाँ मैंने देखा कि मामा अपने ही बच्चों को सिर पर कंधों पर मारता है और बच्चे भी खामोश सहते हैं। वे आसानी से हाथ रगड़ कर दर्द भूलते हैं और जवाब देते हैं। और जब मैंने एक पिटने वाले लड़के से पूछा कि कितनी चोट लगती है तो उसने कहा, 'नहीं, बिल्कुल नहीं!' और यह सुन कर मैं अजीब अनुभव करता।

दोपहर के बाद और शाम के पूर्व हमारे मामा और दूकान का मिस्त्री ग्रेगरी सूखे कपड़ों को जोड़ते और उनपर ग्राहक के नाम की चिट खोंसते। उस समय ग्रेगरी जिसकी आँखें कमजोर हो गई थीं और जो लगभग अँधा हो गया था उसको अंगुलियाणा को मामा और उसका भतीजा शास्का मोमबत्ती की लौ से गरम कर के ग्रेगरी के पास रख देते और सभी चूल्हे के पीछे छिप जाते। उसी समय नाना आता और काम शुरू करने को अंगुलियाणा उठाता तो उसकी उँगलियाँ जल जाती और वह चीख पड़ता, 'किस बदमाश ने यह शरारत की है?'

नाना की उस समय की हास्यास्पद स्थिति मैं कभी नहीं भूल पाता। चीख सुन कर मामा जैक भी आजाता परन्तु वह कोने में ही खड़े होकर हँसी का सुख प्राप्त करता तथा बहुत कोशिश करके नानी अपने को आलू छीलने में व्यस्त रखती और ग्रेगरी अपना काम दत्त चित्त होकर करता रहता।

तभी टेबिल के नीचे से निकलकर मामा माइक कहता, 'जैक के बेटे शाश्का ने यह किया है।'

'झूठा!' चीख कर जैक डाँटता। तभी चूल्हे के पीछे से प्रकट होकर शाश्का कहता, 'नहीं पिता, इसकी बात गलत है; इसने ही मुझे ऐसा करने को कहा और सिखाया भी।'

इस झगड़े के बीच सभी एक स्वर से मामा माइक को ही

दोषी घोषित करते तो मैं पूछता कि अब क्या मामा को बेंत लगेगी। तब नानी कहती, 'लगना तो चाहिये।'

इस प्रकार की ऐसी शरारतों का मैं आदी होता गया और मुझे शाश्का ही इसमें साथी मिला। उसकी शक्ल भी बिल्कुल शैतान लड़कों की सी थी। उसे देखकर तो लगता जैसे यह बड़ी शाँत प्रकृति का हो और उसकी मुस्कान बिल्कुल उसकी माँ की तरह ही थी। उसके दाँतो में ऊपर की पंक्ति नीचे की पंक्ति से दूनी बडी थी। वह सदा ही अपनी उँगलियाँ भी मुँह में डाले रहता। इससे प्रत्येक देखने वाले की पहली दृष्टि उसके मुँह पर ही टिकती थी। और शाश्का के लिए यही काफी खुशी की बात थी। वह दिन को कमरे के किसी अंधेरे कमरे तथा रात को किसी खुली खिड़की पर घंटों चुपचाप बैठना अधिक पसन्द करता था।

शाश्का, यों कभी कभी बज़ुर्गों के लहजे में बोलता। फिर एक दिन जब मैंने उसके सम्मुख अपनी उत्सुकता प्रकट की कि यह जान लूँ कि कपड़ों के भिन्न भिन्न रंगों में रंगने का क्या रहस्य है तब उसने सलाह दी कि सफेद मेजपोश को नीले रंग में डुबाऊँ। उसने कहा, 'सफेद कपड़े पर रंग अच्छा चढ़ता है।' उसने बहुत अधिकार के स्वर में कहा था।

मैंने वह अच्छा सा सफेद मेजपोश खींच लिया और दौड़ कर मैं टब के पास पहुँचा और मेजपोश का केवल एक भाग ही नीले रंग के टब में डुबो पाया था कि सिगान ने दौड़ कर वह मेज़-पोश मेरे हाथ से खींच लिया और उसे अपनी उँगलियों से रगड़ते हुए शाश्का से कहा जो दूर खड़ा यह सब देख रहा था, 'दौड़कर अपनी दादी को बुलाओ।'

फिर मेरी ओर मुड़ कर कहा, 'तुम इसके लिए जरूर सजा पाओगे!'

जब नानी ने आकर यह सब देखा तो उसकी आँखों में आँसू छलक आए और उसने अपने भद्दे ढंग से मुझे पुचका और कहा, 'तुम्हें इसके लिये अच्छी चपत लगेगी।'

तभी सिगान से उसने कहा, 'नाना से कहने की जरूरत नहीं। मैं इसका सब प्रबन्ध कर लूँगी।'

अपने बहुत गंदे व रंगीन लबादे पर हथेलियाँ रगड़ते हुए सिगान ने कहा, 'हाँ, वह मुझसे तो कम से कम इसके बारे में कुछ भी न सुन पाएगा परन्तु उस शाश्का से कहो कहीं वह चुगली न खाए।'

'मैं उसे ठीक कर लूँगी।' नानी ने कहा और मुझे घर के भीतर ले गई।

शनिवार की रात को प्रार्थना के पहले मैं रसोई घर में बुलाया गया जहाँ इस समय खामोशी और अँधेरा छाया था। मुझे अबतक याद है कि तब खिड़कियाँ व दरवाजे इस तरह कस कर बन्द थे कि मुझे बाहर पानी का बरसना भी नहीं सुनाई पड़ रहा था। चूल्हे के सामने सिगान बैठा मुझे इस प्रकार घूर रहा था कि उसकी ऐसी दृष्टि मैंने पहले कभी न देखी थी। चिमनी के किनारे बैठ कर नाना पानी में भीगी हुई बेंतों की परीक्षा कर रहा था। वह एक एक को हवा में उड़ाता, सीटी की धीमी आवाज होती और नाप नाप कर एक दूसरे के पास रखता जाता। वहीं अँधेरे में नानी खड़ी तमाखू की सुँघनी सूँघ रही थी और कह रही थी, '[illegible], अपने मन का करलो।'

कमरे के बीचोंबीच शाश्का बैठा था और एक बूढ़े भिखारी की तरह रटता जा रहा था, 'खुदा के लिए मुझे छोड़ दो, माफ़ कर दो।'

कुर्सी के पास नाइक के लड़के व लड़कियाँ भी चुपचाप खड़े थे।

'बेंत खा लो फिर तुम्हे माफ करूँगा ।' लम्बी बेंत को उठाते हुए नाना कहा, 'चलो, कपड़े उतार लो ।'

फिर न तो कोई आवाज सुनाई पड़ी, न तो शारका के कुर्सी छोड़ने की आवाज आई, न नानी के ही हिलने की आवाज सुनाई पड़ी । अन्त में शारका उठा । उसने अपना पाजामा खोला और घुटने तक गिरा कर पकड़ लिया फिर नाना के सामने बेंच पर झुक गया । मुझे यह देख कर हार्दिक कष्ट हुआ और मेरे पाँव काँपने लगे ।

उसके बाद जो भी हुआ वह नहीं देखा जा सकता था । सीगन ने एक बड़ी सी तौलिए से कंधे व गले के पास से उसे बेंच में बांध दिया ।

'देखो अलेकसी,' मुझसे नाना चीखा, 'इधर आओ, पास में, क्या तुम मेरी बात नहीं सुन रहे ? आज तुम जान जाओगे कि बेंत लगना क्या होता है ! चलो...एक...'

कुछ धीरे से नाना ने शारका की नंगी पीठ पर बेंत रखी और शारका चीख पड़ा ।

'नहीं ।' नाना ने कहा, 'इससे चोट न लगी होगी । अब इस बार पता लगेगा । ।'

इस बार बेंत अपने साथ खून निकाल लाई । पीठ पर लाल धारी ! ओफ, शारका चीखता जा रहा था ।

'वाह, बहुत अच्छे !' नाना ने कहा और उसके हाथ बराबर चलते जा रहे थे । 'अब मजा लो ।'

खून से सनी छड़ी देख कर मेरा कलेजा फटने लगा । ज्योंही इस बार छड़ी नीची हुई कि लगा मेरे भीतर का सब कुछ बाहर आ जाएगा ।

'मैं अब ऐसा कभी न करूँगा ।' शारका ने चीख कर कहा । उसकी आवाज इतनी धीमी थी कि डर मालूम होता था,

'मैंने ही तो मेजपोश के बारे में बताया था, मुझे छोड़ दो।'

'बड़बड़ाने से नहीं छुटकारा मिलेगा। अभी तो यों ही था अब मेजपोश के लिए लो।' नाना ने कहा।

तभी दौड़ कर नानी मेरे पास आई, मेरा हाथ पकड़ा। 'मैं तुम्हे अलेक्सी को न छूने दूँगी। नहीं ..राक्षस।' और वह पुकारने लगी, 'बारबरा, बारबरा।'

नाना ने लपक कर उसे धक्का देकर गिरा दिया। मुझे खींच कर बेंच पर डाल दिया। मैंने उसे घूँसा मारा, धक्का दिया, उसकी दाढ़ी नोची, उँगलियों में दाँत काटा। उसने मुझे पटक कर मुँह पर धक्का दिया।

उसकी वह खूँखार चीत्कार मैं कभी न भुलूँगा। 'इसे कस कर बाँधो। मैं इसे मार ही डालूँगा!' और न मैं माँ का भावना शून्य चेहरा और उसका दौड़ कर बेंच के पास आना ही भूल सकता जब उसने कहा था, 'नहीं, पिता! माफ कर दो। इसे मेरे हवाले कर दो।'

नाना ने मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया और कई दिनों तक बीमार रहा। मैं एक बड़े और चिकने बिछौने पर लेटा था जो एक छोटे कमरे में था जिसमें केवल एक खिड़की थी। कमरा धुँए से पीला हो गया था क्योंकि कोने में पूजा के चित्र के सामने सदा ही रोशनी जलती रहती थी।

शायद ये मेरे जीवन के अत्यन्त भयानक दिन थे। उन दिनों मुझ में यह भावना पैदा हो गई थी कि मैं सबों को अपने सा समझने लगा। दूसरों के कष्ट का अनुभव भी पूरा [illegible] होता था।

इसी भावना के फलस्वरूप माँ और नाना के बीच हुई एक लड़ाई ने मेरे मन पर बहुत असर किया। जब सोते कमरे में

माँ को उस पूजा के चित्र के पास खींच लाकर नानी ने कहा था, 'तू ने उसे अलग क्यों नहीं किया।'

'मैं डरी हुई थी।'

'ओफ, तू इतनी स्वस्थ है! तुझे यह कहने में लाज नहीं आती। मैं जो इतनी बूढ़ी हूँ सो मैं नहीं डरी थी।'

'माँ, मुझे छोड़ दे। मैं इन सबों से ऊब गई हूँ।'

'मुश्किल तो यह है कि तेरे मन में उसके लिए प्यार नहीं है न तू इस अनाथ पर दया ही करती है।

माँ ने इस पर एक बहुत लम्बी साँस खींचकर बहुत दुःखी शब्दों में कहा 'मैं खुद जीवन भर अनाथ रही हूँ।'

कोने में बैठी दोनों काफी लड़ीं, रोईं। अन्त में माँ ने कहा, 'अगर अलेक्सी के लिए नहीं है तो मैं कहीं चली जाऊँगी। यहाँ रहना नरक में रहने के बराबर है। अब मुझमें यह सब सहने की शक्ति नहीं है माँ।'

'ओफ, मेरे खून मांस की बेटी!' नानी फुसफुसाई।

यह सब मेरे दिमाग में गहरे उतरा। मैं जान गया कि माँ भी कमजोर है और सभी की तरह वह भी नाना से डरती है और सब से बड़े अभाग्य का कारण तो मैं था जिसके कारण माँ को इस नरक जैसे घर में रहना पड़ रहा था। इसके बाद ही माँ कहीं चली गई—शायद कहीं घूमने।

अचानक एक दिन नाना आया, लगा कि वह कहीं छत में से तो नहीं चू पड़ा। उसने अपने बर्फीले हाथ को मेरे माथे पर रख दिया।

'क्या हाल है तुम्हारा, बच्चे! हमें जवाब दो। मन में लगाव मत रखना। अभी क्या कहते हो!'

मेरे मन में हो रहा था कि मैं उसे उठ कर पीटूँ। पर हिलने से मुझे दर्द होता था। वह अपना पूरा सिर हिला रहा

था जैसे कि कुछ अधिक परेशानी में हो। उसकी आँखें दिवाल पर जमीं थीं। अपने जेब से उसने कुछ खिलौने व सेब निकाल कर मेरे तकिये के बगल में रखे और कहा तेरे लिए यह सब उपहार है।'

वह झुका और उसने मेरा माथा चूम लिया। फिर माथा थपथपाते हुए उसने कहा, 'तो उस दिन तुझे कुछ ज्यादा पड़ गई। तू तो पागल हो गया था, तूने ही मुझे काँटा खरोंचा कि मैं भी पागल हो गया। परन्तु अगली बार हिसाब ठीक हो जायगा तुझे कम पड़ेगी। जब परिवार में मार पड़े तो उसे मार नहीं समझना चाहिए। यह तो तुम्हारे पालन पोषण का एक भाग है। अलेक्सी, यह न समझना कि मुझे यह सब नहीं सहना पड़ा। मुझे जैसी मार पड़ी है उसकी तू कल्पना भी नहीं कर सकता। या खुदा, मैं खुद वह मार नहीं देख सकता। लेकिन देखो उसमें मेरा लाभ ही हुआ। मुझे देखो, एक गरीब विधवा का अनाथ बेटा था और आज मेरी स्थिति देखो. एक होशियार कारीगर, रंगसाजों का उस्ताद!'

फिर बहुत प्रभावोत्पादक शब्दों में उसने अपने बचपन के किस्से बताए। उसकी हरी आँखें चमक रही थीं। उसकी आवाज अत्यधिक तेज थी और उसकी साँस मेरे चेहरे पर पड़ रही थी।

'तुम तो यहाँ स्टीमर पर आए हो न! परन्तु जब मैं बच्चा था तभी अपने से वोल्गा में नाव खेता था। कभी कभी नाव पानी में रहती और किनारे से मैं खींचा करता नंगे पाँव, तेज पत्थरों पर दिन भर मैं चला करता। मेरी देह के हाड़ हाड़ में दर्द होता लगातार परन्तु मैं रो भी न पाता। एलेक्सी, जरा समझो कि इसकी चर्चा भी कठिन है!'

'इसी तरह हम लोग रहते थे। तीन बार वोल्गा को नाप डाला कि भोबिर्सक से राइबिरक और फिर सारातोप, वहाँ से अस्त्राखान फिर भारकारेव के मेले तक। लगभग दो हजार मील का चक्कर चार साल लगातार और मैं बहुत होशियार नाविक बन गया था।'

कहते हुए ठीक मेरे आँख के पास उसने धुआँ फेंका और लगा कि मेरे चारों ओर बादल उठ आए हैं। उसने कई बार मेरी खाट हिलाया, बताया कि किस तरह उसने किनारे से नाव खींची। उसने अपने भद्दे गले से एक मल्लाही गीत भी गाया। वह काफी उत्तेजित हो गया था। वह कहता गया,

'गर्मी की एक शाम थी एलेक्सी। हम लोगों ने भिगुलिआख में डेरा डाला था। रात को खाने का समय था। नाविक जी खोलकर गा रहे थे। वोल्गा की लहरें घोड़े की तरह दौड़ रही थीं।'

वह अपनी कहानियाँ कहता गया। जब अँधेरा हो गया तो बहुत प्यार के साथ वह बिदा हुआ। और मैंने सोचा कि सचमुच वह इतना बुरा और क्रूर नहीं है। फिर भी मैं यह न भूल पाया कि उस दिन उसने कैसी पिटाई की थी।

नाना के आगमन ने तो जैसे किसी जुलूस का आरम्भ किया। उसके जाने के बाद एक एक करके सभी लोग आते और हमें खुश करने की कोशिश करते। सब से अधिक नानी आती जो रात को मेरे साथ ही सोती थी। परन्तु इस समय सीगान ने ही मुझ पर सब से अधिक प्रभाव छोड़ा। घुँघराले बालों वाला यह युवक आज बहुत अच्छी सुनहले काम की कमीज पहने था और वेलवेट का पाजामा, नया जूता।

'देखो!' अपनी बाँह सकेल कर लाल निशान दिखाता हुआ वह बोला, 'देखो कितना फूला है। कल तो बहुत अधिक

था। जब तुम्हारा नाना तुम्हें मार डालने को ही उतारू था तो मैंने अपना हाथ बढ़ाकर छड़ी रोक ली ताकि वह टूट जाए। तभी नाना ने दूसरी उठाई। इतनी देर में तुम्हारी माँ या नानी तुम्हें छिपा सकती थीं। परन्तु मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।' कि धीमी हंसी हँसकर उसने कहा, 'तुम्हारी मार देखकर हमें शर्म आ रही थी।' तभी उसकी बातों पर रीझ कर मैंने बताया कि मुझे वह बहुत अच्छा लगता है। उसने उत्तर दिया था, 'मैं भी तुम्हें चाहता हूँ तभी तो तुम्हारी मार सह ली। मैं इतना मूर्ख नहीं कि किसी और के लिए यह चोट खाता।'

तभी दरवाजे की ओर सतर्कता से देखकर उसने धीरे से मुझे यह सलाह दी, 'भविष्य में कभी भागने या सामना करने की कोशिश न करो। झगड़ने से दूनी मार पड़ती है। उसे उसके मन पर छोड़ दो। उस पर घूरना भी मत। इतना याद रखो तो मदद मिलेगी।'

'वह फिर मुझे न मारेगा।'

'जरूर मारेगा।' अधिकार से उसने कहा, 'बार बार।'

'लेकिन क्यों?'

'इसलिए कि तुम्हारे नाना को तुम पर सख्त प्यार है। जब वह छड़ी चलाता है, अगर चुपचाप पड़े रहोगे तो धीरे से छड़ी पड़ेगी। इसी कमरे में मेरे ऊपर भी काफी पड़ी है इसलिए मैं खूब जानता हूँ।'

उसके चेहरे की चमक से मुझे नाना ने जो कहानियाँ सुनाई थीं याद आ गईं।

तीन

जब मैं अच्छा हो गया तो मालूम हुआ कि इस घर में सीमान का क्या महत्व है। अन्य मामाओं की तरह नाना उस पर नहीं बिगड़ता था और उसके मुँह में कहता भी था, 'अच्छा कारीगर है, सीमान। मैं जानता हूँ कि वह कहीं भी जाए तो उसे अच्छा काम मिल सकता है।'

यहाँ तक कि मामा लोग भी उससे वैसा व्यवहार न करते थे जैसा वे मेंगरी के साथ करते थे। कभी कभी वे उसकी कैंची की हैंडिल गरम कर देते, उसकी कुरसी में कीलें बिछा देते। कभी कभी वह उसके सिलने वाले कपड़ों में बेकार के टुकड़े मिला देते और लगभग अंधा होने के कारण वह उन बेकार टुकड़ों को भी सिल जाता और नाना की गाली का भागी बनता।

एक रात खाना खाने के बाद मेंगरी जब सो रहा था तो मेरे मामाओं ने उसके चेहरे पर बैंगनी रङ्ग पोत दिया। फलस्वरूप वह कई दिनों तक उसी भयानक शक्ल में घूमता रहा।

मामा लोग सदा ही इस तरह की धूर्तता करते रहते और मेंगरी बिना एक भी शब्द कहे सब कुछ सहता। हाँ अब वह

कैंची लोहा, या सूइयाँ बहुत होशियारी से छूता । यह उसकी आदत बन गई थी और खाना खाने के समय छुरी या काँटा छूने के पूर्व भी वह उसी तरह अपनी उंगलियाँ पहले भिगो लिया करता था, इससे बच्चे बहुत हँसते थे । और जब कभी वह धोखा खा जाता तो उसके चेहरे पर रेखाएँ खिंचतीं जो अपने आप ही मिट भी जातीं ।

मैं नहीं जानता कि नाना अपने बेटों की इस शरारत को किस तरह सहता था । परन्तु नानी घूँसा तान कर चिल्ला पड़ती थी, 'जानवरो, क्या तुम्हें शरम नहीं आती ?'

सीगान के सूने में मामा लोग उसे भी न छोड़ते । वे उसे अवारा व चोर घोषित करते तथा उसकी भरसक खूब निन्दा करते । मैं नानी से इसका कारण पूछता तो वह कहती, 'इसलिए कि अलग दूकान खोलकर सभी सीगान को अपने साथ रखना चाहते हैं । इसीलिए एक दूसरे के सामने उसकी कस के निन्दा होती है । यह भी उनकी शरारत ही है क्योंकि वे जानते हैं कि सीगन तुम्हारे नाना को छोड़ कर कहीं न जाएगा । संभव है कि नई खुलने वाली तीसरी दूकान में सीगन को नाना साझीदार बना लें । इससे तुम्हारे दोनों मामा की हानि होगी । अब समझे ?' फिर तनिक हँस कर उसने कहा, 'नाना सब समझता है तभी तो कभी कभी मामाओं को चिढ़ाने को वह कहता है— मैं सीगन को अपना गुलाम बना लूँगा । ताकि कोई उसपर अधिकार न कर सके ।'

अब मैं लगातार नानी के साथ रहता था । जाड़ों भर ही वह मुझे कहानियाँ सुनाती थी । तभी मुझे ज्ञात हुआ कि सीगन को उन लोगों ने पड़ा पाया था । एक बरसाती रात को घर के बाहर बेंच पर वह पड़ा था । नानी ने देख कर कहा था, 'इतनी ठण्डक में भी जिन्दा पड़ा है ।'

'लोग अपने बच्चे क्यों छोड़ जाते हैं ?'

'शायद माँ के दूध न होता हो और कोई दूसरा तरीका बच्चे का पेट भरने का न रहा होगा।'

फिर सिर हिलाकर छत की ओर घूर कर वह कहती, 'अलेक्सी इसका कारण गरीबी ही होती है और एक और गरीबी होती है जिसकी चर्चा कम होती है वह यह कि अगर किसी बिना ब्याही लड़की के लड़का हो गया तो वह छिपाती है। क्योंकि इसकी उसे सजा मिल सकती है। तेरे नाना तो सीगन को पुलिस के सुपुर्द करने जा रहे थे पर मैंने रोका, कहा कि हमारे बच्चों में एक और सही। मेरे अठारह बच्चे हुए और यदि सभी जीवित रहते तो अट्ठारह परिवार होते, एक पूरा टोला। मैं अठारह की थी तभी मेरी शादी हुई थी।'

खाट के किनारे पर बैठकर उसने अजीब स्वर में कहा, 'खुदा ने सभी अच्छों को बुला लिया और दुष्टों को छोड़ दिया इसीसे सीगन को पाकर मैं खुश हुई थी। इसी घर में वह पला और अच्छा लड़का निकला। तुम उससे मिलते रहना। वह अच्छा है।'

नानी की आज्ञा मैंने मानी। सीगन को प्यार किया, आदर किया। उस दिन शनिवार की शाम को जब घर के बच्चों को साप्ताहिक मार पड़ चुकी थी और नाना गिरिजा जा चुका था, रसोई घर में सीगन के साथ मेरी खूब गुजरी।

सीगन ने अपने एक पालतू चूहे का मुझे खेल दिखाया। वह छोटा सा जीव उसके कहने पर अपने पिछले पाँवों से चलता कूदता था। सीगन ने कई चूहों से अपनी दोस्ती करली थी। उन्हें पकड़ कर वह अपने कपड़ों में छिपा लेता, फिर चीनी भी खिलाता।

'चूहे भी आदमियों की तरह चतुर होते हैं।' उसने बड़े ढंग

से कहा। वह सिक्कों व ताश के पत्तों का जादू वाला खेल भी कर सकता था। खेल कूद में वह बच्चों से भी ज्यादा शोर किया करता था। सचाई यह थी कि हममें कोई भी अन्तर न था। एक दिन ताश के खेल में वह खूब हारा। फिर खिसिया कर उसने पत्ते पटक दिए। 'लोगों ने बेइमानी की है। टेबिल के नीचे से पत्ते बदल लिए हैं। क्या इसी को खेल कहते हैं? अगर बेइमानी पर ही उतारू हैं तो मैं भी कुछ करके दिखा सकता हूँ।' वह उन्नीस वर्ष का था यानी चारों बच्चों के उम्र के जोड़ से भी बड़ा।

छुट्टियों की और दावतों की विशेष याद मुझे नहीं है। परन्तु उसमें भी सीगान ही सबसे अच्छा रहता था।

बूढ़ा ग्रेगरी अपने रङ्गीन चश्मे के भीतर से झांकता आ जाता। एजेनिआ भी आयी जो घर की नौकरानी थी। उसकी अजीब शक्ल थी, अजीब आवाज। सबों ने वोद्का पी परन्तु बच्चों को गिलासों में शरबत दिया गया। जैक के गाने ने सब को खामोश रखा। लगता था जैसे उसके गाने की आवाज पास के झरने से आ रही हो। फिर तो जिसकी भी गाने की ख्वाहिश हुई उसने गाया। इससे एक घुटन का अनुभव हुआ परन्तु बूढ़े भी बच्चों की तरह ही विवश थे। मामा माइक का शारका, मामा जैक के बगल बैठा था जो हर खाने पीने की चीजों को देखकर बहुत ढंग का मुँह बनाता था।

बाकी हम सब यों खामोश बैठे थे जैसे बर्फ के आदमी हों। या जैसे किसी ऐसे का इन्तजार कर रहे हों जो आकर खामोशी तोड़ता। रसोई घर की दो खिड़कियों से रोशनी बाहर अँधेरे में आ रही थी। और दो पीले भालों की तरह एक मेज पर दो मोम बत्तियाँ जल रही थीं।

एकाएक मामा जैक का शरीर कांपने लगा मानों उसे नींद

आ रही हो और उसके दोनों हाथ यों अलग अलग रहे जैसे दोनों दो शरीर के हाथ हैं उसकी उँगलियाँ कभी तो चिड़ियों की तरह उड़ती सी लगतीं कभी अपने बाजे पर होतीं। जब भी वह शराब के नशे में गाता तो ऐसे ही उबा देने वाले गाने गाता मानों आवाज उसके दांतों के बीच से आ रही हो।

उसके गाने का प्रभाव सीगान पर भी हम लोगों जितना ही पड़ा परन्तु सुनते समय वह दिवाल के एक खास भाग को देख रहा था। ओह—अपनी उँगलियाँ अपने बालों में डाल कर चला रहा था। और कभी कभी वह कह उठता—'बहुत अच्छी आवाज है।'

नानी भी कहती, 'तो क्या जैक तुम हम सबों को रुला कर ही छोड़ोगे? अच्छा हो सीगान हमें कोई नाच दिखाए।'

फिर सीगान अपनी पीली कमीज हिलाता हुआ उठता। और बीच में उपस्थित होता। वह चूल्हे से एक जलती लकड़ी निकाल कर ऊँची कर के नाचता जैसे हवा में कोई आग को पतंग हो। और वह खुद सुनहली चिड़िया सा लगता।

मेज पर बैठे सभी एक दूसरे को घूरते। दाढ़ी वाला मेंगरी अपनी सफाचट चांद को हिलाता। एक बार वह मुझ पर झूमता हुआ गिर पड़ा। उसकी रेशमी दाढ़ी मेरे कंधे पर रगड़ खाकर कान में घुस गई तब उसने कहा, 'ओह, अलेक्सी अगर तेरा बाप यहाँ होता! तब तुम जरा देखते वह भी क्या खूब था। सदा शरारतों से भरा पुरा। क्या तुझे याद नहीं?'

'नहीं।'

'नहीं! अच्छा तो सुनो। एक बार वह और तेरी नानी—अच्छा जाने दे—'

वह उठ खड़ा हुआ। जाकर नानी के सामने झुक गया और प्रार्थना की, 'घर की माँ! हमलोग आज तुम्हारा वही नाच

देखना चाहते हैं जो एलेक्सी के बाप के साथ एक बार तुम नाची थीं।'

'अरे तुम क्या कह रहे हो ग्रेगरी ?' नानी ने कहा, 'तुम्हें क्या हुआ है ? क्या तू मुझे हँसी का कारण बनाना चाहता है ?'

परन्तु दूसरे ही क्षण वह उछल पड़ी और नाच के लिए तैयार हो कर बोली, 'अच्छा तो तुम सब हंसना चाहते हो तो हँसो।'

मामा जैक व सीगान ने बाजे उठा लिए। मुझे उसकी आकृति देखकर हँसी आ गई। इससे ग्रेगरी ने उंगली के इशारे से डांटा तथा दूसरे वृद्धों का घूरना भी सहना पड़ा।

एजेनिया गाने लगी। और नानी नाचने लगी। उसका नाच, ओफ, उसका भारी भरकम शरीर हिलता तो जाने कैसा लगता।

जब नाच गाना समाप्त हुआ तो एजेनिया ने कहा, 'काश कि खुदा मुझे सुरीली आवाज देता ! मैं लगातार दस वर्ष तक गाती रहती।'

तब तक ग्रेगरी लगातार वोदका पीता जा रहा था। तब नानी ने टोका, 'बस करो, यह तुम्हारे आंख की दवा नहीं है।'

परन्तु ग्रेगरी ने उधर ध्यान न देकर मेरे पिता की चर्चा मुझी से की, 'बड़े भारी कलेजे का आदमी था वह !'

'अवश्य था।' नाना ने समर्थन किया।

पिता की इन बड़ाइयों से मेरा जी भर आया।

मामा जैक पर वोदका का असर हो गया था। वह अपने बाल, नाक, खूटी मूँछें, और ओंठ नोचने लगा। तभी उसने अपने गालों पर तमाचे मारना शुरू किया। उसके आँसू आ

गए। वह बोला, 'मैं यहाँ क्यों समय गवाँ रहा हूँ। पापी! मैंने क्या कर डाला!'

'ठीक कहते हो।' बूढ़े भेंगरी ने कहा।

नानी को भी थोड़ा नशा हो गया था। अपने बेटे का हाथ पकड़ कर उसने कहा, 'बस करो जैक। खुदा हमें रास्ता दिखाएगा!'

नशा ने नानी के सौंदर्य में वृद्धि कर दी थी। उसकी आँखें चमक चमक कर सबों को खुश कर रही थीं।

मामा के आँसुओं से सचमुच मैं पिघल गया। नानी से मैंने पूछा, 'तुम जानती हो नानी।'

'तुम्हें भी जल्दी ही पता लग जाएगा।' नानी ने जवाब दिया।

इससे मेरी उत्सुकता पूरी तरह समाप्त न हुई तब मैंने सीगान से पूछा परन्तु उसने भी संतोषप्रद उत्तर न दिया। हाँ हँसी के बीच, भेंगरी को घूर कर उसने उत्तर दिया, 'उसे आराम करने दो। मेरे साथ भागो, भागो नहीं तो मैं तुम्हें रङ्ग के कंडाह में डुबा दूंगा।'

भेंगरी चूल्हे के पास जाकर रंगों की देख भाल करने लगा रंगीन चश्मे के भीतर से अपनी लाल आँखों से घूर कर भेंगरी ने सीगान से कहा, 'तुम्हें लोग पुकार रहे हैं, सुनते नहीं!'

जब सीगान चला गया तो भेंगरी ने जो एक बोरे पर बैठा था। मुझे अपने पास बुलाया। मुझे अपने पास खींच कर अपनी दाढ़ी मेरे गालों पर रगड़ कर उसने कहा, इस ढंग से मानो कोई रहस्योद्घाटन कर रहा हो, 'तुम्हारे मामा ने अपनी बीबी को इतना पीटा कि वह मर गई है। इसलिए जानने की ज्यादा कोशिश करोगे तो पागल हो जाओगे।'

मेंगरी भी नानी की तरह ही सीधी बातें करता था परन्तु उसकी बातें सदा निष्प्रेम होती थीं।

'और जानते हो कैसे उसकी हत्या की ?' बहुत खलनायक का रंग लाकर उसने कहा। 'ऐसा कैसे हुआ ? दोनों साथ सो रहे थे जब उसने तेरे मामी के चेहरे पर तकिया फेंक कर उसे पीटना शुरू किया और अगर इसका कारण पूछोगे वह भी न बता सकेगा।',

तभी हाथों में बहुत से कपड़े लिए हुआ सीगान आ गया। उसकी अवहेलना करके मेंगरी चूल्हे की आग से अपना हाथ सेंकता रहा और कल्पना करता रहा, 'हो सकता है कि मामा ने देखा हो कि मामी अच्छी थी। ये काशांरिन्स गोर्की ? (नाना के परिवार का जतीय नाम)। अच्छों को बर्दाश्त नहीं कर सकते। अपनी नानी से पूछना कि इन्होंने तुम्हारे बाप के साथ क्या क्या किया था। वही बतावेगी। वह अच्छे दिल की बुढ़िया है।'

फिर उसने मुझे कमरे से बाहर कर दिया और आश्चर्य से मैंने देखा कि मैं आ गया था। मैं आगे जाता कि तभी सीगान आ गया और उसने कहा, 'उससे डरा मत करो। वह अच्छा आदमी है बस उसकी आँखों में सीधे देखा करो। तुम्हें वह पसन्द करता है।'

मैं विवश होकर अपने माँ व बाप के जीवन के बारे में सोचने लगा। मुझे याद आया उनका बात करने का अपना ढंग था। उनकी खुशी भी अपने ही ढंग की थी। चलते वक्त या बैठे रहने पर भी वे दोनों एक दूसरे के काफी पास रहते थे। वे खूब हँसते थे। शाम को अपनी खिड़की पर बैठ कर दोनों गाना गाते। अक्सर गली में लोग इकट्ठे होकर उन्हें सुनते। यहाँ तो लोगों को हँसी बड़ी अस्वाभाविक और साथ ही दुर्लभ थी।

वह सभी एक दूसरे से जलते हैं और कोनों में खड़े होकर चुपचाप गालियाँ देते हैं। बच्चे भी यहाँ केवल गालियाँ ही खाते रहते हैं। इससे मुझे हर बात चपत की तरह लगती। फलस्वरूप मैं हर चीज की ओर से सतर्क हो गया।

सीगान के साथ मेरी मित्रता, बढ़ती गई। वह हर समय कामों में फँसा रहता तथा मैं उसके चारों ओर डोलता रहता। जब भी नाना मुझे पीटता तो वह छड़ी को अपनी पीठ पर रोक लेता तथा दूसरे दिन मुझे छड़ी का निशान दिखा कर कहता, 'इसके कोई माने नहीं। इससे मार बढ़ तो सकती नहीं। अच्छा यह अन्तिम बार था। मैं कहे देता हूँ।' परन्तु जब भी दूसरी बार मार पड़ती वह पहले की तरह दर्द का साझीदार बन जाता।

'मैं समझता था कि इस बार तुम मुझे न बचाओगे?'

'हाँ मैंने सोचा था कि नहीं, परन्तु मेरे अधिक सोचने के पूर्व ही.....'

हर शुक्रवार को सुबह अपनी रोबदार टोपी पहन कर वह नाना के बहुत प्रिय परन्तु बहुत बदमाश घोड़े पर चढ़कर बाजार जाता कि हफ्ते भर का घर का समान लावे। यों तो वह दोपहर तक लौट आता था परन्तु कभी कभी उसे बहुत देर भी लग जाती तब बेचैनी से सभी एक एक बार खिड़की पर आकर चिन्तित हो पूछता।

'दिखाई भी नहीं पड़ रहा?'

'नहीं।'

नानी सब से अधिक चिंतित रहती थी। नाना व अपने बेटों पर खिसियाती, 'तुमने उसे उस घोड़े के साथ मरने को भेजा है। तुम सबों के भीतर आत्मा तो है ही नहीं। तुम लोगों को शर्म आनी चाहिये। तुम सभी, घर भर, मूर्ख व निर्दयी हो। खुदा तुम्हें इसकी सजा देगा।'

'बस, बहुत हुआ।' नाना रोकते, 'मैं कहे देता हूँ यह अन्तिम बार है।'

और जब सीमन आ जाता तो नाना मामा सभी बच्चों के साथ बाहर आकर सामान उतारने लगते।

नाना ने सभी वस्तुओं को गौर से देख कर पूछा, 'जो चीजें कही थीं सभी आ गईं?'

'हाँ यह रहीं सब।' सीमन कहता और हाथ कोट पर रगड़ता।

'इन कपड़ों में पैसे लगते हैं।' नाना कहता, 'क्या कुछ पैसे बचे हैं?'

'नहीं।'

सभी चीजों को देख कर नाना धीरे से कहता, 'तू बहुत चीजें ले आया। समझा!' कहकर भीतर चला।

तब मेरे मामा लोग सभी सामान को गौर से देखकर कहते, 'वाह, कितनी जल्दी सब सामान उतार लिया!' वे खुद ही तारीफ कर लेते।

परन्तु मामा याकव का ढंग अनोखा था, 'क्या दिया था तुझे पापा ने?'

'पाँच रूबल!'

'लेकिन चीजें तो पन्द्रह रूबल के करीब की हैं! तुमने कितना खर्च किया?'

'चार रूबल और दस कोपेक।'

'वाह वाह, तो नब्बे कोपेक तुम्हारे जेब में हैं! अरे तैक तुझे [illegible] पैसा कैसे बचाया जाता है!'

नानी आकर पोते को थपथपाती तथा प्यार से उसे एक बड़ी सी नमकीन रोटी खिलाती। सीमन पास आकर कहता, 'सचमुच बड़ा तेज है।'

४

'मेरे पास मत आना !' चीख पड़ी नानी, 'आज मैं तुमसे नाराज़ हूँ ।'

बाद में नानी ने मुझे बताया कि सीगन ने चोरी की थी। 'तेरे नाना से उसने पाँच रूबल पाया और उसमें से तीन बचा लिया। इसको चोरी की आदत पड़ गई है। तेरे नाना को आजकल पेपर बच्चों के खून से ज्यादा कीमती लगते हैं। और तेरे मामा माइक और जेक..........। अगर किसी दिन सीगन की चोरी पकड़ी गई तो लोग उसे मार डालेंगे।'

दूसरे दिन मैंने सीगन को समझाया, 'अगर तुम चोरी बन्द न करोगे तो मार डाले जाओगे !'

'वे मुझ पर हाथ नहीं लगा सकते। मैं काफी तेज घोड़ा हूँ।' हँसा और बोला, 'मैं जानता हूँ कि चोरी पाप है और बहुत बड़ा खतरा भी फिर भी मैं मौज के लिए चोरी करता हूँ।'

अचानक उसने मुझे उठा लिया। कहा, 'तुम्हारी देह की हड्डी अच्छी है। तुम नाना से नहीं डरते न !'

'मैं नहीं जानता !'

'वे सभी कासारिन दुष्ट हैं पर मैं इनमें भी तेरी नानी को प्यार करता हूँ।'

'और मुझे ?'

'तुम कासारिन कहाँ हो तुम तो दूसरी ही जात के हो, पेश्कोव जाति के।'

फिर उसने मुझे नीचे उतार दिया।

आँगन में एक बहुत बड़ा क्रास रखा था। जब मैं सर्व प्रथम इस घर में आया था तभी इसे देखा था परन्तु तब यह देखने में पीला और साफ सुथरा था। बरसात के पानी ने उसे काला कर दिया था। यह क्रास मामा जेक का था जो अपनी पत्नी के कब्र पर रखने को लाया था। उसने यह प्रण किया था

कि इसे वह पीठ पर लाद कर ले जाएगा। अगली जाड़े के शुरू के एक शनिवार को जब उसकी पत्नी की बरसी पड़ेगी। आज मैं घर के तीन बच्चों के साथ एक शरारत के कारण घर में बंद रखा गया था। मेरे दोनों मामा ने क्रास को खड़ा किया। वह बहुत ऊँचा था। कुछ पड़ोसियों और ग्रेगरी ने मिल कर उसे सीगन की पीठ पर लादा। मामा ने उसका पिछला भाग पकड़ा। सीगन काफी मजबूत था फिर भी उसके पाँव काँप रहे थे।

'ले जा सकोगे?' ग्रेगरी ने पूछा।

'पता नहीं। पर बहुत भारी है।'

'चुप रह अंधे। जा दरवाजा खोल!' मामा माइक चीखा।

जैक मामा भी बिगड़ा, 'तुझे यह कहने में शर्म न आई जब तू हम दोनों से मजबूत है।'

दरवाजे खोल कर भी ग्रेगरी सीगन को सावधान करता रहा, 'धीरे धीरे जाना। खुदा तेरी मदद करे, तुझे बचाए।'

'ग'जा, मूर्ख।' गली में जाता हुआ भी माइक मामा चीखा।

तभी आंगन में जोरों की बातचीत व हँसी की आवाज आई जैसे लोग उस क्रास से छुटकारा पाकर खुश हुए हों। ग्रेगरी मुझे दूकान पर ले गया और बोला, 'यह सब जो हो रहा है इससे शायद आज रात नाना को चक्कर कूद करनी पड़ेगी।'

उसने मुझे उनके एक गट्ठर पर बैठा दिया जो रंगने को आया था। 'मेरे बच्चे मैं उसे सैंतीस साल से जानता हूँ। मैंने इस व्यापार का आरम्भ देखा था और अंत भी देखूँगा। हमने दोस्तों की तरह काम शुरू किया था। सच तो यह है कि काम साझेदारी में शुरू हुआ था। परन्तु तेरे नाना बहुत चतुर हैं उसने किसी तरह सब हथिया लिया। तब मैं कुछ न समझ पाया था। खुदा तो इससे भी चतुर है न! तुम नहीं जानते कि आज-कल क्या हो रहा है पर सब समझ जाओगे। तेरा बाप फिरना

भला था और पढ़ा लिखा भी था। लेकिन तेरा नाना उस पर भी खुश न था।'

अपने बाप के लिए यह शब्द सुनकर मुझे अच्छा लगा। दाढ़ीदार, बिना टोपी का, लम्बे कानों वाला ग्रेगरी देखने में बड़ा प्रभावपूर्ण लगा ! उसने राय दी, 'लोगों की आँखों में सीधे, गहरे देखा करो, अगर कभी कोई पागल कुत्ता आए तब भी। ऐसा करोगे तो वह रुक जाएगा।' उसकी नाक पर भारी चश्मा सवार था।

'क्या हुआ !' अचानक वह चौंक पड़ा। उसके कान खड़े हो गए। अपने जूते से धक्का देकर उसने चूल्हे का मुँह बंद किया। दौड़ा बल्कि कूद कर भागा, उसके साथ मैं भी भागा। रसोई घर के फर्श पर पीठ के बल सीगन पड़ा था। उस पर खिड़की से आती धारीदार धूप पड़ रही थी। उसका सिर भीगा था आँखें छत पर जमी थीं। उसके गले व मुँह से खून निकल कर जमीन पर आ रहा था। उसका पाजामा गीला था तथा बालू उस पर लगी थी।

सीगन चुपचाप पड़ा था। एंजेलिया एक रोशनी लेकर आई।

'यह फिसल गया था।' मामा जैक ने अजीब शून्य आवाज में कहा। 'यह फिसला तो क्रास इसी पर गिर पड़ा। उसके चलते तो हम भी मरते लेकिन किसी तरह बच गए।

ग्रेगरी ने दुःखी होकर कहा, 'यह तुम्हारी ही करनी है।'

'क्या मतलब ?'

'तुम्हारी करनी !'

सारा खून बह कर दरवाजे पर जमा हो रहा था।

'मार्क चौड़े पर पापा को बुलाने गया है।' जैक ने कहा, 'मैं इसे यहाँ गाड़ी में लाया। यह अच्छा हुआ कि मैं क्रास के बीच नहीं था नहीं तो मेरी भी यही दशा होती।'

एक बार फिर एजेनिया ने सीगल के हाथ में बत्ती देनी चाही। उसके आँसू और पिघली मोम उसी पर गिर रही थी।

'यही होता है। उसका सिर सीधा कर दो और टोपी उतार दो।'

इजेनिया ने टोपी खींच ली।

अब तक केवल मुंह से खून आने लगा था परन्तु खून गाढ़ा था।

अब तक काफी समय बीत गया था जैसे शीघ्र ही सीगल उठ बैठेगा, 'ओह बड़ी गरमी है।' ऐसा वह हर रविवार को खाना खाने के बाद कहता था। अब सूरज की रोशनी उस पर से हट कर खिड़की पर ही सीमित हो गई थी। धीरे धीरे उसके सारे शरीर पर अँधेरा छा गया और उसके मुँह से खून का बहना भी बंद हो गया। उसके सिर के पास केवल तीन मोमबत्तियाँ जल रही थीं जो उस अँधेरे में केवल तीन पीले धब्बों का निर्माण करने में ही सफल हो रही थीं तथा उनके प्रकाश में उसके खून भरे दाँत तथा नाक ही दिखाई पड़ रही थी

'बेचारा।' इजेनिया ने दुःख से कहा।

अब तक जाड़ा बढ़ गया था। मैं टेबिल के नीचे छिप गया जब नाना उसके पीछे नानी तथा माइक, उसके बच्चे और अन्य पड़ोसी कमरे में आए।

अपना कोट उतार कर नीचे फेंकते हुए नाना चीखे, 'ओह! दुश्मनों देखा! तुमने क्या किया है। तुम दोनों सिरफिरों! केवल पांच वर्ष में वह अपने तौल के बराबर सोना मेरे लिए पैदा कर सकता था।'

सभी लोग कोट पहने खड़े थे जिसके कारण मैं टेबिल के नीचे से अब सीगन को नहीं देख पाता था। वहाँ से मैं रेंग कर निकला और नाना से टकरा गया। नाना ने मुझे एक ओर हटाकर मामा माइक को धक्का देकर कहा, 'भेड़िए!' फिर बेंच पर बैठकर सूखी सिसकियों के बीच उसने कहा, 'इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। वह तुम्हारे जीभ पर हड्डी की तरह गड़ रहा था इसी से तो तुम सभी परेशान थे न! बेचारे सीगन, तुम्हारे साथ इन्होंने क्या किया? नए घोड़े के बेवकूफ सईस से यही होता है। ओ माँ। इधर खुदा हमसे क्यों इतना नाराज है?"

जमीन पर सीगन पर झुकी हुई नानी रो रही थी। और चीख कर कह रही थी, 'अपराधियों, दूर हटो।'

लेकिन नाना भीड़ जमाए ही रहा।

फिर सीगन की अंतिम क्रिया में कोई शोर गुल न हुआ। और शीघ्र ही वह भुला दिया गया।

चार

एक कम्बल के चार तह के नीचे लेटा हुआ मैं नानी की प्रार्थना सुन रहा था। वह घुटनों के बल बैठी थी। एक हाथ उसका उसकी छाती पर था, दूसरे से रह रह कर वह अपने ऊपर क्रास बनाती जाती थी। बाहर खूब बर्फ पड़ रही थी। खिड़की से छन कर आती चाँदनी हरी दिखाई पड़ती थी।

नानी की प्रार्थना समाप्त हुई। उसने अपने लबादे उतारे और ढंग से तहा कर रखे फिर जब बिस्तरे पर सोने के लिये आई तब मैं बिल्कुल सिकुड़ कर सोने का अभिनय करने लगा।

'बदमाश! अभी तक जाग रहा है।' उसने कहा, 'यह बतक की तरह जो पड़ा है सो ठीक से लेट और मुझे भी तकिया लगाने दे।'

इस परिहास से मुझे हँसी आ गई और वह चीख पड़ी, 'ओह, बूढ़ी नानी से मजाक करता है?' कह कर उसने तकिया खींच लिया और लुढ़कता हुआ मैं नानी के गुलगुले

बिछौने पर पहुँच गया तो उसने कहा, 'क्या बात है ? क्या तुम्हें मच्छड़ काट रहे हैं ?'

यों तो ऐसा ही होता था कि उसे प्रार्थना में बहुत देरी लगती थी और मैं जब बिल्कुल सो जाता तब आकर बिछौने में घुसती थी। परन्तु यह लम्बी प्रार्थनाएँ उसी दिन होती थीं जिस दिन घर में झगड़ा होता या कोई परेशानी रहती थी, और वह प्रार्थनाएँ भी सुनने लायक रहतीं। वह खुदा को सविस्तार सभी घटनाएँ सुनाती थी। फिर अन्त में कहती, 'खुदा, हम सबों का भला चाहते हैं। बड़े बेटे माइक की बाजार में एक नई दूकान हो जाय। वहाँ अभी ऐसी कोई दूकान नहीं कि उसे खतरा हो। नदी के किनारे की वह जगह ठीक रहेगा। लेकिन क्या करूँ ? उसका बाप जैक को अधिक मानता है। लेकिन क्या एक बेटे के प्रति अधिक उदारता दिखाना न्याय है ? क्या यह उचित है ? खुदा उस बूढ़े को ठीक रास्ता दिखाओ।'

फिर आँखों की चमक के साथ ही वह खुदा को सलाह देती, 'किसी सपने में उसे दिखाओ कि बच्चों से किस तरह व्यवहार करना चाहिये।' फिर धरती पर सर लाकर वह कहती, 'क्या बारबरा को तनिक सुख न होगा ? क्या वह सबों से अधिक पापिन है। उस जैसी अच्छी व सुन्दर औरत को क्यों इस तरह सताया जा रहा है ? और खुदा, इस बूढ़े ग्रेगरी के लिए भी कुछ सोचना। दिन प्रति दिन उसकी आँखें खराब होती जा रही हैं अगर वह अन्धा हो गया तो कितना भयानक होगा। वह यदि परिवार के किसी काम का न रहा तो क्या होगा ! मेरे खुदा, ओफ खुदा ?'

फिर वह बहुत देर तक सिर गाड़ कर चुपचाप बैठ जाती कि शक होता कि सो तो नहीं गई या जम तो नहीं

गई। फिर वह सोच कर रहती, 'और कौन छूटा ? खुदा सभी भलों का भला करना। जो अपराधी हैं उन्हें भी माफ करना। और खुदा तुम्हें सब मालूम है तुम सब देखा करते हो।'

मुझे लगता कि नानी खुदा से परिचित है इसलिए मैं पूछता, 'मुझे खुदा के बारे में बताओ।' तब वह एक खास ढंग से कहती, आंखें मूँदकर वह शब्दों को लम्बा खींचकर कहती। फिर बात शुरू करने के पहले वह कपड़ों को कसकर ठीक से बैठ जाती।

स्वर्ग के सुन्दर देश में पहाड़ों के ऊपर वह रहता है। उसके चारों ओर खूबसूरत पेड़ होते हैं। जानते हो, स्वर्ग में जाड़ा कभी नहीं आता न बर्फ गिरती है। इस-लिए फूल कभी नहीं मुरझाते। सभी कुछ खुदा की दया से हरे भरे और सदा सुन्दर रहते हैं।

उसके चारों ओर फरिश्ते उड़ते रहते हैं। और शायद सफेद कबूतर उड़ उड़ कर स्वर्ग और पृथ्वी की खबरें उन्हें पहुँचाते रहते हैं। जो हम लोग करते हैं या दुनिया के दूसरे लोग करते हैं। और यहाँ की धरती पर हम सबों की फिकर के लिए प्रति व्यक्ति एक फरिश्ता रहता है—तुम्हारे, हमारे और तेरे नाना के लिए। खुदा सब पर एक सी नजर रखता है। जैसे अपने फरिश्ते को लो। वह उड़कर जाएगा और खुदा से कहेगा, 'अलेक्सी ने अपने नाना के प्रति बुरे शब्द कहे हैं।' 'अच्छी बात है।' खुदा ने कहा, 'बूढ़ा उसे बेंत मार सकता है।' फिर इसी तरह सब होता है। जो जैसा करता है वैसा ही खुदा से पाता है, जैसे किसी को दुःख मिलता है, किसी को खुशी, खुदा जो भी करता है क्योंकि उसके दूत, फरिश्ते सदा ही अपना पंख फैलाए हमारे पास ही रहते हैं।' यह कहते हुए वह मुस्कुराती जाती और प्रसन्न होती।

'क्या कभी तूने उसे देखा है ?'

'किसी ने देखा नहीं लेकिन जानते हैं !'

खुदा, स्वर्ग और फरिश्तों की बात करते करते उसके चेहरे पर जैसे पुन: यौवन लौट आया और उसकी आँखों में अद्भुत चमक आगई। और मैं चुपचाप उसे देखता और उसकी कहानियाँ सुनता रहा।

'आदमी खुदा को नहीं देख सकते। उनकी आखें पवित्र नहीं हैं। केवल कुछ साधु लोग ही उसे सामने देख सकते हैं। लेकिन फरिश्ते को मैंने भी देखा है। जब पवित्र आत्मा से प्रार्थना करते हैं तब फरिश्ते दिखाई पड़ते हैं। एक सुबह को गिरिजा के ऊपर दो फरिश्तों को मैंने बादलों की तरह उड़ते हुए देखा था। उन्हें देखकर मैं खुशी से लगभग चीख सी पड़ी और खुशी से आँसू भी निकल पड़े थे। ओफ! वह दृश्य कितना सुन्दर था। ओफ! अलेक्सी, खुदा की परछांई जहाँ भी पड़ती है अच्छा ही लगता है, चाहे स्वर्ग हो या पृथ्वी !'

'लेकिन यहाँ मेरे घर में ?'

'हाँ सर्वत्र !'

यह सुनकर मैं कुछ उलझन में पड़ा। क्योंकि उस घर में जो कुछ हो रहा था, दिन प्रतिदिन मैं उससे ऊबता जा रहा था और यह मानने को मैं तैयार न था कि खुदा की उपस्थिति में सब कुछ ठीक ही हो रहा था।

एक दिन मैंने देखा कि मामा साइक के कमरे में से मामी नातालिया रोती हुई निकली। उसके बदन पर आधे ही कपड़े थे और अपने दोनों हाथों को वह अपनी छाती पर दाबे थी।

'बचाओ। ए खुदा, मुझे इस नर्क से निकालो।'

उसकी इस प्रार्थना से मुझे बड़ी दया आई और तभी मैंने सुना ग्रेगरी बड़बड़ा रहा था, 'आँखों में अंधा हो जाऊँगा वे

मुझे अवश्य ही निकाल देंगे। मैं गलियों में भीख माँगकर भी यहाँ से अच्छा ही रहूंगा।'

उसके लिए मैंने सोचा कि वह शीघ्र ही अन्धा हो जाए क्योंकि उसके साथ ही गलियों में भीख माँगने का मैंने भी निश्चय किया था। मैंने यह विचार उसके सामने प्रकट किए थे। अपनी दाढ़ी के बीच मुस्कुरा कर उसने कहा था, 'जरूर, हम लोग साथ ही चलेंगे। और सभी गलियों में घूमघूम कर मैं सबों को बताऊँगा कि 'यह वासिल काशरिन का नाती है। जो रंगराजी की दूकान का मालिक है', यह बहुत अच्छा होगा। बहुत मजेदार!'

अक्सर ही मैं देखा करता कि मामी नातालिया के पीले चेहरे पर नीले दाग होते। आँखों के चारों ओर काला धब्बा तथा उसके ओंठ फूले होते। तब मैं नानी से पूछता, 'क्या माइक मामा ने उसे मारा है'

'हाँ', वह कहती, 'वही दुष्ट! लेकिन तेरा नाना यह सब नहीं सह सकता इसलिए रात को ही पीटा करता है। वह बहुत कड़ा, कठोर है और नातालिया बहुत कोमल! फिर भी ...' वह काफी प्रसन्नता से कहती, 'आजकल वैसी मार कहाँ होती है जैसी पहले होती थी। कभी कभी तो कान और दाँतों को कष्ट सहना पड़ता था। और कई कई घंटे लगातार पिटाई होती थी। एक बार ईस्टर के दिनों में तुम्हारे नाना ने हमें पीटा था, लगातार पीटता रहा, सुबह से रात तक। और केवल साँस लेने भर का मौका देता था।'

'तो क्यों?'

'यह याद नहीं! दूसरे बार भी इतनी देर तक पीटता रहा कि मैं मरते मरते हो गई थी। फिर कई कई घंटों तक मेरा

खाना वह बंद कर देता था। मैं बड़ी मुश्किल से जिन्दा बच पाई थी।'

मैं आश्चर्य में डूबा था। नानी, नाना से बदन में दूनी थी। वह यह सब कैसे कर पाता था? 'क्या वह तुमसे मजबूत है?' मैंने पूछा।

'मुझसे बड़ा है, मजबूत नहीं।' उसने जवाब दिया, 'लेकिन वह मेरा पति है। मेरे लिए खुदा के बराबर। मेरा काम तो उसकी बातों को धैर्य पूर्वक सहना ही है।'

नानी के एक काम को मैं बड़ी मौज में देखा करता था वह यह कि जब नानी मूर्ति और उसके चांदी के मुकुट को साफ करती होती तो वह फूलकर कहती, कितना खूबसूरत चेहरा है!' वह उसे चूम लेती और फिर कहती, 'पवित्र मां, मैं तुम्हारी धूल झाड़ रही हूँ।' फिर मुझसे कहती, 'अलेक्सी देखो, कितने अच्छे, साफ छोटे छोटे हरुफ हैं ये। बड़ी आसानी से पढ़े जा सकते हैं। इसका नाम है 'बारह पवित्र दिन'। यह जानते हो क्या लिखा है?—मेरे लिए दुःख मत करो। मुझे जल्दी ही कब्र में लेट जाना है। इस समय सचमुच नानी वैसी ही लगती जैसे छोटे छोटे बच्चे गुड़ियों के साथ खेलें।

उसे अक्सर भूत-प्रेत भी दिखाई पड़ते थे। कभी अकेले कभी कई। 'एक बार एक चाँदनी रात को रोडोल्फोव के मकान के पास से मैं जा रही थी तो मुझे उसकी छत पर कुछ दिखाई पड़ा। फिर पता लगा कि चिमनी से लग कर वह बैठा था, कोयले जैसा काला! उसका भयानक चेहरा तथा उसके सींग आगे झुके थे और वह यह देख रहा था कि चिमनी के भीतर क्या है। वह अपनी पूँछ हिला रहा था, अपने होंठ रगड़ रहा था। उसके सामने से जाते समय मैंने जोर से कहा, 'ईसा

जाग उठा है और उसके दुश्मन हार गए हैं।' उसने छत को हिलाया। उस दिन अवश्य ही उस घर में गोश्त पक रहा था तभी तो चिमनी से आती सुगन्ध में वह विभोर था।'

प्रेत के छत हिलाने की बात से मैं हंस पड़ा। उसी समय हँस कर नानी ने भी कहना जारी रखा, 'बच्चों की तरह ही वे खूब खेलते कूदते हैं। एक दिन बहुत रात गए तक मैं कपड़े रंग रही थी। तभी अचानक दरवाजा खुल गया, बहुत से छोटे छोटे लाल, हरे और काले जीव भीतर आगए। वे कई नाप के थे और शीघ्र ही वह सारे कमरे में फैल गए। मैंने दरवाजे तक जाना चाहा पर न जा पाई। वे फिर मेरे पाँवों पर रेंग कर मेरे कपड़ों पर चढ़ गए और ऊपर चढ़ते गए। उनके चूहों जैसे दाँत थे और हरी आँखों से सब कुछ घूर रहे थे। उनकी उठी हुई पूँछ सुअर के पूँछ के आकार की थी। मुझे तो लगा कि मैं पागल न हो जाऊँ।

मैंने आंख बन्द कर ली और कमरे भर में उस फौज की कल्पना करता रहा। नानी एक बार काँप उठी और बोली, 'और मैंने देव और राक्षस भी देखे हैं। जाड़े की एक रात में बर्फ पड़ रही थी। मैं उधर से जा रही थी कि यकायक मुझे कुछ आवाज सुनाई पड़ी। कौवे की तरह काले घोड़े मेरी ओर दौड़े आ रहे थे। एक राक्षस जिसके सफेद और बड़े बड़े बाल बाहर निकले थे और वह लाल हैट लगाए था, बैठा आ रहा था। लोहे की लगाम थी जिसे वह पकड़े था। उधर कोई रास्ता न मिला तो घोड़े पास के तालाब को लाँघ गए और बरफ पर दौड़ गए। हर घोड़े पर लाल टोप वाले राक्षस थे। वे यों भाग रहे थे कि शोले के बने हों। वे प्रायः रोज ही घूमने आते होंगे। उस दिन शायद वे किसी दावत से वापस आ रहे थे।

इस प्रकार नानी को पूरी तरह इन बातों पर विश्वास था और वह इस ढंग से कहतीं कि उनकी कहानियों को सच मानना ही पड़ता। सबसे दिलचस्प कहानियां उसकी यह थीं—'एक देवी का किस प्रकार डाकू स्त्रियों के बीच जाकर उन्हें रूसियों को न लूटने की शिक्षा देना। साधू एलक्सी, बहादुर इवान, कोजा पादरी, डाकू का सरदार बाबा उस्तिया और दूसरी कुछ महिलाएँ आदि। नानी की कहानियों का खजाना कभी न चुक सकता था।

वह न तो नाना से डरती न किसी शैतान या भूत से। लेकिन वह सदा ही काली मछली देख कर बुरी तरह भयभीत हो जाती थी। अक्सर रात को मैं सोता होता तो वह मुझे जगाकर कहती, 'अलेक्सी, देखो वहाँ कुछ है। उसे भगाओ।' मैं ऊँघता हुआ रोशनी लेकर कमरे भर का चक्कर लगा जाता तब कहीं वह शान्त होकर बैठती।

'तू इतना डरती क्यों है?' मैं पूछ बैठता।

'मैं खुद नहीं जानती।'

एक दिन जब नानी घुटनों के बल बैठी बुदबुदा कर आँखें बन्द किए हुये खुदा से शायद बातें कर रही थी कि चीखते हुए नाना ने आकर कहा, 'खुदा की पुनः हम पर कुदृष्टि है! घर में आग लगी है।'

'तुम यह क्या कह रहे हो?' नानी ने चौंक कर पूछा, फिर तत्काल ही वह उछल पड़ी। फिर आज्ञा के स्वर में जोरों से कहा, 'इजेनिया मूर्ति को ले लो। नातालिया, बच्चे को कपड़े पहना।'

मैं रसोई घर की तरफ भागा, इसकी खिड़कियाँ आँगन से सुनहले धुएँ की लगती थीं। जमीन पर भी पीली छायायें

पड़ रही थीं। मामा जैक आधे ही कपड़े पहने था और यों उछल रहा था जैसे आग की लपटें उसके पावों में लग रही हों। 'यह सब नाहक का ही काम है।' उसने चीख कर कहा, 'हम लोगों को आग में झोंक कर वह खुद भाग गया है।'

'चुप रह कुत्ते!' कहते हुये नानी ने उसे यों धक्का दिया कि वह गिरते गिरते बचा।

अब तक आग दूकान की ऊपरी छत तक पहुँच गई थी और लपटें दरवाजे के बाहर तक आ गई थीं। रात शाँत थी, फिर भी धुयें से लपटों का तनिक भी रंग नहीं बदला था। धुआँ ऊपर उठ कर एक काले बादल की शक्ल ले लेता था फिर भी रास्ते की चमकती बर्फ की चमक कम न हुई थी। सभी वस्तुओं की शक्लें बदल गई थीं परन्तु वह चिमनी अब तक पहले जैसी ही खड़ी थी। हमारी खिड़की पर आग की ध्वनि कुछ मनोहर थी जैसे सिल्क के कपड़े की रगड़। आग बढ़ती रही, अपना काम करती रही। आग ने सारी दूकान को जलाकर यों काली कर दिया जैसे गिरजाघर की काली मूर्तियां। इससे आग के प्रति मेरे मन में तनिक आकर्षण ही हो गया।

एक बड़े बालों वाला कोट, जो मुझे पूरा ढंक लेता था, और एक जोड़ी जूता जो मेरे हाथ पहले आ गया, लेकर मैं सहन में भाग आया। वहाँ अत्यन्त अव्यवस्था थी। तेज रोशनी से चकाचौंध तथा नाना, मामा और लोगों के एक साथ चीखने से भौंचक्का सा हो गया। मैं नानी को देख कर सचमुच चौंक गया। अपने शरीर को एक बड़े कम्बल में लपेटे और सिर पर एक बोरा रखे सीधी आग में

दौड़ रही थी। जब वह आग में खो गई तो चिल्लाई, 'सभी गन्धक, तूतिया, अरे मूर्खों, अब बिस्फोट होगा।'

'उसे बाहर खींच लो ग्रेगरी।' नाना चीखा, 'नहीं तो खतम हो जाएगी।' तभी नानी आगई। आधी बेहोश, झुकी हुई वह तूतिया का बड़ा घड़ा लिए थी।

'घोड़े को बचाओ' वह चीखी। बीच बीच में खांसी उसकी बात को रोक रही थी। 'यह मेरे हाथ से छीनो। देखते नहीं मैं जल रही हूं।'

ग्रेगरी ने जल्दी से उस पर से कंबल खींच लिया। और बर्फ के टुकड़े आग से भरे दरवाजे की ओर फेंकने लगा। जबकि नाना नानी पर ही बर्फ छिड़क रहा था। फिर झटपट तूतिया के घड़े को बर्फ में गाड़ कर नानी दरवाजे की ओर भागी। बाहर कुछ लोग जमा हो गये थे, उनसे कहा, 'पड़ोसियों, हमारी मदद करो, चीजों वाला कमरा बचा लो। अगर उस कमरे में आग पहुँच गई तो आप सबों के घरों की भी खैर नहीं। छतों को तोड़ कर घास के गट्ठरों को बाग में खींच लो। ग्रेगरी कुछ बर्फ ऊपर भी फेंको, सभी नीचे ही नहीं। जैक, बेकार चारों ओर मत घूमो, कुल्हाड़ी दे दो, इन लोगों की मदद करो। मेरे पड़ोसियों, दोस्तों की तरह काम कीजिये और खुदा मदद करेगा, भला करेगा।

मेरे लिये नानी खुद आग की तरह ही थी। लपटों के बीच वह बाल बाल बचती। इसकी छाया जैसे इस समय हर ओर व्याप्त हो गई थी। मदद देते हुये, रास्ता बताते हुये वह पागल सी थी।

अस्तबल से छूटकर शरापा यों कूदा कि धक्का खाकर नाना गिरते गिरते बचा। उस जानवर की चमकदार

आँखों की रोशनी और अगले खुरों की चमक से हवा भी जैसे हिल गई। नाना उसकी रास न पकड़ सका। परन्तु कूद कर पीछा किया और पुकारा, 'पकड़ लेना।'

नानी ने आगे आकर घोड़े को रोक लिया फिर उसे तनिक प्यार से थपथपाती हुई बोली, 'अधिक डरने का काम नहीं है। चूहे!'

चूहे! चूहे से कई गुना बड़ा, फिर भी नानी के पीछे पीछे दरवाजे तक आया। इजेनिया ने बच्चों को घर के बाहर निकाला। फिर उसने नाना से कहा, 'हमें अलेक्सी कहीं न मिला।'

नाना की आज्ञा हुई कि वह हट जाये परन्तु मैं तो इसीलिये सीढ़ी के नीचे छिप गया था कि इजेनिया मुझे न पा सके। अब तक छत जलकर गिर चुकी थी और कोनों का अस्तित्व आकाश के नीचे अकेले खड़ा था। तभी घर के भीतर धड़ाका हुआ और तेजी से आग की लपटें चारों ओर दौड़ गईं। लोग आग पर बर्फ डालते ही रहे। आग के कारण गरमी में भी एक उबाल आ गया था। एक अजीब दुर्गन्धपूर्ण धुआँ चारों ओर फैल गया कि प्रत्येक व्यक्ति की आंखों में पानी आ गया। मैं सीढ़ी के नीचे से निकला तो नानी के रास्ते में आ पड़ा। देखते ही उसने कहा, 'भाग, भाग नहीं तो मर जाएगा।'

ठीक उसी समय पीतल का चमकदार टोपा पहने तेज घोड़े पर सवार एक सिपाही ने आकर अपने चाबुक को सनका कर डराते हुये कहा, 'हटो, सब कोई।'

इसपर एक हल्का सा विरोध सबों के बीच उठा। तभी घोड़े की टाप के पास से मुझे खींच कर नानी ने कहा, 'मैंने कहा न कि भाग जा।'

यह समय अवज्ञा का नहीं था। वहाँ से हट कर मैं रसोई घर की ओर बढ़ा परन्तु अब तक मेरी दृष्टि के सामने केवल भीड़ ही भीड़ थी और वालों की टोपियों के बीच ऊँची ऊँची पीतल की टोपियां दिखाई पड़ रही थीं। आग पर काबू पा लिया गया था, आग बुझ भी रही थी। सिपाहियों ने आग बुझने पर भीड़ को तितर बितर कर दिया और नानी रसोई घर में आई।

'यह कौन है! अरे तू है। बहुत डरा है? परन्तु अब सब ठीक हो गया। अब डरने की जरूरत नहीं।'

जब वह मेरे सामने बैठ गई तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह कांप रही है। मुझे हर ओर अंधेरा इस समय अच्छा लग रहा था।

नाना ने दरवाजे पर से पुकारा, 'भीतर हो'

'हाँ।' नानी ने उत्तर दिया।

'क्या तुम जल गईं?'

'थोड़ा सा पर अधिक नहीं।'

आगे बढ़ कर नाना ने दियासलाई जलाई जिसके प्रकाश में उनका कालिख से भरा हुआ चेहरा भी चमक उठा। फिर उसने मोमबत्ती जलाई और आकर नानी के पास बैठ गया।

'सब से अच्छा काम होगा कि अब नहा डाला जाए।' नानी ने कहा जो खुद भी कालिख में डूबी थी, तथा उसके शरीर से धुएँ की बदबू आ रही थी।

'कभी कभी खुदा इन्हें भी सुबुद्धि दे देता है।' उसकी बाहों को थपथपा कर नाना ने कहा, 'परन्तु कुछ क्षणों के ही लिये।'

नानी ने मुस्कुराकर कुछ कहना शुरू किया परन्तु बीच में ही नाना ने रोककर कहा,

'अंगरी से पिण्ड छुड़ाना ही पड़ेगा। यह सब खेल उसकी ही लापरवाही से हुआ है। उसके काम करने के दिन अब समाप्त हो गए हैं। हाँ, तुम उस मूर्ख जैक के पास जाओ जो सीढ़ी पर बैठा चीख रहा है।'

नानी उठी और चली गई। तब बिना मुझे देखे ही धीमी आवाज में नाना ने कहा, 'तुमने शुरू से आग लगते देखा, क्यों? तुमने देखा कि नानी ने क्या क्या किया। वह बूढ़ी है और बेकार! परन्तु तुम्हें समझना चाहिये........ अरे तू?'

थोड़ी देर तक वह झुका रहा, कुछ कहा नहीं। मोमबत्ती का जला हुआ भाग काट दिया और उठ खड़ा हुआ।

क्या तू बहुत डर गया था?'

'नहीं'

'ठीक है। डरने की कोई बात ही नहीं थी।'

फिर एकाएक उसने अपनी कमीज उतार डाली और नहाने का उपक्रम करने लगा। 'आग लगाना कितनी बड़ी बदमाशी है। जिसने आग लगाई हो उसे चौराहे पर बेंत लगनी चाहिए। या तो वह मूर्ख होगा या चोर! सजा पाने पर ही आग लगाना बन्द होगा। पर तू यहाँ क्यों भटक रहा है?'

उस रात मुझे नींद न आई। मैं ज्योंही बिस्तर पर लेटा कि एक अमानुषिक आवाज मेरे खाट के नीचे से आती सी जान पड़ी। मैं फिर भाग कर रसोईघर में गया। नाना उस समय भी कमरे के बीच में खड़ा था। कमीज वह नहीं पहने

था। हाथ में एक मोमबत्ती लिए था जो रह रह कर काँप उठती थी। वह लगातार अपना पाँव तो हिला रहा था परन्तु उस स्थान से हटता न था। उसने पुकारा, 'जैक, यह क्या है ?'

मैं पुनः कूद कर भट्टी पर, अपने छिपने के स्थान पर पहुँच गया। घर में फिर एक हँगामा उठ खड़ा हुआ। छत और दीवारों से एक अजीब भयानक मौत की सी आवाज सतत् बढ़ती आ रही थी। नाना और मामा जैक बिना कुछ समझे बूझे इधर उधर भाग रहे थे, परन्तु नानी सबों को आज्ञा दे रही थीं। अंगरी आवाज कर रहा था, साथ ही चूल्हा जलाकर वह लोहे की केटली में गर्म पानी भी तैयार कर रहा था। वह अपना सिर इस प्रकार बार बार ऊँचा करता व गिराता कि लगता जैसे अस्तबल का ऊँट हो।

'चूल्हे में आग जलती रहे।' नानी ने आज्ञा दी। अंगरी उछल कर भट्ठी पर चढ़ा और मेरा पाँव कुचल कर चौंक पड़ा 'यहाँ कौन है ?' फिर मुझे देख कर चीख पड़ा, 'तू सदा ही यहीं आ मरता है। मैं डर गया था।'

'क्या हुआ है ?'

'तेरी नातालिया भाभी को बच्चा हुआ है।' नीचे कूदते हुए उसने बताया।

मुझे याद आया मेरी माँ इस प्रकार नहीं चिल्लाई थी जब उसे बच्चा हुआ था।

केतली को आग पर चढ़ा कर अंगरी फिर चढ़ आया। अपने जेब से एक पाइप निकाल कर उसने मुझे दिखाया। 'यह मेरी आँख का इलाज है। नानी कहती थी कि मुझे सुंघनी लेनी चाहिए परन्तु मैं सोचता हूँ कि धूम्रपान से ही ठीक होगा।'

भट्टी के किनारे पाँव मोड़ कर उसने नीचे झाँक कर आग देखी। उसके चेहरे पर कालिख की पर्त जम गई थी। उसकी फटी कमीज से मैं उसकी देह देख सकता था। उसके चश्मे का एक शीशा टूट गया था और खाली फ्रेम में से झांकती हुई उसकी आंख इतनी लाल थी जैसे घाव हो।

अपने पाइप में सूखी तमाखू भरते हुए एक शराबी की तरह उसने कहा, 'मुझे अच्छी तरह मालूम है कि तेरी नानी बेचारी जले हुए हाथों के लिए कुछ न कर सकेगी। अपनी मामी का कराहना सुन रहे हो न! उसके उस कष्ट के बारे में सभी भूल गए हैं। ज्योंही आग लगी कि उसके मूर्छा आ गई। उस पर से डर। तुम नहीं जानते कि बच्चे को जन्म देने में कितना कष्ट होता है। फिर भी सभी उससे घृणा करते हैं। परन्तु तुम मेरी बात मानना। हर स्त्री का आदर करना चाहिए। औरतें माँ होती हैं।'

इस बात को मैं चुप चाप समझने की कोशिश कर रहा था कि दरवाजा खुला। शराब के नशे में चीखता हुआ मामा माइक आया। 'उसके लिए स्वर्ग का दरवाजा खुल रहा है। उसे छोड़ दो........मैं उसे एक बार देखना चाहता हूं।'

जमीन पर बैठा वह अपना पाँव पटक रहा था।

अब तक भट्ठी बुरी तरह गरम हो गयी थी। मैं नीचे उतरा और मामा माइक ने मेरे पाँव पकड़ लिये जिससे मैं पीठ के बल गिर पड़ा, मुझे चोट भी लगी।

'मूर्ख!' मैंने कह दिया।

उसने चीखा लिया, 'मैं तेरी हड्डियाँ तोड़ डालूँगा!'

भागकर मैं उधर गया जहाँ मूर्तियाँ रखी थीं। जिसके सामने मामा प्रार्थना कर रहा था। मेरे मन में यह

एक ओर को हो गया फिर चीखा ।' 'अरे तुझे क्या हुआ ?'

मैं सब बता देता । मेरे सिर व देह में दर्द हो रहा था । परन्तु मैंने इसलिए कुछ नहीं कहा कि यह सब जो रहा था उससे मैं आश्चर्यचकित था । वहाँ जितनी कुर्सियां थीं सभी पर कोई न कोई अवश्य था । कुछ पादरी, कुछ फौजी कपड़े पहने लोग । वे ऐसे बैठे थे जैसे काठ के या जमे हुये लोग हों । वे शायद किसी बात का इन्तजार कर रहे थे । वहाँ केवल पास से पानी के गिरने की आवाज आ रही थी । दरवाजे के पास बिल्कुल सीधा होकर मामा जैक खड़ा था, अपना हाथ पीछे बाँधे, गम्भीर मुद्रा में । नाना ने उससे कहा, 'इस छोकड़े को ले जा कर सुला दो ।'

मामा ने मुझे वहाँ से चलने का इशारा किया और मेरे कमरे तक साथ गया । जब मैं ओढ़ कर लेटा तो उसने धीरे से कहा, 'तेरी नातालिया मामी मर गई है ।'

मुझे कोई आश्चर्य न हुआ । इधर कई दिनों से मैंने उसे खाने के समय देखा भी नहीं था ।

'नानी कहां है ?'

जरा खींच कर उसने कहा, 'नीचे ।' और कमरे से चला गया ।

मैं भयभीत सा बिछौने पर पड़ा रहा । मैं खिड़की के बाहर शून्य में घूर रहा था । डर कर मैंने अपना चेहरा ढक लिया और एक नजर फर्श पर गड़ाए रहा कि कोई आ तो नहीं रहा है ? मुझे पता नहीं क्यों सीगन के मृत्यु की बात याद आ रही थी ।

मैं अपने चेहरे व कलेजे पर सूजन का अनुभव कर रहा था। इस घर में जो कुछ भी हुआ था, सभी स्मृतियां मेरी मानसिक आंखों के सम्मुख स्टेज के जुलूस की तरह आ रही थीं।

तभी नानी कमरे में आईं, दरवाजा बन्द किया और बच्चों की तरह मूर्ति के सामने खड़ी होकर रोने लगी, 'मेरे हाथ, जल गए हैं, बुरी तरह।'

पांच

एक के बाद दूसरी ऐसी ही घटनाएँ घटती गईं । एक शाम को चाय समाप्त होने के बाद जब नाना मुझे प्रार्थना की एक किताब पढ़ा रहा था और नानी तश्तरियाँ साफ कर रही थी तभी मामा जैक तेजी से भीतर आया । अपना हाथ उठाकर टोपी उड़ाता हुआ वह चीख पड़ा, 'माइक लड़ने पर उतारू हुआ है । हम लोग साथ साथ खाना खा रहे थे तभी उसने बकवास शुरू की । उसने तश्तरियां फोड़ डालीं । खिड़की तोड़ी । मुझे और ग्रेगरी को गाली दी । और अब यहाँ तुमसे लड़ने आ रहा है । मैं उसे अब मार डालूँगा !'

धीरे से नाना उठा । उसका चेहरा कठोर होकर क्रोधित हो गया । 'सुना ?' नानी से उसने पूछा, 'तुम्हारा ही बेटा अपने बाप को मारने आ रहा है । लेकिन अब ऐसा ही वक्त आ गया है ।'

अपने कंधों को कड़ा करके वह दरवाजे पर गया और जैक से कहा, 'मैं जानता हूँ कि बारबरा के दहेज को हड़पने के लिए यह सब हो रहा है ।' नाना मामा के उत्तर पर हंस पड़ा । मामा जैक ने कहा, 'मैं, ? मैं क्यों चाहूँगा ?'

'अरे तू——मैं तुझे खूब जानता हूँ।'

नानी ने जल्दी जल्दी परन्तु खामोशी से तश्तरियाँ एक ओर सरका दीं।

बनावटी हँसी के बीच नाना ने मामा जैक से कहा, 'बहुत ठीक, मेरे बेटे। तुम्हें शुक्रिया! अरे सुनो, इसे चाहे तो एक लोहे का मोटा छड़ या कोई और चीज दे दो, जिससे जैक जब तुम्हारा भाई यहाँ आवे, तो अपने बाप की आँखों के सामने ही उसकी हत्या कर देना।'

जेबों में हाथ डाल कर वह एक ओर हो गया और बोला, 'अच्छी बात है। अगर तुम मुझ पर यकीन न करो तो......।'

'तुम पर यकीन!' नाना ने चिढ़ कर कहा 'तुमसे अच्छे तो जानवर, एक चूहा भी। मैं तेरी चाल जानता हूँ। तूने उसे शराब पिलाकर इस हालत में पहुँचाया होगा। फिर भी क्यों रुकता है। मुझे मार डाल, मुझे या उसे, किसी एक को।'

नानी ने धीरे से मुझसे कहा, 'भागकर ऊपर जा और खिड़की से देख और ज्योंही माइक दिखाई पड़े आकर मुझे कहना। जल्दी जा!'

मैं भाग कर गया और खिड़की से झाँकने लगा। यद्यपि इतनी धूल थी कि कुछ अधिक न दिखा। सड़क पर इस समय बहुत अधिक लोग न थे। काफी दूरी पर एक मकान के पीछे से मामा माइक आता दिखाई दिया। वह अपने हैट से अपना कान ढँकना चाहता था परन्तु हैट बार बार उछल पड़ती थी। वह भूरी बंडी और धूल भरे जूते पहने था। उसका एक हाथ उसके पाजामे के जेब में था, दूसरा दाढ़ी पर। उसका चेहरा मैं साफ साफ न देख सका परन्तु ऐसा लगता था जैसे वह मानो कल्पना कर रहा हो कि आते ही वह इस घर को मुट्ठी में दबोच

लेगा। मुझे दौड़कर खबर देना चाहिए था, परन्तु मैं खड़ा देखता रहा, मामा धूल उड़ाता सड़क पार कर रहा था, फिर आकर वह भट्ठी (शराब खाना) के दरवाज़े भड़भड़ाने लगा। तब मैं भागा और नाना के कमरे का दरवाजा भड़भड़ाया।

'कौन है'? वह अजीब आवाज में बोला और जब विश्वास हो गया कि मेरे सिवा कोई नहीं तब दरवाजा खोला, 'अरे तू है, बोल क्या बात है ?'

'वह भट्ठी में गया।'
'अच्छा तो साथ चल।'
'मुझे वहाँ डर लगेगा।'
'चल चल !'

मैं पुन: खिड़की पर पहुँचा। रात बढ़ रही थी। धूल घनी होकर अंधेरा बढ़ा रही थी। आस पास के घरों से पीला धुआँ आ रहा था। पास के घरों से थोड़ी संगीत की भी ध्वनि आरही थी। भट्ठी के भीतर से भी गाने की आवाज आ रही थी। जब जब भट्ठी का दरवाज खुलता था गाने की एक कड़ी बाहर आ जाती थी। और जब दरवाजा बन्द हो जाता तो लगता कि गाने की कड़ी को बीच में ही किसी ने कुल्हाड़ी मार दिया है। यह गाना निश्चित रूप से एक भिखारी निकीतुस्का का था।

मेरी नानी निकीतुस्का से चिढ़ती थी। उसका गाना सुनकर कुढ़ कर कहती, 'वाह क्या गाना है ! हजारों गवैयों में एक !'

मुझे आलस आने लगी। मैं सोचने लगा मेरा पिता कैसा व्यक्ति था कि मेरे मामा और नाना उसे पसन्द नहीं करते थे जब कि नानी, ग्रेगरी और इजेनिया उसका आदर से नाम लेती हैं। मेरी माँ कहाँ है ? मैं आजकल माँ के विषय में बहुत अधिक

सोचा करता था। वह मेरे लिए नानी की कहानियों की नायिका की तरह हुई जा रही थी। उसने उसे घर में परिवार के साथ रहने से इन्कार कर दिया था। मैं कल्पना करता कि वह डाकुओं के साथ रहती होगी जो अमीरों का धन छीन कर गरीबों में बांट देते थे। याने किसी गुफा में रॉबिनहुड के साथियों के साथ रहती होगी।

मैं दिवास्वप्न देख रहा था। तभी जैसे मैं चौंक पड़ा। नीचे आंगन व बरामदे में शोर हो रहा था मैंने देखा कि नाना मामा जैक और मेजियन—उस भट्टी (शराबखाने) का मालिक मामा माइक को ढकेलते हुए ला रहे थे। माइक उनसे उलझ रहा था और बदले में लात घूँसे पाता था।

थोड़ी देर बाद! सारी गली तमाशबीनों से भर गई और हर एक खिड़कियों से सिर निकल आए। मुझे तो एक कहानी का मजा आ रहा था। फिर अचानक जाने क्या हुआ कि सारा शोर खो गया और लोग छितर बितर हो गए।

मैंने देखा कि दरवाजे पर निर्जीव सी नानी झुकी हुई बैठी थी। मैं उसके पास गया और उसके गुलगुले गालों को हल्के से थपथपाया परन्तु ऐसा लगा जैसे मेरे स्पर्ष का उसे कुछ अनुभव न हुआ और वह केवल एक बात ही दुहराती रही, 'ओ खुदा! क्या हमारे लिए तुम्हारे यहां तनिक भी दया नहीं बची है। रहम करो!'

पोलवाई स्ट्रीट के इस घर में नाना को आए अभी एक साल ही हुए थे। पिछले बसन्त से इस बसन्त तक परन्तु इस छोटे से काल में ही यह परिवार बहुत अधिक बदनाम हो गया था। मुश्किल से ही कोई ऐसा रविवार होता था जब पड़ोस के

बच्चे शोर मचा कर हमारे दरवाजे पर न नाचते होते और कहते, 'काशिरिनों के यहां फिर कलह हो रही है।'

कभी कभी शाम को मामा माइक का आगमन बहुत बुरा होता था जब वह हम सबों को बुरी तरह डरा देता था। कभी कभी तो वह अपने साथ अपने दो या तीन साथियों को जो बहुत बदसूरत दिखते कुनाविन वाली दूकान से लाता। वे खूब पियक्कड़ होते। एक दिन तो उन्होंने स्नान घर की सभी तोड़ी जाने वाली चीजें तोड़ डालीं। स्टूल, बेन्च, केटली, चूल्हे, और दरवाजे भी तोड़ी।

क्रोध से भरा हुआ परन्तु अपने को रोके हुए नाना खिड़की पर खड़ा अपनी सम्पत्ति का यों नाश होता देखता रहा जब कि नानी चुपचाप बगीचे की ओर जाकर पुकारती, 'ओफ, माइक, तुझे क्या हो गया है?'

मैं केवल नानी के पीछे पीछे दौड़ता। क्योंकि मैं अकेला न होता, मुझे हर समय डर लगा करता। मैं नाना के कमरे में भी चला जाता और फलस्वरूप वह मुझे कोसता और बाहर निकाल देता। तब मैं खिड़की पर चढ़कर बागीचे में झाँकता ताकि नानी को देख लूं। फिर मैं उसे पुकार कर बुलाता कहीं वे सब उसे मार न डालें। वे तो न आती परन्तु मेरी आवाज सुनकर मेरा शराबी मामा मेरी मां को लक्ष कर के गालियाँ बकने लगता।

ऐसा ही एक शाम को जब नाना बीमार था और तौलिए से भीगा व लिपटा अपना सिर तकिए पर रगड़ कर बोला, 'क्या इसी सब पाप के लिए मैं जीवित हूं। अगर बहुत शर्म की बात न होती तो मैं इन दुष्टों को अवश्य ही पुलिस के हवाले करके कल अदालत में पेश कराता। कितने लज्जा की बात है—कभी किसी बाप ने अपने बेटे को गिरफ्तार कराया है? इसीलिए

चुपचाप पड़े रहने के सिवा कुछ नहीं किया जा सकता !'

लेकिन अचानक उछल कर वह खिड़की पर आगया। नानी जो उसकी सेवा में थी उसे खींच कर पूछा, 'कहाँ जा रहे हो ?'

'मुझे एक रोशनी दे।' तेज साँस लेकर उसने कहा।

जब नानी ने मोमबत्ती जला दी तो नाना ने उसे यों पकड़ा जैसे बन्दूक हो और चीख कर पुकार उठा, 'अरे ओ माइक, लुटेरा, पागल कुत्ता !'

तभी एक ईंट का टुकड़ा ऊपर की खिड़की से आकर नानी के पास मेज पर गिरा।

'तेरी आँख फूट गई है क्या; निशाना खाली गया।' क्रूर हँसी हँस कर नाना ने कहा।

नानी ने आगे बढ़कर बच्चे की तरह नाना को उठा लिया और लाकर खाट पर लिटाया। और बड़बड़ाई, 'तुम्हें क्या हो गया है ? तुम क्या सोच रहे हो ? खुदा क्षमा करे ! उसने अब कुछ किया तो उसे साइबेरिया ही मिलेगा। परन्तु वह तो इतना पागल हो गया है कि शायद उसे साइबेरिया के माने ही नहीं मालूम।'

अपना पाँव पटक कर टूटती सी आवाज में नाना ने कहा, 'उसे मुझे मार डालने दो !'

नीचे की दीवाल पर प्रहार जारी था। मैंने दौड़ कर मेज पर पड़ी ईंट को उठाया और खिड़की की ओर बढ़ा कि नानी ने रोक लिया और छीन कर ईंट एक कोने में फेंक दी और कहा, 'यह भी बदमाश है।'

दूसरी बार मेरा मामा पूरी तैयारी के साथ [illegible] आया और दरवाजे पर शोर करने लगा। नाना भी [illegible] तैयार था। उसके साथ दो पड़ोसी और शराबखाने के [illegible]

की पत्नी भी थी । उनके पीछे नाना कह रहा था, 'मुझे जाने दो । केवल दो बातें कर लेने दो ।

शिकारी की तरह एक पांव आगे बढ़ाकर नाना खड़ा था। उसने नानी को धक्का दे दिया । मैं सीढ़ी के ऊपर से टंगी हुई लालटेन की धीमी रोशनी में उन चारों के भयानक चेहरे देख रहा था ।

मामा ने अपना काम जारी रखा ।

दरवाजे के पास दीवाल में एक छोटी सी खिड़की थी जिसमें आदमी मुश्किल से सिर भी न निकाल पाता । माइक मामा ने इसे तोड़ डाला था और अपनी टूटी अवस्था में वह एक काना आँख की तरह लगता थी। नानी ने दौड़ कर अपना सिर उससे बाहर निकाला और चीखी,

'माइक भाग जा । खुदा के लिये भाग जा । ये सब तेरे टुकड़े कर देंगे । भाग जा ।'

उसने उसपर वार किया । कोई चौड़ी वस्तु उसके सिर पर गिरती दिखाई पड़ी । चोट से नानी गिर पड़ी परन्तु तब भी वह पुकारती रही, 'माइक, माइक' भाग जा ।'

'तू कहाँ है ।' नाना घबड़ाहट में पुकार उठा ।

दरवाजा टूट गया था । दूसरे ही क्षण उस अन्धकार से नाना कूदकर आ गया परन्तु फौरन ही वह गिरा दिया गया ।

उस दूसरी औरत ने उठाकर नानी को नाना के कमरे में पहुँचाया और नाना भी पीछे पीछे आया ।

बहुत दुःख से झुक कर नाना ने पूछा, 'कोई हड्डी किस है ?'

'लगता है कि टूटी होगी ।' बिना आँखें खोले ही उसने कहा और पूछा, 'पर तुम ने उसे क्या किया, उसे......?'

'होश में बातें करो ।' क्रोध से चूर नाना ने कहा, 'क्या मैं कोई जङ्गली जानवर हूं । उसे बाँध रखा है और वह शांत है । यह गोकि बुरा है पर उपद्रव किसने शुरू किया ?'

नानी कराही ।

मैंने हड्डी बैठाने वालों के पास आदमी भेज दिया है ।' नाना ने कहा, 'परन्तु ये सब मुझे समाप्त करने पर ही लगे हैं ।'

'ओह, उन्हें दे दो जो वे चाहते हैं ।'

'लेकिन बारबरा का क्या होगा ?'

फिर एक लम्बी बहस हुई । नानी का ढङ्ग साफ और दयालु था, नाना का तेज और क्रुद्ध ।

तभी एक बूढ़ी औरत आई जिसके ओंठ मछली के मुंह की तरह थे । मैं उसकी आंखें न देख सका । उसके पाँव की ध्वनि भी सुनाई पड़ती थी । उसके हाथ में कुछ था । मुझे लगा कि वह नानी की मौत लाई है ।

उत्तेजना से भर कर मैं उसके पास गया और चिल्लाया—'भागो' नाना ने मुझे घूरकर देखा और मुझे ऊपर के कोठे में ले गया ।

छः

बसन्त में मेरे मामाओं ने अपनी अलग दूकानें खोल लीं। जैक ने शहर में और माइक ने नदी किनारे। जब कि नाना ने उसी गली में एक अच्छा सा मकान खरीदा। नीचे का भाग उसका भट्ठीखाने के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।। ऊपरी हिस्से में कई कमरे थे।

नाना काफी खुश था। एक दिन टहलते समय मुझसे कहा, 'तुझे मैं शीघ्र ही पढ़ना सिखाऊँगा।'

बिल्कुल ऊपर वाला भाग नाना का था जिसमें उसका सोने का कमरा था तथा वहीं वह मिहमानों से मिलता था। हाँ नानी और मैं भी वहाँ आ जा सकते थे। उस कमरे की खिड़की से बाहर का दृश्य दिखाई पड़ता था। हर रविवार की शाम को शराब खाने से निकलने वाले शराबियों के चीखने चिल्लाने का दृश्य भी दिखाई पड़ता था। कभी कभी उन्हें कूड़े या बोरे की तरह बाहर ढकेल दिया जाता था। और फिर वे भट्ठी में पुनः जाने की निरर्थक कोशिश करते थे। यह सब मुझे बहुत दिलचस्प मालूम होता

एक दिन सुबह नाना मामाओं की दूकान देखने गया ताकि उन्हें किसी कठिनाई में मदद कर सके। परन्तु रात को बहुत थका हुआ तथा असन्तुष्ट और क्रोध में वापस आया।

नानी ने अपने को व्यस्त रखा। कभी खाना पकाती रही, कभी सिलाई करती रही। एक तरह से वह सदा ही सिलाई करती रहती। वह अपनी नास की डिबिया से नास लेती और खुश होकर कहती,

'खुदा को धन्यवाद। अलेक्सी, देख आखिर हम लोग एक शांत जिन्दगी बिताने लग गए हैं! स्वर्ग की देवी को धन्य-वाद। आखिर सब कुछ ठीक हो गया न।'

परन्तु मेरे और उसके शांत जीवन के अर्थ में अन्तर था। मैं सदा ही नानी के पीछे पीछे डोलता रहता। वह चाहे बगीचे में या आंगन में होती, मैं साथ होता मैं उसके साथ पड़ोसियों के यहाँ जाता जहाँ काम के नाम पर वह घन्टों बैठी रहती, तरह तरह की कहानियाँ सुनाती। मैं अनुभव करता जैसे उसमें नई खूबियाँ आगई हों। बचपन की इस याद के सिवा और कोई भी याद नहीं कि वह बूढ़ी औरत किस प्रकार हर समय दूसरों की मदद व आराम के लिये परिश्रम करती रहती।

'तू डाइन है।' एक बार मैंने कहा था।

'तेरे खोपड़े में अब दूसरी बात कैसे आती है।' कह कर वह हँसी फिर सोच में पड़ गई, 'अच्छा, मैं डाइन! न मैं पढ़ना लिखना जानती! न नाना ही जानता है। मेरी संतानों में भी कोई पढ़ा लिखा नहीं है।'

तभी मुझे उसके जीवन का दूसरा पहलू देखने को मिला। 'तुझे मालूम है न कि मैं भी तेरी तरह ही अनाथ थी। मेरी

माँ गरीब खेतिहर स्त्री थी और पंगु थी। जब वह छोटी थी तभी एक आदमी ने उसे बहकाना चाहा। तब एक रात को, वह खिड़की से कूद पड़ी और इस बुरी तरह घायल हुई कि उसकी बहुत सी हड्डियों के साथ उसका बायाँ हाथ बुरी तरह भुरकुस हो गया। दायें हाथ से वह काम करती थी। जब वह पङ्गु हो गई तो उसके मालिक ने उसे निकाल दिया और किसी तरह भी वह अपने रोटी भर का प्रबन्ध न कर सकी। अन्त में उसने भीख मांग मांग कर किसी तरह हम लोगों को जिन्दा रक्खा। परन्तु पुराने जमाने के लोग अच्छे और खुशहाल तथा दयालु होते थे।

'हम लोग कुछ दिनों राह में भी रहे। माँ और मैं। बरसात और जाड़ों में भी हम लोग भागते। सचमुच गरमी और बरसात में धरती पर चलना कितना अच्छा लगता था। जमीन पर बिछी घास तो जैसे मखमल हो। और क्यारियों में तो यों खुशनुमें फूल खिले होते कि देख कर कोई भी खुशी से नाच उठे। उस समय मेरी माँ अपनी नीली आंखें आधी मूंद कर आकाश की ओर सिर उठाकर करुण शब्दों में खुदा को दुहाई देती। वह कितनी प्यारी थी! उसकी आवाज कितनी मधुर थी। उस समय लगता सारा वातावरण खामोश होकर उसे सुन रहा हो। उस समय भीख मांगना भी अच्छा लगता था। परन्तु जब मैं दस साल की हुई तो मेरी मां को मुझे लेकर भीख मांगने जाते लाज लगती, क्योंकि दूसरे लोग उसे दूसरी निगाह से देखते। इससे बालाखना में उसने रहने का प्रबन्ध कर लिया और वह अकेली ही दरवाजे दरवाजे जाती और मैं घर में रह कर फीते बनाना सीखती। इतवार और छुट्टियों के दिन वह गिरिजा की सीढ़ियों पर भी खड़ी हो जाती। मैं बहुत चाहती कि मैं अपनी मां की कुछ भी सहायता कर पाती परन्तु

मैं जब कुछ न कर पाती तो केवल रो लेती। फिर भी मैं लगी ही रही और दो वर्षों में मैंने काफी अच्छा काम सीख लिया और जल्दी ही शहर भर में मशहूर हो गई। और जिस किसी को भी फीता या बेलबूटे बनवाने होते मेरे ही पास आकर कहता, 'अकुलीना अपनी सलाइयां उठाओ।'

'उससे मुझे खुशी होती। मेरे लिए वे बड़ी खुशीके दिन थे। परन्तु इन सब का श्रेय मेरी मां को था मुझे नहीं। यद्यपि उसके हाथ बेकार थे और वह कुछ न कर पाती परन्तु उसकी शिक्षा ने सब किया। एक अच्छा उस्ताद दस काम करने वालों से अच्छा है।'

'अपनी शान में मैंने मां के कहा, मां अब तू भीख मांगना बंद कर दे क्योंकि जितना मैं कमा लेती हूं वह दोनों के लिए काफी है।'

'बेवकूफ,' उसने कहा, 'जो भी तू कमाती है वह तेरे दहेज के लिए है।'

'और फिर थोड़े दिन बाद ही तेरा नाना आया। क्या दिलचस्प छोकड़ा था। केवल बाइस साल का परन्तु बहुत चतुर नाविक। इसकी मां मुझ पर नजर गड़ाए थी। वह मुझे खूब मिहनती समझती थी परन्तु एक भिखारिन की बेटी होने के कारण वह मुझे अच्छी परिश्रमी पत्नी बनाना चाहती थी। कितनी धूर्त वह औरत थी! परन्तु छोड़ो इस बात को...। मृतक के लिए उसकी बुराई न याद करनी चाहिए। खुदा सब देखता सुनता है।'

कह कर वह एक करुणामय अट्टहास कर उठी और हँसने से उसके नथुने पूरी तरह फूल उठे। परन्तु उसकी उस समय की चमकदार आंखों का उसकी बातों से अधिक असर हम पर पड़ा।

जहां तक मुझे याद है एक शाम को नानी के संग चा पीने मैं नाना के कमरे में गया। वह बीमार था। एक तौलिया उसके हाथ पर लिपटी थी और पसीने से वह तरबतर था। उसका बदन पीला पड़ गया था। उसे देखकर बहुत करुणा होती थी वह बहुत गंभीर था, वह बिल्कुल वैसा था जैसा वह सब समय नहीं होता था। उस समय उसकी दशा देख कर बड़ी दया आई जब उसने कहा, 'मुझे और थोड़ी चीनी क्यों नहीं देती ?'

'मैंने शहद डाल दी है, इससे तुम्हें लाभ होगा।' नानी ने तनिक कड़ाई से कहा।

एक लम्बी सांस खींच कर एक बार में ही वह सारी चा पी गया और कहा, 'तुम देख लेना, इस बार मैं मर जाऊँगा।'

'यों नहीं कहना चाहिए।'

'ठीक है। पर देख लेना। अगर मैं मर जाऊँगा तब सब पता लगेगा।'

'ओह, तुम चुप न रहोगे ?'

लेकिन वह एक मिनट से अधिक चुप न रह सका। अपने भद्दे ओठों से वह लगातार कुछ बुदबुदाता रहा तथा अपनी उँगलियों से दाढ़ी उमेठता रहा। तभी जैसे उसे कोई पिन चुभ गई हो वह चौंक उठा और फिर वही कहने लगा जो भी उसके मन में था।

'जैक और माइक को फिर नई शादियाँ कर लेनी चाहिये। यह नई पत्नियां शायद उनके जीवन को नई दिशा दे सकें! क्या राय है ?' कहकर उसने उन औरतों का नाम लेना शुरू किया जिसकी उसे याद आई।

लेकिन नानी चुपचाप चा पीती रही, और मैं शाम के शांत आकाश को देखता रहा। शायद किसी सजा के

फलस्वरूप नाना ने मुझे बगीचे और आँगन में जाने से रोक रखा था। बाग की झाड़ियों में छिप कर खेलते बच्चों की आवाज मुझ तक आती रही। वे आवाजें मुझे अपनी ओर खींच रही थीं।

तभी नाना ने मुझे एक किताब दी और कहा, 'इधर आ धूर्त ! इधर बैठ ! इन अक्षरों को देख यह 'ऐज' है। दुहराओ 'ऐज, बुकी, वीदी'* यह क्या है ?'

'बुकी'

'ठीक, और यह ?'

'वीदी ।'

'गलत, ऐज । ओ ये हैं, ग्लेगोल, दोबरो येस्ट । यह क्या है ?'

'ऐज ।'

'ठीक और यह ?'

'तुम्हें चुपचाप पड़े रहना चाहिये। तुम तो समझते हो।' नानी ने कहा।

'मुझे तंग मत करो। मुझे यह अच्छा लगता है, इसकी जरूरत है, आगे पढ़ो अलेक्सी !'

मेरे कन्धे पर अपना हाथ रखकर उसने अपनी उँगली से अक्षर बताए। प्याज और सिरके की जोरदार गन्ध उसके मुँह से आई और मैं परेशान हो गया। तब उसने मेरे कान के पास जोर से कहा,

'जेमलिया ! लुदी !'

मैं सब समझ गया था। पर नाना का पढ़ाने का ढङ्ग अजीब था। उसके पसीने के साथ साथ मैं भी पसीने से तर

---

*रूसी ककहरा

हो गया। और उससे भी जोर से बोलता गया जिसे देख कर वह आश्चर्यचकित था। उसे हँसी आ गई और हँसी के साथ भयङ्कर रूप में खाँसी। उसने किताब गिरा दी और नानी से कहा। 'देखो यह किस तरह बन गया है। अरे ''''यह '''' यह अखाखान का पिल्ला!'

उसकी इस समय की हँसी देखकर मैं भी आनन्दित था और टेबिल के पास बैठी नानी भी मुस्कुरा रही थी। 'तुम दोनों ही पागल हो गये हो!'

नाना ने बड़ी कोमलता से कहा, 'मैं तो बीमार हूँ इसलिए चिढ़कर जोर से बोलता हूं। पर तुझे क्या हो गया है?' फिर नानी की ओर मुड़कर उसने कहा, 'नातालिया गलत कहती थी कि इसकी याददास्त कमजोर है।' फिर सिर झुलाकर कहता, 'इसकी याददास्त में कुछ नहीं हुआ है। खुदा का शुक्र है कि इसकी याददास्त दो घोड़ों की तरह तेज है।'

फिर उसने बड़े प्यार से मुझे बिस्तरे से हटाया, यह बड़ी सुखद स्मृति थी। 'इतना काफी है। अभी किताब ले जा और कल यदि सभी अक्षर सुना दोगे तब तुम्हें मैं पांच कोपेक दूंगा।'

जब मैं किताब लेने गया तो मुझे उसने अपने पास खींच लिया और कहा, 'तेरी मां तनिक भी तेरी फिकर नहीं करती।'

'तुम यह सब क्या कह रहे हो।' नानी ने टोका।

'हां मुझे नहीं कहना चाहिए परन्तु मेरा जी नहीं मानता। वह लड़की भी क्या है!'

उसने मुझे ढकेला 'अच्छा भाग जा। और बाग तथा आंगन में भी जाया कर परन्तु गली में नहीं।'

ज्यों ही मैं बगीचे में गया कि गली के लड़कों ने मुझे ढेले मारने शुरू किए और बाद में गालियां भी दीं। परन्तु गालियों के माने मैं नहीं समझता था इसलिए मैंने भी ढेले चलाए।

मैं काफी तेजी से लिखना पढ़ना सीख रहा था। नाना मुझे बहुत प्यार करने लगा तथा बहुत समय हम पर खर्च करने लगा। अब तो कभी कभी मैं उसकी आज्ञा का उलंघन भी कर डालता परन्तु पहले जैसी मार न पड़ती। फिर भी मैं पिछली मारों के बारे में भूला न था।

एक दिन नाना ने बहुत प्यार से कहा, 'चतुर होना चाहिए। जो सीधे होते हैं वे मूर्ख होते हैं। सीधा जानवर भी भेड़ माना जाता है।'

शाम की चा के बाद का समय मेरे पढ़ने का था।

'नाना!'

'हाँ?'

'कहानी सुनाओ।'

'चल बदमाश पहले पढ़ाई खत्म कर ले।'

एक पुरानी आराम कुर्सी पर लेट कर आंखें छत में गड़ाए वह ऊपर देखता रहा और इसी समय उसने अपनी जवानी की कहानियां सुनाईं। बदमाशों ने उसके पिता की हत्या कर दी थी। वे बदमाश बालाखना में वहां के एक सेठ जेयेव को लूटने आए थे। उसके शोर करने पर वही पहला शिकार हुआ था। तलवार से इसकी सारी देह काट डाली गई थी।

'यह सब जब हुआ तब मैं बहुत छोटा था इसलिए कुछ भी याद नहीं। जिसकी मुझे याद है वह एक आन्दोलन था। तब मैं केवल बारह साल का था। बालाखना में तीन तरह के कैदी लाए गए—छोटे, दुबले पतले से आदमी थे। कुछ तो इतने कम

कि भिखारियों से भी गए बीते थे और कुछ तो इस प्रकार अकड़ गए थे कि सीधे खड़े भी न हो पाते थे। गाँव वालों ने चाहा कि उन्हें मार डालें परन्तु उनके रक्षक सिपाहियों ने बचा लिया। फिर हम लोग उनसे काफी घुल मिल गए। वे काफी समझदार साबित हुए। परन्तु जो लोग निजनी से आए वे उन पर गुस्सा दिखाते उन्हें तंग करते। परन्तु कुछ थे जो अच्छी तरह बातें करते तथा रुपए भी देते।'

कहते हुए वह क्षणभर को रुका। आंखे बंद करके अपने बालों में उँगलियां चलाईं और कहना शुरू किया।, 'गलियों में जाड़े का साम्राज्य था। सभी झोंपड़ियां बर्फ से ढँक गईं थीं। कभी कभी वे फ्रान्सीसी आते और हमारी खिड़की के नीचे से शीशे पर धक्का देते। बात यह थी कि जाड़े के कारण उनमें से कई मर गए थे। उनका देश गर्म देश था। दो को हम लोगों ने अपने यहाँ स्थान दिया। एक अफसर और दूसरा उसका अर्दली।

'वह अफसर लम्बा और दुबला था कि उसकी हड्डियाँ दिखती थीं। वह बहुत पियक्कड़ भी था और जब पी लेता तो गाने लगता। जब वह रूसी भाषा सीख गया तब उसने बताया—तुम्हारा देश सफेद नहीं—काला है, बुरा, अवश्य ही उसका उच्चारण ठीक न था परन्तु हम लोग समझ लेते थे। उसने जो भी कहा था किसी हद तक ठीक ही था। बोल्गा के उत्तर का भाग कोई स्वर्ग तो है नहीं और दक्षिण का भाग गर्म है। वहाँ कैसपियन सागर के पास लोगों ने बर्फ गिरती नहीं देखी। उन्हें बर्फ और जाड़े का नाम भी शायद न मालूम हो।'

इसके बाद वह निद्रा जैसी खामोशी में फिर खो गया। उस के विचार भटक गए थे और उसकी आँखों की रोशनी कठोर हो गई थी।

'कुछ और सुनाओ' मैंने प्रार्थना की।

उसने शुरू किया, 'हाँ, हम लोग फ्रान्सीसी की बातें कर रहे थे। हम लोगों से बड़ा पापी कोई न होगा। कभी कभी वे माँ से आँटा खरीदते। उसे आदर से 'मैडम' कहते। माँ उनके बोरों में आँटा भर देती और वे उसे पाँच पूड*देते। मेरी माँ बहुत मजबूत थी। यानी जब मैं बीस वर्ष का हो गया तब भी वह मुझे बड़े मजे में उठा लेती थी। अफसर का अर्दली भी फीरोन को घोड़ों का बहुत शौक था। पहले तो यह फिक्र हुई कि उसे घोड़े छूने दिए जाँय या नहीं। परन्तु गाँव के लोग पुकारते—ऐ फीरोन! और वह सिर झटकता कूदता आ जाता। उसके बाल बालू के रंग के तथा नाक लम्बी व ओंठ मोटे थे। वह घोड़ों की बीमारियों के सैकड़ों इलाज जानता था। वह निजनी में घोड़ा डाक्टर की तरह मशहूर होकर रहने लगा। परन्तु वह पागल हो गया और मर गया। बसन्त के शुरू में ही ज्ञात हो गया था कि अफसर अधिक न चलेगा और एक सुबह को जब वह खिड़की पर बैठा था उसका सिर झूल गया।

'इसी प्रकार वह मरा। मुझे बड़ा दुःख था—मैं उसके लिए रोया भी था। मुझसे वह बहुत घुला मिला था। अपनी भाषा में वह मुझे बहुत बातें बताता। मैं उन्हें समझता न था परन्तु उसकी सहृदयता ने मुझे मोह लिया था। मुझे उसने फ्रेंच पढ़ाना शुरू किया। परन्तु माँ को यह पसन्द न था। फलस्वरूप मुझे पादरी के यहाँ भेज दिया गया और वहाँ मुझे मार पड़ने लगी। बच्चे. उन दिनों हमारे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। उसकी आज तुम कल्पना नहीं कर सकते।'

---

* पूड—चालीस पौंड के लगभग।

अँधेरा बढ़ रहा था। परन्तु नाना की आँखों में बिल्ली की आंखों की चमक थी। अपने बारे में बातें करते समय वह बहुत घमण्ड की बातें करता। और बातों के बीच जब वह कहता।—'अब इसे कभी न भूलना।' तो बड़ी ऊब मालूम होती।

कारण बहुत सी चीजें जिन्हें मैं याद न करना चाहता सो भी याद रखनी पड़ती। परन्तु उन सभी बातों का मेरे दिल पर पूरा प्रभाव रहता था।

उसकी कहानियाँ गप्प न होती—बल्कि बिल्कुल सच्चाई की बातें होती एक बार मैंने पूछा—'बताओ कौन अच्छे हैं—फ्रान्सीसी या रूसी?' इस प्रश्न से जैसे वह ऊब गया था।

'मैं कैसे बताऊँ? मैंने किसी फ्रान्सीसी को घर में नहीं देखा!'

'लेकिन रूसियों को तो देखा है? वे कैसे हैं?'

'कुछ बातों में अच्छे हैं। परन्तु बुद्धिमान कम लोग ही हैं। कुछ तो चूहों की तरह सीधे हैं। चाहे उन्हें जो सिखा दो।'

'क्या रूसी मजबूत भी होते हैं?'

'हमारे बीच कुछ मजबूत लोग भी हैं। परन्तु मजबूत होने से अधिक चतुर होना आवश्यक है। यदि ताकत ही पर बात होती तो ये थोड़े ही हमारे मालिक होते।'

'इन फ्रांसीसियों ने हमसे युद्ध क्यों किया था?'

'युद्ध तो बादशाह का काम है। हम लोग यह नहीं समझ सकते।'

जब मैंने पूछा कि नेपोलियन कैसा आदमी था तो नाना ने बड़े ढङ्ग से कहा, 'एक दुष्ट आदमी। वह सारी दुनिया को जीतने गया था। फिर उसने आदमियों के वर्गों को

खत्म करना चाहा। कोई बादशाह नहीं, सभी बराबर, एकही तरह की हुकूमत, एक ही धर्म। एक दूसरे में नाम के सिवा कोई अन्तर नहीं। बिल्कुल मूर्खता! हमारे शहर में भी नेपोलियन आया था। उसके बारे में मैं फिर कभी बताऊँगा।'

जब भी नाना क्षण भर को चुप होता तो मुझे यों घूर कर देखने लगता जैसे मुझे पहलीबार देख रहा हो। उसकी यह दृष्टि मुझे अच्छी न लगती। अक्सर जब इस तरह की बातें होती रहतीं तो नानी चुपचाप बिना किसी ध्वनि के आ जाती और हम लोग न देख पाते। फिर एकाएक वह कह बैठती,

'क्यों तुम्हें याद है जब हम लोगों ने मरोम की यात्रा की थी। वे दिन भी क्या थे!'

नाना भी आत्मविभोर हो जाता। रुक कर कहता, 'कौन वर्ष था सो तो ठीक नहीं कह सकता! परंतु इतना याद है कि हैजे की महामारी के पूर्व ही का साल था। हम लोग भी जङ्गलों में चले गये थे। वहाँ भी कैदी मिले थे।'

'हाँ ठीक है। हम सभी कितने डरे हुये थे।'

'ठीक है'।

मैंने पूछा कि जंगलों में कैदी क्यों छिपे थे?' नाना इस प्रश्न के लिए तैयार न था। उसने कहा,

'शायद वे जेल के काम नहीं करना चाहते थे जो उन्हें दिये जाते थे।'

'फिर वे पकड़े कैसे गए?'

'उसी तरह जैसे तुम सब खेल खेलते हो। एक भागता था दूसरा पीछा करता था। जब वे पकड़े गये तो उन्हें कोड़ों की

मार पड़ी और माथे पर जलाकर निशान बनाया गया। ताकि सभी जान जायें कि वे कैदी हैं।'

'पर क्यों ?'

'यह कौन जाने ?'

'और याद है वह आग ?' नानी ने कहा।

'कौन सी आग ?' नाना ने पूछा।

फिर एक के बाद एक इस प्रकार वे अपने अतीत को याद करते रहे कि मैं सब भूल गया। उनकी बातों में प्लेग, हैजा, आगजनी, हत्या, मौत, लूटपाट, पागल साधू और जमींदारों की चर्चा थी। इसके बाद नाना ने बहुत भावुक होकर कहा था, 'हम लोगों ने कितना देखा, कितना देख रहे हैं।'

'फिर भी हमारा कोई बुरा जीवन न था। क्यों ?' नानी ने कहा, 'याद है न, वह बसन्त कितना अच्छा था जब बारबरा पैदा हुई थी।'

'वह' ४८ का साल था। जब पादरी आये थे।'

'हाँ फिर वह न दिखाई पड़ा।' नानी ने दुखी होकर कहा।

'बिलकुल ठीक। उसके बाद से ही खुदा ने हम लोगों पर से अपना साया उठा लिया। देखो बारबरा......।'

'बस करो, आगे न कहो।' नानी ने कहा।

'बस के क्या माने ?' नाना फूट पड़ा। 'हमारे बच्चे अच्छे न हुये। उन्हें देखो। हमारी जवानी और ताकत, कहाँ है सब कुछ ? हम लोगों ने इन बच्चों के लिये क्या नहीं किया था ?' कह कर वह उठ बैठा और चारों ओर देख कर अपने ही मुँह पर एक घूँसा मारा और कहा 'इस सब की जिम्मेदार

तू है। केवल तू—चुड़ैल ! तू ने ही उन्हें बरबाद किया। सदा ही तू उनका पक्ष लेती रही है।' कह कर वह रो पड़ा और खुदा को सङ्केत करके बोला, 'खुदा क्या हमारा पाप हमें आराम न देगा ? नहीं तो क्यों·····?'

एक मिनट तक तो नानी चुप रही फिर पास आई। आकर उसने नाना को सांत्वना दी। 'तुम क्यों दुःखी होते हो ? यह सब खुदा का काम है। वह सब जानता है। क्या तुम समझते हो कि दूसरों के बच्चे बहुत अच्छे हैं। अपने चारों ओर देखो। सभी एक जैसे हैं—वही झड़प, कलह, वही सब जगह। हमीं लोग ऐसे नहीं हैं जिन्हें रो रो कर अपना पाप धोना है।'

ऐसे शब्दों से कभी कभी वह शान्त हो जाता। एक बार ऐसे ही जोश में नाना उछला और गिर पड़ा। इस पर नानी ने सम्हाला। पर उसे भी चोट आ गई। ओंठ दबा कर उसने कहा, 'मूर्ख,' और अपना ओंठ इस प्रकार भींचा कि खून गिर पड़ा। नाना से यह न देखा गया और दोनों घूँसे तान कर बोला, 'भाग यहाँ से नहीं तो मार डालूँगा।'

'बेवकूफ !' उसने फिर कहा और जाने लगी। नाना उसके पीछे दौड़ा परन्तु जल्दी से नानी कमरे के बाहर भागी और दरवाजे बन्द कर दिये। नाना दरवाजे तक आया और बोला 'चुड़ैल !'

मैं भट्ठी पर बैठा काँप रहा था, आधा बेहोश मैं जान न पाया कि यह सब क्या हो रहा था। मेरे सामने उस ने नानी पर कभी हाथ भी न उठाया था। उसका यह

व्यवहार मैं न भूल सका। उसका लाल, क्रोध से भरा चेहरा, ओफ़ !

एकाएक वह कमरे के बीच में घुटनों के बल गिर पड़ा, झुका और जमीन पर उसने हाथ रख दिये। फिर कहा, 'ऐ खुदा,......'

चूल्हे पर से उतर कर मैं यों उँगलियों पर भागा जैसे बर्फ पर चल रहा होऊँ। ऊपर के कमरे में नानी अपने मुँह को दबाये खड़ी थी।

'क्या तुम्हें चोट आ गई है ?'

पहले तो उसने नल पर जाकर मुँह साफ किया फिर कहा, 'चिन्ता की बात नहीं। दाँत नहीं टूटा पर ओंठ कट गए हैं।'

'उसने ऐसा क्यों किया ?'

खिड़की की ओर देखकर उसने कहा, 'उसे गुस्सा आ ही गया। वह बहुत बूढ़ा हो गया है न। उसे अब कुछ अच्छा नहीं लगता। अच्छा तुम जाकर सो रहो। प्रार्थना करके यह सब भूल जाना।'

मैं अपने प्रश्न पर जिद करने लगा तो वह चिल्ला उठी, 'मैं तुमसे कुछ कह रही हूं ? फौरन जाकर सो रह।'

फिर वह खिड़की पर बैठ कर अपने ओंठ को रूमाल से दबाने लगी। मैं लगातार उसे देखता रहा। चौकोर खिड़की से दिखते नीले आकाश के तारों के बीच उसका काला सिर दिखता रहा। नीचे गली में खामोशी थी और कमरे में अंधेरा। जब मैं लेट गया तो वह आई मेरे सिर को थपथपाया और कहा, 'गहरी नींद सोना, प्यारे बच्चे।

मैं जरा नीचे उसके पास जा रही हूँ । तू डरना मत । सोना ।'

मुझे चूमकर वह चली गई । मैं बहुत सी चिन्ताओं में पड़ा रहा । परन्तु मैं उस बड़े गर्म और आरामदेह बिछौने, पर न रह सका । उठकर खिड़की पर गया और खामोश सूनी गली में घूरने लगा ।

सात

मुझे यह जानते देर न लगी कि नाना और नानी के भगवान में अंतर है।

कभी कभी सुबह ही बिस्तरे पर बैठकर नानी अपने आश्चर्यजनक बालों में कंघी करती थी। अपने सिर को पीछे से पकड़कर वह टूटे दांतों वाली कंघी करती और मुझे जगाने को पुकारती जाती।

फिर जब बाल ठीक हो जाते तो वह प्रार्थना करती। प्रतिदिन वह नए नए शब्दों के प्रार्थना करती।

'पवित्र, माँ, स्वर्ग की मालकिन! खुदा की मां। आज के दिन मैं किसी का नुकसान न करूँ। अगर मैं कुछ कर भी डालूँ तो क्षमा करना।'

'जेसस क्राइस्ट, खुदा के बेटे। इस पापिन पर दया करना।'

यह प्रार्थनाएँ वह अपेक्षाकृत काफी जल्दी ही समाप्त करती। क्योंकि नाना इंतजार न करता और समय पर खाना न मिलने पर वह नाराज होता था। अक्सर हम लोग पहले ही उठ जाते थे

जब वह ऊपर आता। अगर वह नानी की प्रार्थना सुन लेता तो चा के समय कहता, 'अरे बेवकूफ, मैंने कितनी बार तुझे बताया है कि कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। परन्तु तू अपनी बेवकूफी से बाज नहीं आती। खुदा भी तेरी बात न समझ पाता होगा।'

नानी बहुत विश्वास से कहती, 'जो कुछ हम नहीं कहते वह भी वह समझ लेता है। वह सभी चीजों पर अपनी नजर रखता है।'

'अरे......तू?' यह उसका अन्तिम उत्तर होता।

नानी की स्मृति में दिन भर खुदा उपस्थित रहता। यहाँ तक कि जानवरों से भी वह खुदा की चर्चा करती। उसका खुदा सब पर मेहरबानी रखता—आदमी, कुत्ते, मक्खियाँ, खेत की घास पर भी। पृथ्वी पर की हर चीज उसकी मेहरबानी पर थी।

शराबखाने के मालिक की पत्नी की सफेद बिल्ली, जिसके रोयें बादल की तरह तथा आँखें सुनहरी थीं, ने एक बार बगीचे में शिकार किया। नानी ने मृतप्राय चिड़िया को उठाया और बिल्ली को डांट कर कहा, 'डाइन तुझे खुदा का भी डर नहीं है?'

जब शराबखाने की मालकिन और नौकर चाकर हँसने लगे तो नानी ने कुढ़कर कहा, 'क्या समझते हो कि जानवरों को खुदा का ज्ञान नहीं होता। तुम सब निर्दयी हो। ये लोग तुमसे ज्यादा खुदा से परिचित हैं।'

इसी समय अधर से शब्द निकला।

'क्यों इतनी नाराजगी......?'

उसके स्थान पर थोड़ा सिर हिलाना।

नाना से अधिक खुदा उसकी जीभ पर होते। उसका खुदा मेरे लिये अधिक आसान था। जब वह सदा हमारे

चारों ओर है तब झूठ नहीं बोलना चाहिये । मुझे शर्म लगती। और इसका यह असर हुआ कि मैं नानी से भी झूठ न बोल पाता । मैं समझता था कि इस खुदा से कुछ भी छिपा नहीं है इसलिये कोई बात छिपाने की भी कभी इच्छा न हुई ।

एक दिन मेरी नानी और शराबखाने की मालकिन से झगड़ा हो गया । पहले तो नानी ने झगड़ा बचाया पर उसने नानी पर एक गाजर फेंक दिया । 'तू बेवकूफ है, भली औरत !' नानी ने कहा और क्रोध को बचाती ही रही। परन्तु मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं बदला लेने की सोचने लगा ।

मैं काफी समय तक सोचता रहा कि उस मोटी और लाल सिर वाली औरत से क्या बदला लिया जाय । उसकी बिल्ली की दुम काटी जाय या, कुत्ते को भगा दिया जाय, या मुर्गियों को मार डाला जाए । उसके पीपे खोलकर शराब बहा दी जाए । परन्तु कोई भी योजना मुझे पसन्द न आई । अन्त में मैंने बहुत अच्छा रास्ता चुना उससे बदला लेने का ।

वह विचार बहुत ताजा था । शराबखाने की मालकिन पर मैंने नजर रखी । ज्योंही वह दूकान में गई तो सीढ़ी का दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया फिर भागकर नानी के पास रसोई घर में आया और उसे शान से बताया । सुनते ही वह मुझे मारने को दौड़ी और कहा कि मैं खोज कर चाभी लाऊँ । अन्त में मैंने चाभी लाकर उसे दे दी परन्तु उसका यह अद्भुत व्यवहार समझ में न आया । कोने में खड़े होकर मैं सब देखता रहा कि किस प्रकार मेरे कैदी को नानी ने मुक्ति दी । फिर दोनों—नानी और मालकिन की मित्रता की हँसी भी सुनाई पड़ी ।

'तुम्हें इसके लिये इनाम मिलेगा।' शराबखाने की मालकिन ने मुझे घूँसा दिखाकर कहा। परन्तु इस समय उसके चेहरे पर हँसी थी।

'तूने यह क्या किया ?' मेरी गर्दन पकड़कर ले जाकर नानी ने पूछा।

'उसने तुमपर वह गाजर फेंकी थी।'

'तो यह सब तूने मेरे लिये किया है ? और अब मैं तेरे लिए क्या करूँगी ? मैं तुझे घोड़े वाले चाबुक से पीटूँगी। और चूल्हे के पास बैठाऊँगी। तुझे मालूम है अगर तेरे नाना से कह दूँ तो वह तेरी चमड़ी उधेड़ लेगा।'

उस दिन, दिन भर वह मुझसे न बोली। परन्तु रात को प्रार्थना के पूर्व उसने बहुत गम्भीर मुद्रा बनाकर कहा, 'बेटे, बड़ों के मामले में तू दखल न दिया कर। वे जो कुछ करते हैं उसका हिसाब खुदा के पास रहता है। तुझे बच्चों की तरह ही रहना चाहिये। समय आने पर खुदा तुझे अक्ल देगा कि तुझे किस रास्ते जाकर क्या करना चाहिये। समझे ?' यह तेरे देखने की बात नहीं है कि कौन गलती कर रहा है। खुदा ही देखने वाला है। सजा देना भी उसी का कार्य है। हमारा नहीं।'

सांस लेने भर को ठहर कर, दाईं आँख दबा कर उसने कहा, 'अक्सर खुदा भी नहीं जानता कि किसकी कहां गलती है।'

मुझे आश्चर्य हुआ, 'खुदा कुछ नहीं जानता ?'

'हां वह स्वर्ग में बैठकर हमें रोता कलपता भी तो देखा करता है और कहता है,—मुझे बहुत दुःख है।'

यह कहते कहते वह खुद रो पड़ी और बिना आंसू सुखाये ही कोने में जाकर प्रार्थना करने लगी।

और तब से मैं उसके भगवान के और पास आ गया और मुझे लगा कि मैं उसे और अच्छी तरह समझने लग गया हूं।

पढ़ाई के समय नाना ने भी बताया था कि खुदा सब जानता है, सब देखता है और कष्ट के समय आदमियों की मदद करता है। परन्तु नाना की प्रार्थना दूसरे ढङ्ग की थी। उठकर थोड़ी देर बाद वह प्रार्थना करने जाता। वह अच्छी तरह मुँह धोता, कपड़े पहनता, इतमिनान से कंघी करता और दाढ़ी पर ब्रश फेरता और शीशे में कई बार मुँह देखता फिर टाई ठीक करता, तब कहीं जाकर प्रार्थना की याद आती। वह निष्प्रयोजन आँखों से हर ओर देखता, उसके हाथ बगल में सावधान सिपाही की तरह रहते और वह मुश्किल से एक मिनट झुका रहता। इस बीच वह कई बार अपना शरीर हिलाता डुलाता भी।

तब तक कमरे में नाश्ता की वस्तुओं की सुगन्धि भर जाती। नानी चीज़ें ले आती। सूरज बगीचे से खिड़की की राह झांकने लगता। पेड़ों पर पड़ी ओस मोतियों सी चमकने लगती।

मैं जानता था कि सुबह की प्रार्थनायें कितनी रटी रटाई होती थीं और मैं बहुधा धोखे से ही उस समय वहां जा पाता। उस समय मुझे कंपकंपी का अनुभव होता। जब नाना पूरी तरह समाप्त कर के मेज पर आकर बैठता तब मैं कहता, 'आज एक शब्द तुम भूल गये।'

'नहीं।' नाना कह तो देता परन्तु वह चिन्तित हो जाता।

'हाँ वहाँ तुम्हें कहना चाहिए था······"

'ठीक, ठीक!' कह कर वह शांत बैठ जाता। उसकी आँखों से साफ पता चलता कि वह कितना परेशान हो गया है और उसकी परेशानी में मुझे मजा आता।

एक बार नानी ने उससे कहा था, 'तुम्हारी प्रार्थना से खुदा अब तक ऊब गया होगा। बस एक ही बात को बार बार दुहराते हो।'

'सो कैसे?'

'जो भी सुनती हूं उसमें एक शब्द भी तुम्हारे हृदय से नहीं निकला होता।

गुस्से से कांप कर वह उठा और एक प्लेट नानी के सिर पर फेंकी। और 'अरे तू·········बुढ्ढी डाइन। अब ले।' यों कहता जैसे लकड़ी में आरा चले।

जब भी वह खुदा की कड़ाई पर कुछ कहता तो कहता—जब आदमी पाप करते हैं तब बाढ़ में बहा दिये जाते हैं। फिर दूसरी बार उनके शहर जलाकर नष्ट कर दिये जाते हैं। उसके बाद दुर्भिक्ष तथा महामारी होती है'। उसके लिए खुदा सिर पर लटकती तलवार था। अपनी उँगलियां टेबिल पर पटक कर वह कहता, 'जो भी खुदा के कानून तोड़ता है उसका अंत बुरा होता है।'

खुदा के लिए ऐसी बातें हमारे गले न उतरतीं। और मुझे शक होता कि ऐसा कह कर नाना खुदा से अधिक अपने से डरने को मुझे कहता है। मैं साफ शब्दों में कहता, 'तो यह सब तुम इसलिए कहते हो कि मैं डर जाऊँ और तुम्हारा आज्ञाकारी बन जाऊँ।'

उसी तरह वह भी उत्तर देता, 'हो सकता है पर क्या तुम अवज्ञा का नया तरीका निकाल रहे हो।'

'और नानी की बातें…… ।'

'उस बेवकूफ की मत सुनो।' उसने हुक्म दिया 'वह सदा की गंवार, अनपढ़ है। उसे तर्क करना नहीं आता। ऐसी ही वह अपनी युवावस्था में भी थी। मैं तुम्हें कहूँगा कि उससे इन विषयों पर बातें न किया करो। अच्छा बताओ कितने स्वर्ग दूत होते हैं ?'

मैंने ठीक उत्तर दे दिया फिर पूछा, 'क्या वे सब मिले रहते हैं ?'

'तेरा भी क्या अँखफोड़ों का दिमाग है। यह सब संसारी लोगों की रीतियाँ हैं। उनके अपने कानून हैं ?'

'कैसे कानून ?'

'ओह कानून !' खीझ कर कुछ अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने लगा। 'एक साथ ठीक से रहने के लिए मनुष्यों को समझौता करना पड़ता है कि हमारे लिए अमुक काम ठीक है बस वही बाद में नियम, कानून बन जाता है। जैसे देखो कि बच्चे कोई खेल खेल रहे हों। शुरू करने के पहले ही वे तय कर लेते हैं कि कैसे खेल होगा किस नियम से होगा। इसी तरह कानून भी बनते हैं।'

'सब के मिलने में और कानून से क्या सम्बन्ध है ?'

'यह तेरे समझ से ऊपर की बात है।' अपनी भौहों को नचाकर उसने कहा और बाद में मुझे समझाने को ही कहा, 'आदमी जो भी करता है उसकी पूर्ण योजना खुदा ही बनाता है। आदमी कुछ सोचता है परन्तु खुदा के कारण होता कुछ और ही है। आदमी का काम कुछ नहीं, खुदा ही उसे नाश कर सकता है या धूल में मिला सकता है।'

मेरी उत्सुकता कम तो हुई नहीं। मैंने पूछा, 'तो इसके क्या माने जब मामा जैक कहता है।'

नाना की हथेली फौरन दाढ़ी पर पहुँची और उसने अपनी आँख बन्द कर ली। उसने ओंठ दबाया मानों अपनी हँसी रोक रहा हो।

'तुम्हारे मामा जैक को तो हाथ पाँव बाँध कर पानी में छोड़ देना चाहिए। वह जो कुछ कहता है उसपर तुझे विश्वास नहीं करना चाहिए। पर.... तू!' कह कर उसने बात समाप्त की।

आदमियों की बात करते समय वह सदा ही खुदा का नाम बड़ी श्रद्धा से लेता। नानी की ही तरह वह समझता कि खुदा का हाथ सब जगह है और उसके हर काम पर उसकी निगाह है। मेरी नानी जिन साधुओं को जानती थी वे थे— निकोलाई, यूरी फ्लोरा और लबरा जो गाँव गाँव घूम कर लोगों के दुख सुख में साझा रखते थे। परन्तु नाना के साधु वे लोग थे जो बहुत सजा पाए विद्रोही होते थे।

एक बार नाना ने तेजी से कहा, 'अगर खुदा मेरा मकान अच्छे दामों बिकवा दे तो मैं सेंट निकोलस के नाम पर अच्छा दान देता।'

हँसकर नानी ने मुझसे कहा, 'यह बुड्ढा मूर्ख नहीं तो क्या? जैसे निकोलस को इसके घर बिकवाने की फिकर के अलावा कुछ काम ही नहीं है।'

बहुत दिनों तक मैं एक कैलेन्डर रखे था जिस पर नाना के हाथ के निशान थे। कुछ पवित्र दिनों पर लाल निशान थे और लिखा था 'मेरे अच्छे दिन जिनमें मैं बड़ी मुसीबत से बचा।'

मुझे उस मुसीबत का भी पता है। अपने बेकार के बच्चों के

पालन पोषण के लिए नाना ने लाइसेंस लिए बिना ही सूद का काम करना शुरू किया। किसी ने उसकी शिकायत की और एक रात पुलिस ने तलाशी ली। बड़ा भयंकर समय था परन्तु कुछ बुरा न हुआ। रात भर उसने प्रार्थना की और सुबह नाश्ता के समय उसने यह लाइन लिखी थी।

यह उसकी आदत थी कि रात के खाने के पहले यह स्तुति, भजन की किताबें मेरे सामने बहुत ऊँची आवाज में चिल्ला कर पढ़ता था फिर रात के अँधेरे में वह प्रार्थना करता, महा-राजाओं के महाराज, हमें बुरे विचारों से बचाओ। मुझे दुष्टों से बचाओ। मैं अपने गुनाहों को याद करता हूँ तो मेरे आँसू बहने लगते हैं।'

नाना ही मुझे गिरिजा ले जाता। छुट्टियों में भी। मैं सदा ही यह सोचा करता कि यह किसका खुदा है नाना का या नानी का। मुझे जहाँ तक याद है उस समय मेरे लिए यही सबसे बड़ी परेशानी थी। नाना के खुदा से मुझे भय अधिक लगता था। नाना की सतर्क दृष्टि सदा मुझपर ही जमी रहती। नाना सभी व्यक्ति पर अविश्वास करता तथा दूसरों को सजा देने में सुख का अनुभव करता।

उन दिनों मैं केवल खुदा के विषय में ही सोचा करता। खुदा के विचारों का एक प्रकार से मुझ पर नशा चढ़ा रहता था। हर समय मेरे चारों ओर जैसे खुदा ही छाए रहते। खुदा यानी नानी का खुदा मुझे अच्छा लगता। मेरे हर खेल में मुझे वह साथी मालूम देता। अतः स्वाभाविक तौर पर मैं इस बात से झुंझलाया करता अच्छा क्यों नहीं है।

गलियों में दौड़ना मेरे लिए मना था। क्योंकि मैं उसके लिए बुरी तरह पागल था। और इससे हमारे भीतर जो प्रतिक्रिया होती वह बहुत अजीब थी! और इसका अन्त भी एक दिलचस्प घटना से हुआ। मैंने किसी को अपना मित्र न बनाया। पड़ोसी बच्चे मुझसे शत्रुता का ही व्यवहार करते। मैं कैशिरीन कहलाना पसन्द न करता। और वे ऐसे शैतान लड़के थे कि मुझे देखते ही चीखने लगते—'वह रहा कैशिरीन .....पकड़ो।' और लड़ाई शुरू हो जाती।

अपनी उस छोटी उम्र में भी मैं घूँसेबाजी करना खूब जानता था। यह सभी को मालूम था इसलिए वे बाल शत्रु मुझसे कभी अकेले न लड़ते। सदा ही एक भीड़ लेकर आते और मैं पिट कर घर वापस आता, सदा ही नाक पर खरोंच, फूले हुए होंठ, चेहरे पर तमाम निशान, फटे कपड़े और धूल धुसरित।

'अब क्या हो गया?' हल्की सहानुभूति के बीच शोर करके नानी पूछती। 'अरे दुष्ट! आखिर तुझे हुआ क्या है?' और मेरे घाव पोंछते और मुँह धोते हुए कहती, 'आखिर यह लड़ाई क्यों होती है? घर पर तो तू इतना गम्भीर और सीधा रहता है कि क्या कहना परन्तु तुझे तनिक बाहर तो जाने दूँ, पता नहीं तू क्या हो जाता है। कितने शर्म की बात है! मैं नाना से कह कर तेरा बाहर जाना बन्द करा दूँगी।'

लेकिन यह सब देख कर नाना कभी क्रुद्ध नहीं हुआ बल्कि उसने कहा, 'फिर से सज आए। यह तुम्हारे तमगे हैं? पर, ऐ बालबहादुर देख, तुझे मैं इस तरह गली में घूमता न पाऊँ? समझे?'

जब गली खाली या सूनी होती तो मेरे लिए तनिक भी आकर्षण न होता। परन्तु ज्योंही मैं बच्चों की खुशी की आवाज सुनता कि नाना की आज्ञा फौरन भूल जाता और आँगन से भाग खड़ा होता। मुझे उनसे झगड़े में मिले घूसें बुरे न लगते परन्तु उनका मजाक मुझे बुरा लगता। उनके झगड़े का तो मैं अभ्यस्त होगया था। उस समय तो मेरे क्रोध का ठिकाना न रहता जब मैं देखता कि वे बच्चे मुर्गियों और कुत्तों को सताते, बिल्लियों को मारते, यहूदियों की बकरियाँ खोल कर भगा देते। निरीह गदहों को तंग करते, मारते और चिल्लाते, 'इगोशा, उसके जेब में ही मौत है।'

इगोशा एक बहुत लम्बा था, लड़का नहीं आदमी! उसके हल्की सी दाढी थी। उसका रंग काला जैसे भुना हुआ गोश्त! वह एक भेड़ के खाल की जैकेट पहने गली में आने जाने वालों को बड़ी खाली निगाह से देखा करता। या तो उसकी आँखें जमीन पर ही गड़ी रहती। उसके काले, निरीह चेहरे व दुखी आँखों ने मेरे मन में उसके लिए श्रद्धा उपजा दी। मैं समझने लगा कि यह आदमी किसी बड़े खास काम में लगा रहता है अतः इसे छेड़ना न चाहिए।

परन्तु लड़के हमेशा ही उसके पीछे दौड़ते और उसकी पीठ पर ढेले फेंकते। अक्सर तो वह अनजान बना रहता मानों उसके चोट ही न लगती हो। फिर वह चलता हुआ रुक जाता, अपना सिर उठाता अपनी टोपी ठीक करता मानों अभी अभी वह सोकर उठा हो।

बस फौरन ही बच्चे चिल्ला उठते, 'इगोशा, जेब में मौत है। तुम कहाँ जा रहे हो, इगोशा? देखो, तुम्हारे जेब में मौत है।'

पहले तो वह अपनी जेबों में हाथ डाले रहता फिर झुक कर ढेला, पत्थर या मिट्टी का टुकड़ा उठाकर हाथ ऊँचा करता, उन्हें कोसता परन्तु बहुत थोड़े और रटे हुए शब्दों में। उन लड़कों के पास उससे अधिक गालियाँ होतीं। जब वह उन्हें दौड़ाता तो उसकी जैकेट रास्ते में गिर पड़ती और जब उसे उठाने को वह झुकता तो उसके पतले पतले हाथ यों लगते जैसे किसी पेड़ की दो सूखी टहनियाँ।

तब तकबगलों से पीछे से बच्चे उसपर ढेले की बरसात मचा देते और उसपर धूल छोड़ देना तो सबसे बड़ी बहादुरी होती।

इससे भी अधिक दर्दनाक होता जब मैं ग्रेगरी को देखता। ग्रेगरी—पुराना दूकान का नौकर। अब भी देखने में सीधा और सुन्दर परन्तु अब बिल्कुल अन्धा होगया था। अब घूम घूम कर भीख माँगा करता। एक छोटे कद की भूरा लड़की उसका हाथ पकड़ कर चलती। वह किसी भी खिड़की के नीचे बिना ऊपर देखे रुक जाती और माँगना शुरू करती—'गरीब अन्धे के लिए कुछ.....खुदा के नाम पर!'

ग्रेगरी खुद कभी न बोलता। उसके ओंठ कस कर चिपके होते। उसकी दाढ़ी खूब फैली होती और हाथ भी बंधे होते। दिवालों की खिड़कियों पर उसकी आँखें काले चश्मे के नीचे सीधी देखती होतीं। मैं उसे अक्सर देखता परन्तु उसके चिपके ओंठ कभी कुछ न बोलते। उसकी इस खामोशी का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता। मैं कभी अपने को उसके पास नहीं लेजाता परन्तु उसे देखते ही मैं दौड़ कर नानी के पास जाता और कहता, 'ग्रेगरी गली में है।'

'क्या, कहाँ है?' उत्सुकता से वह पूछती, 'जा उसे यह दे दे।'

ऊब कर मैं इन्कार कर देता तो वह खुद जाती और उसके साथी काफी समय बिताती। ग्रेगरी हँसता, दाढ़ी हिलाता, परन्तु जो भी कहता उसे दुहराना मुश्किल है। कभी कभी नानी उसे रसोंई घर में बुला लेती और कुछ खाना देती। ग्रेगरी सदा ही मेरे बारे में पूछता। नानी मुझे पुकारती परन्तु मैं आँगन में छिपा खड़ा रहता। मैं जाने क्यों उसके सामने न जा पाता। उसे देखकर मेरा जी भर आता और मैं एक संकट में पड़ जाथा। मैं जानता हूं कि इसी प्रकार का कराह नानी को भी होता था। केवल एक बार इस बिषय पर बात हुई थी जब ग्रेगरी को दरवाजे तक पहुँचा कर वह वापस आगई। उसका मुंह लटका था, आँखों में आँसू थे। मैंने उसका हाथ पकड़ा। उसने पूछा,

'तू उससे कतराता क्यों है? कितना अच्छा है वह। और तुझे बहुत प्यार करता है।'

'नाना ने उसे क्यों निकाल दिया?'

'तेरा नाना!' उसने बड़ी कठिनाई से कहा, 'जान ले जो मैं कह रही हूं—इसके लिये खुदा हम सबों को सजा देगा। खुदा की सजा······।'

और उसके शब्द गलत न थे। जब दस वर्ष बाद नानी मर गई तब नाना को खुद भिखारी बन कर गली गली घूमना पड़ा उसका दिमाग खराब हो गया था खिड़कियों के नीचे से वह गिड़गिड़ाता, 'रसोंई घर के लोग दया करके चाहे मांस का ही एक टुकड़ा दे दो······लेकिन······तू······।'

इगोशा और ग्रेगरी के अलावा एक स्त्री भी थी जिसका नाम था—वोरोन्का। जिसे देखकर ही मैं भाग जाता! हर इतवार को वह अजीब भयानक, शराबियों की सी शक्ल

बना लेती। वह इस प्रकार चलती जैसे हवा में उड़ रही हो और जमीन पर उसके पांव न हों। जब वह आती तो लोग सहन में छिप जाते। सड़क पर खामोशी छा जाती। कभी कभी नीले गुब्बारे की तरह मुँह फुला कर वह कहती,

'कहां हैं मेरे बच्चे, मेरे बच्चे!'

मैंने नाना से पूछा कि वह क्या चिल्लाती है।

'तुम्हारे जानने के लिये यह नहीं है।' उसने पहले कहा फिर समझाया कि शायद उस औरत का पति वोरोनोव फौजी अफसर था। अपने ओहदे की वृद्धि के लिए उसने अपनी पत्नी को एक बड़े अफसर के हाथ बेच दिया था जो उसे लेकर दो वर्ष तक बाहर रहा। जब वह वापस आई तो उसके दो बच्चे, एक लड़का व एक लड़की मर चुके थे। उसका पति भी जेल में था, शायद उसने कुछ सरकारी रुपया हड़प कर खर्च कर दिया था। अपने दुखों से ऊब कर उसने शराब पीना शुरू किया जिससे उसकी यह दशा हो गई और अब गली में शोर करती चलती है। प्रति रविवार को उसे पुलिस पकड़ लेती है।'

गलियों से तो घर ही अच्छा था। मेरा दिन का सब से अच्छा समय वह होता जब दोपहर का खाना खाकर नाना मामा जैक के कारखाने में चला जाता और खिड़की पर बैठ कर नानी परियों की और मेरे बाप की कहानियां कहती।

नानी ने जिस मैना को बिल्ली से बचाया था उसका टूटा डैना काट कर पांवों में लकड़ियाँ बाँध दिया था। नाना ने उसे चलना सिखाया था। नानी काफी देर तक

पिंजड़े के सामने खड़ी रहती। और बार बार वही शब्द दुह-राती जो उस चिड़िया को सिखा रही थी।

'प्यारी मैना कहो, तुम्हें कुछ सिखाऊँ।'

मैना अपनी छोटी छोटी आँखें नचाती। और लकड़ी के पांवों पर सीधी खड़ी होकर गर्दन निकाल लेती और सीटी बजाती या कूकती या भूँकती, जाने किस प्रकार की आवाज पैदा करती।

'बस कर!' नानी चीख पड़ती। 'ऐसे कह, कुछ खाना चाहिये।'

फिर वह मैना कुछ अच्छी आवाज करती और नानी को हँसी आ जाती। 'बड़ी चतुर है। अगर चाहे तो कह सकती है।'

और धीरे धीरे उसे उसने बोलना सिखा दिया। थोड़े दिनों में वह मैना इतना सीख गई कि नानी को देखते ही कह उठती, 'नमस्कार!'

पहले उसे नाना के कमरे में टांगा गया। परन्तु शीघ्र ही नाना ने उसे निकाल कर हम लोगों के कमरे में भेज दिया क्योंकि बहुत शीघ्र ही वह नाना के प्रार्थना की नकल उतारने लगी,

'खुदा,......तुम......तु......म।'

और उस दिन प्रार्थना के पूर्व ही नाना चीख उठा, 'यदि इसे तुम अब यहाँ से नहीं ले जाती तो मैं मार डालूँगा।'

मेरे घर में इस प्रकार काफी दिलचस्प चीजें थी। परन्तु मेरा मन सदा भारी रहता। लगता जैसे कोई भारी बोझ मुझे दबा रहा है। मैं अपने को अर्द्ध जीवित सा ही अनुभव करता।

आठ

अचानक नाना ने वह मकान उसी शराबखाने के मालिक के हाथ बेच दिया और कनातराई स्ट्रीट पर दूसरा खरीदा। यहां तो दीवाल की ऊँचाई की घास थी परन्तु वातावरण शांत था। खेतों की ओर की पंक्ति में यह सब से अंत का मकान था और सब से अलग रंग में पुता था।

अपना नया मकान छोटा और सुन्दर था। बाहर का रंग गहरा लाल था और नीचे की तीन खिड़कियां, आसमानी नीले रंग से पुती थीं। बगीचे में भी रास्ते बने थे। जैसे खास तौर से खेलने और छिपने के लिए बनाया गया हो। बगीचा खास तौर से बहुत प्यारा था। बड़ा तो नहीं था परन्तु पेड़ पौधे अच्छे थे। एक कोने में छोटा सा स्थान गृह ऐसा लगता जैसे घरौंदे की झोपड़ी। एक ओर बगीचे के काउन्ट और तीनों कोच का अस्तबल था। दूसरी ओर कुछ कमरे बने थे नौकरों के रहने के। और बिलकुल किनारे पर एक महिला का मकान था जिसका नाम पेत्रोवना था और जो एक दुग्धशाला की मालकिन थी। वह बहुत मोटी, लाल चेहरे वाली थी। उसका छोटा

सा मकान कुछ अँधेरा सा रहता था। इसकी दो खिड़कियां खेत की ओर थीं। दिन भर खेत में सिपाही परेड करते थे। सूर्य की रोशनी में उनकी बंदूकें खूब चमकतीं।

उस मकान में जो लोग रहते वे मुझे बड़े निराले दिखते। उसमें एक गोल मटोल तातार फौजी रहता था जिसकी औरत बहुत चिल्ला कर बोलती तथा दिन भर गिटार पर ऊँचे स्वर में गाती रहती। उसके बहुत प्रिय गाने का भावार्थ था कि अगर तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें छोड़ दे तो हिम्मत मत छोड़ो और दूसरी लड़कियों को खोजो। खिड़की पर उसका पति जिसके ओंठ नीले थे और लाल आंखें चारों ओर भटकती रहतीं बैठता। उसका पाइप दिखाई पड़ता और बहुत कर के वह कई बार खांसता जिससे करीब इस प्रकार की आवाज होती, 'वख, वख।'

अस्तबल के ऊपर अच्छे कमरे में रहने वाला बहुत लम्बा तातार था जिसका नाम वाली था। जो जिसी अफसर का अर्दली था और दो व्यक्ति जिसमें एक चाचा पीटर और उसका गूँगा भतीजा स्टेफेन, जो हसोड़ था और उसका चेहरा मुझे तांबे की तश्तरी सा लगता था। वह सभी मेरे लिए अजीब और पूर्णतया अपरिचित थे। रसोई से लगे हुए कमरे में जो रहता था उसका उपनाम था 'भलेमानस' उसके कमरे में दो खिड़कियां थी एक तो आंगन में खुलती थी दूसरी बाग में। वह सदा चश्मे से अपनी आंखें छुपाए रहता, और उसके चेहरे पर दाढ़ी बढ़ी हुई थी। वह काफी शर्मीला और सूक्ष्मभाषी था। चा या खाने पर बुलाए जाने पर कहा करता, 'क्या बढ़िया विचार है।' और नानी ने उसका नाम उसी विचार से जोड़ दिया। वह कहती, 'अलेकसी जा 'भलेमानस' को बुला ला।' या 'भलेमानस' तुमने तो प्लेट में कुछ छुआ भी नहीं।'

उस पूरे कमरे की दीवारों पर अलमारियां थीं। जो मोटी मोटी भद्दी किताबों से भरी थीं, यद्यपि पुस्तकें रूसी भाषा की ही थीं। अलग अलग रंग की अनेक बोतलें थीं तथा, लोहे, तांबे और सीसे की छड़े थीं। सारे दिन लाल चमड़े की जैकेट तथा बुरी लगने वाली धारियों का पाजामा पहने वह छड़ों में कुछ फूँकता रहता। कुछ नापता रहता, कुछ तौलता रहता, परन्तु सभी जैसे बेकार क्योंकि अन्त में ऊब कर सब बन्द कर देता। अक्सर वह कोई बड़ा सा लिखा हुआ कागज दिवाल पर टांग देता और रङ्गीन शीशे द्वारा उससे आंख लगा कर कुछ पढ़ता कि उसकी लम्बी नाक भी कागज में छू जाती। फिर उससे ऊब कर भी वह खिड़की पर चला जाता, उसका सिर उठा रहता, आंखें बन्द रहतीं।

मैं छत पर चढ़कर उसकी खुली खिड़की से भीतर देखा करता। उसकी मेज पर जलती आग और नीली लपटों को मैं देखता। वह अपनी नोट बुक में कुछ लिखता हुआ छाया सा लगता, उसका नीला चश्मा बर्फ की तरह चमकता। कभी कभी खिड़की पर आकर वह यों अचल खड़ा हो जाता जैसे फ्रेम में कोई चित्र। उसकी आँखें हमारी छत पर जमी रहतीं और उसके हाथ पीछे रहते। यद्यपि वह मेरी उपस्थिति से पूरी तरह अनभिज्ञ होता। फिर अचानक वह अपनी मेज पर वापस चला जाता और उस पर इस प्रकार झुक कर अपने काम में लग जाता जैसे दोहरा हो गया हो।

यदि वह अच्छे कपड़े पहनता व ठाठ से रहता तो हमें डर ही लगता परन्तु उसके कोट, कमीज, गन्दे होते और अनेक पैबन्द वाले उसके पैन्ट और खुले पाँवों में चप्पल तो बिल्कुल नाममात्र की होती। वह बिल्कुल गरीब

था इससे हमें किसी बात का खतरा न था। यह भी मेरी नानी की मुझे एक देन थी कि गरीबों के प्रति मुझमें काफी दया उपजाती थी।

'भलेमानस' के कोई मित्र न था, बल्कि उस घर के सभी रहने वाले उस पर हंसते थे। उस अफसर की छोटी सी बीबी तो उसे 'चाक नाक वाला' कहती थी। चाचा पीटर ने उसका नाम रखा था, पंसारी या बाजीगर। और नाना कहता—वह टोना करता है, राजमिस्त्री सा लगता है।

मैंने नाना से पूछा, 'वह क्या करता है।'

'चुप रहो, यह तुम्हारा काम नहीं।'

एक दिन मैं उसकी खिड़की तक गया। और पूछा, 'तुम क्या करते हो?' उसने मुझे चश्मे की डंडी के ऊपर से देखा। मुझे अपने हाथों से सहारा देकर उठाया—उसके हाथ में जलने के बहुत से निशान थे। उसने कहा, 'चढ़ आओ।'

उसने मुझे दरवाजे से न बुलाकर खिड़की से ही बुलाया इससे मेरे मन में उसके प्रति श्रद्धा अधिक बढ़ गई। वह एक काबे पर बैठ गया और मुझे सामने खड़ा करके पूछा, 'कहां से आये हो?'

यह कहना बुरा लगता कि मैं उसके रसोई घर वाला पड़ोसी था सो कहा, 'मैं मकान मालिक का नाती हूं।'

'अच्छा तो तुम्ही हो।' अपने हाथों को देखकर उसने कहा।

उसने केवल इतना ही कहा, इसलिए मैंने बताने की आवश्यकता समझी, 'लेकिन मैं काशारिन नहीं हूं। मेरा नाम पेशकोव है।'

'पेशाकोव ?' आश्चर्य में डूब कर उसने पूछा, 'बहुत अच्छे।'

वह उठा और मुझे पुचकार कर मेज के पास गया, 'बैठा चुपचाप।' मैं बहुत देर तक बैठा देखता रहा। वह किसी चीज में तांबा भरता था फिर एक प्रेस में यों दबाता था कि वह सोने की बूँद की तरह वह गिरता था—नीचे एक दफ्ती का टुकड़ा पड़ा था। फिर अपनी हथेली पर रख कर उसमें सफेद पावडर जैसी कोई चीज मिलाता था। फिर एक प्लेट में रखकर काले बोतल से कोई तरल पदार्थ मिलाता। जिसके मिलाते ही सब धुआँ बनकर उड़ गया और एक अजीब सी गन्ध कमरे में भर गई कि मैं बुरी तरह खांसने लगा।

'बड़ी दुर्गन्धि है, क्या ?' उस बाजीगर ने तनिक घमंड से पूछा।

'हाँ।'

'लेकिन ठीक है। इसके माने कि मेरा काम ठीक हुआ है। मेरे बेटे।'

मैं समझ न पाया कि वह क्या बना रहा था। मैंने जोर से पूछा, 'इतनी दुर्गन्धि और ठीक कैसे हो सकता है ?'

'ऐसा मत कहो।' अपनी आँखें चमका कर उसने कहा, 'हमेशा ऐसा नहीं होता। क्या तुम उँगली के खेल जानते हो ?'

'हाँ।'

'तो मेरे साथ खेलो।'

'अच्छा आओ।'

'वह मेरे पास आया और धुयें वाला बर्तन उसके हाथ में था। धुएँ से उसने अपनी एक आँख बन्द कर ली थी। फिर

दूसरे आँख से देखकर उसने कहा, 'लेकिन वायदा करो कि अब तुम यहाँ न आओगे।'

मुझे बहुत बुरा लगा।

तुम मुझे फिर यहाँ न देखोगे।' क्रोध में मैंने कहा और बागीचे में कूद गया। वहाँ नाना एक सेब के वृक्ष के पास काम कर रहा था। उसने कैंची मुझे दे दी। कहा, जा रसभरी (मकोइया) की झाड़ी छाँट दे।'

'वह 'भलमानुस' क्या किया करता है ?' मैंने पूछा।

'क्या करता है ? सिर्फ कमरे को बरबाद कर रहा है। सारी छत जल कर काली हो गई है। परदों पर दाग ही दाग हैं। मैं तो उससे कहने वाला हूँ कि कहीं और चला जाए।'

'हाँ ठीक !' रसभरी की सूखी टहनियाँ काटते हुये मैंने कहा। 'उससे यह कहना चाहिये।'

बरसाती शाम को यदि नाना कहीं चला जाता तो नानी खुश होकर रसोईघर में सभी किरायेदारों व पड़ोसियों को बुला कर चा की दावत करती। वह अर्दली, मोटी औरत, पेत्रोवना कभी कभी वह तातार और उसकी प्यारी सी छोटी बीवी सभी आते और वह भलामानुस आता जो कोने में चूल्हे के पास खामोश बैठता। तातार अर्दली और गूँगे स्तेपेन के बीच ताश का खेल चलता।

चचा पीटर अपने साथ एक डबल रोटी लाता और उसे काट कर रख देता फिर झुक झुक कर सबों को एक एक देता व कहता, 'कृपा कीजिए।' फिर रोटी बांटने के बाद सब पर दो दो बूँद जाम रखता।

पेत्रोवना का भाग होता ब्रांडी। इस प्रकार सभी के संतोष के लिए वस्तुयें आ जातीं।

उस दिन जब 'भलेमानस' ने मुझे अलग किया था उसी के ठीक बाद ही नानी ने एक ऐसी ही दावत की। बाहर बसंत की ठंडी हवा चल रही थी। घर में तनिक गरमी थी। सभी मेहमान काफी पास पास सट कर बैठे थे। नानी चूल्हे के किनारे पर बैठी। वहां बैठने से छोटे से लैम्प की तेज रोशनी अधिकांश उसी के मुँह पर पड़ती थी। यह उसकी बहुत प्यारी जगह थी जहाँ बैठकर वह कहानियाँ कहती थी। 'जब मैं चारों ओर देखती हूँ तो शब्द अपने आप आने लगते हैं।'

मैं उसके पांव से लग कर बैठा ताकि ऊँचाई में 'भलेमानुस' को दिखूँ। नानी बहादुर इवान तथा योगी मिरोन की बातें कर रही थी।

'एक समय की बात है, गारड़िओन नाम का एक बहुत बुरा आदमी रहता था। उसका दिल बहुत काला था, बिल्कुल पत्थर सा और वह सचाई का तो शत्रु ही था। लोगों को सताकर और जंजीर में बांध कर वह बहुत कष्ट दिया करता था। वह एक ऐसा उल्लू था जो पेड़ पर से गिर पड़ा था। वह अपने गुनाहों के बीच भी खुश रहता था। सभी लोग डर व घृणा से उससे दूर ही रहते थे। लेकिन एक बहुत जन प्रिय व्यक्ति योगी मिरोन ने उसे छेड़ा।'

'मिरोन की मौत की योजना बनाकर उसने अपने एक विश्वासपात्र बहादुर ईवान को उसे मार डालने की आज्ञा दी। यद्यपि मिरोन केवल बेकसूर ही नहीं था बल्कि वह निहत्था भी था। गारडिओन ने कहा, 'ईवान, वह योगी मेरे रहते फिर न रह पाए। अब समय आ गया है कि वह संसार को अन्तिम प्रणाम करे, वह बहुत रह चुका। जाओ और उसकी भूरी दाढ़ी पकड़कर उसका सिर मेरे पास लाओ जिससे इतने बुजदिलों

को डरा रखा है। यह सिर जो मेरे खिलाफ उठा था अब मेरे भूखे कुत्तों का भोजन बनेगा।'

'ईवान आज्ञाकारी की तरह वह काम करने गया पर मन ही मन सोचता रहा—इस हत्या का सारा पाप मुझ पर ही आएगा। मैं ही तो उसकी आज्ञा से मारने जा रहा हूँ। परन्तु एक शब्द भी वह प्रत्यक्ष न कह सका। ताकि यह कोई न जाने कि उसके मन में क्या हो रहा है। आश्रम में आकर उसने प्रणाम किया। 'मैं आपके स्वास्थ की कामना करता हूं। पिता, मुझे आशीर्वाद दो। खुदा तुम्हें मदद देगा।'

'योगी ने हँस कर प्यार से कहा, 'ईवान झूठ मत बोलो। तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते। अब तुम जान जाओगे कि खुदा सब जानता है। और कोई भी अच्छा या बुरा काम बिना उसकी इच्छा के नहीं हो सकता। देखो, मैं ही जानता हूँ कि तुम्हारे यहां आने का क्या तात्पर्य है।

'योगी के सामने शर्म से सिर झुकाए ईवान खड़ा रहा। जिसकी वह हत्या करने आया था उसी के सामने कांपने लगा। उसने उसकी तलवार को चमड़े की मियान से खींच लिया और जब तक वह पूरी तरह चमक न गई उसे रगड़ता रहा। तब उसने कहा, 'मैं चाहता था कि तुम्हारी प्रार्थना के पूर्व ही तुम्हें मार डालूँ। परन्तु अब नहीं हो सकता। अब तुम प्रार्थना कर लो, जितनी देर तक भी चाहो। अपने लिए, मेरे लिए, दुनिया के सभी लोगों के लिए और आगे पैदा होने वाले सभी लोगों के लिए भी।'

'एक वृक्ष के नीचे बैरागी झुका और वृक्ष उस पर झुक गया। हँसकर उसने ईवान से कहा, 'ईवान, फिर से सोच लो। कब तक प्रार्थना करूँगा मैं नहीं कह सकता। लेकिन तुम मुझे अभी ही मार डालो। खतरा मत उठाओ?'

'ईवान ने ऊब कर कहा, 'मैं अपने वचन रखूँगा। तुम एक शताब्दि तक प्रार्थना करोगे तो भी मैं यहां इन्तजार करता रहूंगा। तुम शांति से प्रार्थना करो। अपने दिमाग को परेशान मत करो।'

'प्रार्थना करते करते धुंधलका छा गया। फिर रात, दिन और फिर रात तक वह प्रार्थना करता रहा। फिर सुनहली गर्मी, काला जाड़ा तक। फिर साल के बाद साल तक। परन्तु ईवान ने बाधा न डाली। वह वृक्ष बढ़ कर आकाश छूने लगा। वृक्ष के आस पास जंगल उग आए फिर भी प्रार्थना चलती रही। और आज तक चल रही है।'

'और ईवान उसके पास खड़ा है। उसकी तलवार पर धूल जम गई है। उसके कपड़े चिथड़े होकर गिर पड़े हैं, वह नग्न हो गया है। कपड़े की जगह उसके शरीर पर कीचड़ व धूल की पर्त जम गई है। गर्मी से वह जल चुका है। उसे देख कर भेड़िए और भालू भी भाग जाते हैं। उसे अपनी जगह से हिलने की शक्ति नहीं है—न वह हाथ उठा सकता है न एक शब्द भी बोल पाता है। उसकी इस दर्दनाक कहानी से हमें सबक लेना चाहिए। हमें पाप न करने चाहिए।'

'हम पापियों के लिए वह वैरागी अब भी प्रार्थना करता है।'

इसके पहले कि नानी समाप्त करती 'भलेमानुस' विरोध कर उठा। अपना चश्मा उतार कर अपनी आंखें रगड़ीं। फिर आवाज़ की 'हूश'''''!' और जब नानी ने कहानी समाप्त की और अपने पसीने से तर चेहरे को पोंछ रही थी कि वह हाथ उठाकर चीख पड़ा, 'बहुत अच्छे! मैं सोचता था कि अगर तुम इसे लिख डालतीं। कितना सच''''' हमारा''''''।'

हम लोगों ने देखा कि वह रो रहा था और आंसू पार की

तरह बह रहे थे—बड़ा दर्दनाक दृश्य था। आंखों का चश्मा नाक पर उतर आया था। कान पर की कमानी भी खिसक गई थी। केवल पीटर हँस रहा था बाकी सभी लोग धर्म संकट में पड़े से चुपचाप बैठे थे।

'अगर तू चाहे तो लिख डाल।' नानी ने कहा, 'मुझे इस तरह की बहुत सी याद हैं।'

'नहीं, सिर्फ यही।' भलामानुस ने कहा। 'जब हमें पाप करने को कहा जाए तो हमें खामोश और दृढ़ रहना चाहिये। क्या सचाई है।'

फिर एकाएक उसकी आवाज थम गई। उसने खामोश निगाहों से चारों ओर देखा। और एक गुनाहगार की तरह सिर झुकाये हुए कमरे से बाहर हो गया। सभी हँस पड़े और अर्थभरी दृष्टि से एक दूसरे को देखने लगे। नानी अँधेरे में झुकी। हम लोग उसकी हँसी भी सुन रहे थे।

अपने लाल ओंठ हिला कर पेत्तोनवा ने कहा, 'अजीब है।'

'असाधारण!' चचा पीटर ने कहा, 'सदा ऐसा ही रहता है।'

'बेचारा कुँवारा है।' वेली ने कहा और सभी अट्टहास कर उठे। परन्तु तनिक गम्भीर होकर चाचा पीटर ने कहा, 'वह सचमुच रो रहा था।'

उनके कटाक्षों से मैं तनिक बिगड़ा। क्योंकि इस घटना से मेरे मन पर कुछ प्रभाव पड़ा। उसकी गीली आँखें मुझे याद हैं।

उस रात वह घर से चला गया और दूसरे दिन रात को लज्जित सा वापस आया! आकर नानी से बोला, 'कल वाली घटना के लिए मुझसे नाराज तो नहीं हो?

'मुझे क्यों नाराज़ होना है ?'

'क्योंकि मैंने उत्सव में विघ्न डाला था।'

'किसी ने भी बुरा नहीं माना।'

परन्तु मैंने अनुभव किया कि नानी के मन में कुछ उथल पुथल थी। उसने आँखें न मिलाईं और बचा कर बातें कीं।

वह उसके बहुत पास आ गया। और आश्चर्य से बोला, 'यह मेरे घर का एकान्त भयानक है। जब मैं बन्द कमरे में अकेला होता हूँ तो मेरी आत्मा मुझसे अलग होने लगती है और जैसे मैं पत्थरों और वृक्षों से बातें करने को उतावला हो उठता हूँ।'

नानी उससे दूर खिसकी और कहा, 'अगर तुम्हारे पत्नी होती ?'

'क्या ?' उसने पूछा। उसका हाथ हवा में उठा। उसका चेहरा फक हो गया और वह भाग गया। नानी उसे देखती रही फिर सुँघनी सूँघ कर मुझसे कहा, 'सुन रहा है, इससे सदा दूर रहना। जाने कैसा आदमी है।'

इसके बाद उसके प्रति मेरे मन में फिर एक बार आकर्षण बढ़ा। मैंने उसके चेहरे की आकृति में परिवर्तन देखा था जब उसने कहा था, 'एकान्त भयानक।' इन शब्दों से मेरे मन में उसके प्रति सहानुभूति की उत्पत्ति हुई।

दूर खड़ा होकर मैं उसकी खिड़की की ओर देखता रहा। वह नहीं था और खाली कमरा सुनसान था। मैं बाग में गया, वहाँ वह था। वह गेट के किनारे पर खड़ा था। सिर के पीछे हाथ किए वह झुका कुछ देख रहा था। उसने मुझे नहीं देखा। परन्तु घूमती हुई उसकी दृष्टि जब मुझ तक

आई तो मुझसे उसने पूछा, 'क्या मुझसे कुछ चाहते हो ?'

'नहीं ।'

'तब यहाँ क्या कर रहे हो ?'

'कुछ नहीं ।'

उसने अपना चश्मा उतार लिया । अपने लाल व काले रङ्ग के रूमाल से उसे रगड़ा फिर पुकार उठा । 'अच्छा इधर बढ़ आओ ।'

जब मैं उसके सामने गया तो उसने कहा, 'तुम चुपचाप बैठो । चुपचाप । सब ठीक है न ! तुम बहुत धूर्त और हठीले हो ?'

'हाँ ।'

'वाह बहुत खूब !'

फिर एक लम्बा सन्नाटा रहा । शाम भी बहुत उदास व खामोश थी । वह पूछ रहा था, 'बच्चे ! क्या तुम्हें तनिक भी सर्दी नहीं लग रही है ।'

जब आकाश में बादल आ गये और हर ओर अंधेरा छा गया तो उसने कहा, 'बेकार है । अब हमें भीतर चलना चाहिये ।' फिर आगे आगे चलकर बाग के दरवाजे पर रुक गया और बहुत धीरे से बोला, 'तेरी नानी अजीब औरत है । बिल्कुल मोलो की तरह ।' फिर आँखें बन्द करके मुस्कुराहट के बीच उसने बहुत धीरे से कहा, उसकी कड़ुई जिन्दगी से हमें शिक्षा लेनी चाहिये और पाप की ओर से सतर्क रहना चाहिए । इसे सदा याद रखना ।'

और ज्योंही मैं बढ़ा कि उसने पूछा, 'क्या तुम लिखना जानते हो ?'

'नहीं ।'

'सीख लो बच्चे। ताकि अपनी नानी की कहानियाँ लिख लो। कभी यह बड़े काम की होगी।'

और इस तरह हमारी मित्रता बढ़ी। इसके बाद जब भी जी चाहता मैं भलेमानस के पास चला जाता। मैं दूर किसी ऊँचाई पर बैठकर नलियों द्वारा उसका फूँकना तथा तांबे को धुआँ बनाकर उड़ाना और लोहे की छोटी हथौड़ी द्वारा पीटना देखता। फिर बहुत महीन दाँतों वाली छोटी सी आरी से कटाई, या नाप तौल—वह सब कुछ तौलता—फिर धुआँ उठाकर कमरे भर में भर देता।

'अब तुम क्या कर रहे हो?'

'बच्चे, कुछ बना रहा हूं।

'क्या?'

'तुम्हें बताना कठिन है। तुम समझ भी नहीं सकते।'

'नाना कहता था कि कोई आश्चर्य नहीं कि तुम नकक्काल निकलो।'

'तेरा नाना ऐसा कहता था? उसने कुछ कहने के लिए ही कह दिया था। रुपया एक धोखा है।'

'क्या हमें बिना रुपया के रोटी मिल जायगी?'

'हाँ उसके लिये मेरे पास रुपया होना चाहिये'

'गोश्त के लिये?

'हाँ गोश्त के लिए भी।'

मेरे सवालों पर वह हँसा और कान गरम करके बोला, 'तुम्हीं बहस में जीतोगे। तुमसे बहस करना गलत है। मैं अपना मुँह बन्द ही रखूँगा।

कभी कभी वह काम बन्द करके खिड़की की राह बाहर की ओर देखता और पानी का बरसना तथा छत से गिरना देख कर तन्मय रहता वह देखता कि धारा कैसे बह रही है

या सेब के सूखे वृक्षों में किस प्रकार पत्तियाँ आ रही हैं। 'भलामानुस' कम बोलता और हर शब्द काम के होते। जब भी मेरा ध्यान आकृष्ट कराना होता तो वह पुकारने के बजाय किसी वस्तु को गिरा देता।

कभी कोई बिल्ली का बच्चा अपनी छाया देखकर खुशी से अपने पांव का पञ्जा उठाता तो 'भलामानुस' कहता,, 'बिल्लियाँ बहुत शक्की होती हैं।' और झाड़ो पर किसी रङ्गीन पतिंगे को देखकर कहता। 'उसके रङ्ग बिरङ्गे निशान जैसे किसी फौज के तगमें हों।'

धीरे धीरे मेरी उस भलेमानुस से बहुत घनिष्टता हो गई और खुशी व सन्ताप के सभी क्षणों में मुझे उसके साथ की आवश्यकता अनुभव होने लगी। परन्तु नाना सदा ही मुझे डाँटता रहा, 'उससे बातें न किया करो।'

नानी तो नहीं परन्तु 'भलामानुस' सदा ही बहुत ध्यान से मेरी बातें सुना करता। बस कभी कभी यही कहता, 'नहीं बच्चे ऐसा नहीं है।' कभी कभी मैं जब गढ़ी हुई कहानियाँ कहता तो अपना सिर हिला कर विरोध करता, 'नहीं यह सच नहीं है।'

'तुम कैसे जानते हो?'

'बच्चे! मैं इतना समझ लेता हूँ।'

जब नानी सीनिया स्क्वायर के पम्प से ताजा पानी लाने जाती तो मुझे भी साथ ले जाती। एक दिन हम लोगों ने देखा कि शहर के पाँच रहने वाले एक देहाती किसान को पीट रहे हैं। उन्होंने उसे पटक दिया। पाँव से कुचला, और इस तरह घसीटा जैसे कुत्ते दूसरे कुत्ते को घसीटते हैं। नानी ने मुझे कहा, 'भागो भागो।' और अपना घड़ा वहीं रखकर उनकी ओर दौड़ी।

मैं भागा नहीं। उछककर नानी तो किसान के जुये से और मैं पत्थरों की वर्षा से वार करने लगा। तब तक और लोग आ गये और पीटने वाले भाग गये, तब नानी घायल की ओर झुकी। उसके चेहरे पर ठोकर मारी गई थी। उसके नाक से बहता खून नानी की छाती पर और चेहरे पर झड़ गया था। उसका थूक व कफ भी बुरी तरह बह आया था।

जब हम लोग घर आये तो फौरन ही मैं 'भलेमानुस' को सूचित करने भागा। उसने काम बन्द कर के शीशे के नीचे से मुझे यों देखा जैसे उसे सुनकर बड़ी खुशी हुआ हो। फिर हमारी बातें सुनकर बोला, 'अच्छा किया।'

मैंने जो भी देखा था उससे इतना प्रभावित था कि मैं उसकी न सुनकर अपनी ही कहता गया। तब उसने अपने हाथ मेरे कन्धे पर रखकर कहा, 'बस करो, बस करो। मैं ज्यादा नहीं सुनूँगा। जो भी आवश्यक था तुमने मुझे बता दिया है, समझे बच्चे।'

मुझे यह बुरा लगा और मैंने कोई उत्तर न दिया।

उसके कुछ उत्तर जो वह प्रश्न पूरे होने के पूर्व ही दे देता था मुझे याद हैं। एक बार एक लड़के से लड़ने में मैं जीत गया था तब उसने कहा था, 'चीजों को जानने समझने की कोशिश करो।'

मैं उसकी बात तो न समझा पर पता नहीं क्यों यह मुझे सदा याद रहा।

धीरे धीरे पता नहीं क्यों उससे सब ऊब गए। वह प्यारी बिल्ली भी अब उसके घुटनों पर न उछलती न प्यार से उसके पेट पर चढ़ती बल्कि मेरे पास वह अधिक रहती तो मैंने उसे उसके पास भेजना शुरू किया।

मेरे कपड़ों में जो तेजाब लगी है इससे वह नहीं आती। इसकी गंध उसे पसन्द नहीं—उसने कहा। परन्तु सभी नानी नाना भी उसे कहता, 'झूठा, क्रूर।'

'तू आखिर उसके पास चक्कर क्यों लगाता है ?' नाना चिढ़कर पूछता 'तुम देख लेना उससे जो भी सीखेगा उससे तेरा बुरा ही होगा।' और अक्सर तो मुझे वहाँ आता जाता न देखकर भी नाना डाँट बता देता क्योंकि उसकी समझ में वह भला आदमी न था।

मैं भलेमानुस को बता देता था कि उसके बारे में घर भर के लोग क्या राय रखते हैं।—'नानी तुमसे डरी है कि तुम काले जादू का अभ्यास करते हो। और नाना कहता है कि तुम खुदा के शत्रु हो और तुम्हें यहाँ रखना खतरनाक है।'

फिर वह अपना हाथ सिर पर यों उड़ाता जैसे तितली के पर। और एक ढ़ीली मुस्कान उसके सफेद चेहरे पर छा जाती।

'अजीब बात है।' वह उसांस लेकर कहता।

'हाँ।'

'हाँ बड़ी अजीब बात है।'

अन्त में उसे मकान छोड़ने का परवाना मिला। एक दिन रोज की आदत के मुताबिक नाश्ता करके जब मैं पहुँचा तो देखा कि वह सामान बाँध रहा है। मुझे देखते ही बोला, 'नमस्कार मेरे दोस्त, मैं जा रहा हूँ।'

'क्यों ?'

मुझे बहुत देर तक टकटकी लगाकर देखने के बाद उसने कहा 'भला यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें ही कारण

न मालूम हो ? वे लोग यह कमरा तुम्हारी माँ के लिए खाली करा रहे हैं।'

'किसने कहा है ?'

'तुम्हारे नाना ने।'

'वह झूठ बोलता है।'

"भलेमानस" ने मुझे पास खींच लिया और जमीन पर सामने बैठाकर कहा, 'इससे अपना दिमाग खराब मत करो। मैं समझा कि तुम जानते हो और मुझसे नहीं बताते। और मुझे निराशा भी हुई थी।' फिर भी उसने अपने स्वाभाविक ढङ्ग से कहा, 'याद है। मैंने तुमसे कहा था कि मुझसे दूर रहो।'

मैंने 'नहीं' के अर्थ से सिर हिलाया।

'तुम्हें दुःख हुआ था न !'

'हाँ।'

'लेकिन मेरा मतलब तुम्हें दुःख देने का नहीं था बच्चे ! मैं जानता था कि मेरी दोस्ती से तुम मुसीबत में फँस जाओगे। और क्या ऐसा नहीं हुआ ? अब देखो कि मैंने ऐसा क्यों कहा था।'

यह सब उसने यों कहा जैसे मुझ जैसा ही बच्चा हो। 'इससे मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे मन में आवाज उठी। 'यह मैंने भी अनुभव किया था।'

मेरे मन में एक बात से दर्द हो रहा था, वही मैंने पूछा, 'आखिर सभी तुम्हारे इतने विरुद्ध क्यों हैं ?'

मेरे गले में हाथ डालकर मुझे अपने पास खींचकर उसने कहा 'मैं उनकी किस्म का नहीं हूँ। देखते नहीं। मैं उन लोगों जैसा नहीं हूँ।'

मैंने उसका हाथ दाब दिया। मैं कुछ भी न कह पाया।

'तुम परेशान न हो।' कहकर उसने कान में कहा, 'और रोना भी मत।' जब कि उसके आँसू चश्मे के बीच से लुढ़क रहे थे।

फिर जैसा कि सदा ही होता था हम लोग काफी देर तक खामोश बैठे रहे। बीच बीच में एक या दो शब्द से खामोशी टूटती, बस। उसी शाम को सभी से नमस्कार करके वह बिदा हुआ। मैं उसे छोड़ने दरवाजे तक गया। और गाड़ी जब सूखे कीचड़ में जा रही थी मैं देखता रहा।

नानी ने झटपट कमरे की सफाई की और मैं जब गया तो, डाँटा, 'भागो यहाँ से।' वह मुझ पर नाराज थी।

'मुझे बताओ उसे क्यों निकाल दिया?'

'जो तेरे मतलब की बात नहीं उसमें क्यों पड़ता है?'

'तुम सभी मूर्ख हो।' मैंने कहा। 'तुम सभी।'

जिस झाड़ू से वह सफाई कर रही थी उसके उल्टे भाग से मुझे मार कर वह बोली, 'क्या तू पागल हो गया, तू जानवर!'

'मेरा मतलब तुमसे नहीं दूसरों से है।' कहकर उसे समझाना चाहा परन्तु उसका गुस्सा न उतरा।

उसी शाम को खाना खाते समय नाना ने कहा, 'खुदा का शुक्र है। आज वह चला गया। एक दिन मैंने उसे अपनी पसलियों में चाकू घुसेड़ते देखा था। अरे वह......।'

गुस्से में मैंने एक चम्मच तोड़ दिया। और अपनी चिरपरिचित खामोशी के साथ लौट आया। इस प्रकार मेरे अच्छे मित्रों की मित्रता की प्रथम कड़ी टूट गई।

नव

मेरा बचपन बिल्कुल वैसा ही था जैसे मक्खियाँ शहद एकत्रित करें। जीवन के विविध अवसरों पर विभिन्न प्रकार के लोग मिले जिनसे मुझे उनके अनुभव मिलते रहे। मैं उन्हें मधु की तरह ही संचित करता रहा। कुछ मधु गंदा था, कभी-कभी इससे खासी परेशानी भी होती। परन्तु मेरे लिए सभी शिक्षा ग्रहण करने की वस्तु थी, अतः मैं उसे मधु ही मानता हूँ।

पीटर, गाड़ीवान ने 'भलेमानुस' का स्थान ले लिया। वह बाहरी शक्ल सूरत में तथा अच्छी आदतों में नाना से मिलता, जुलता था। परन्तु कद में तथा अन्य बातों में भी तनिक छोटा था। उसे देखकर कभी कभी अपरिपक्व युवक का भान होता। उसके चेहरे की झुर्रियों से लगता जैसे उसका चेहरा किसी बहुत खूबसूरत धारीदार चमड़े का बना है। उसकी हंसोड़, पीली और सफेद, तथा फुर्तीली आंखें यों लगतीं जैसे पिंजड़े में कोई मैना। उसके भूरे बाल जो कभी बिल्कुल काले चमकदार थे घुंघराले हो गए थे। उसकी दाढ़ी के भी सभी बाल घुंघराले थे। और उसके पाइप से धुंआ निकलता, सो भी

बिल्कुल उसके बालों के रंग का होता तथा उसके छल्ले भी वैसे ही लगते जैसे उसके घुँघराले बाल।

वह बहुत तेज आवाज में और काफी जल्दी जल्दी बोला करता था।

'जब पहली बार मैं रानी तातियाना के पास आया तो उसने कहा; तुम्हें लुहार का काम करना पड़ेगा, लेकिन मुझे उसने माली के साथ काम करने को भेजा। मुझे कोई बुरा न लगा परन्तु मैं मजदूर नहीं बनना चाहता था। लेकिन एक बार उसने कहा, पीटर तुम्हें हमारे लिए ताजी मछली लाना है।' सभी मेरे लिए ही, मधु आया माली! लेकिन मैंने तय करके मछली को नमस्कार किया। मैं शहर आकर गाड़ीवान बन गया। यद्यपि इससे मुझे कोई लाभ न हुआ। अब तक मेरी अपनी जायदाद के नाम पर केवल यह घोड़ा है।'

उसके इस बूढ़े घोड़े ने सफेद रंग का शरीर पाया था परन्तु जैसे एक मनचले, शराबी पेन्टर सवार ने उसे दूसरे रंग में रंगना शुरू किया और बीच में ही छोड़ दिया। उसके पांवों को देखकर लगता कि वे तोड़कर फिर उल्टे पुल्टे जोड़ दिए गए हैं। या लगता जैसे कई बोरों को घोड़े की शक्ल में जोड़ दिया गया है। फिर भी पीटर उसे बड़े आदर से तंका (पुरानी मालकिन तातियाना का बिगड़ा नाम) के नाम से पुकारा करता था।

'तुमने इस जानवर का ऐसा आदमियों जैसा नाम क्यों रक्खा ?' एक बार नाना ने पूछा।

'ऐसी कोई बात नहीं।' पीटर ने जवाब दिया। 'मैं तो प्यार से ही ऐसा कहता हूँ। किसी आदमी का नाम तंका नहीं होता हाँ तातियाना जरूर है।'

चाचा पीटर कुछ पढ़ा लिखा भी था। वह और नाना अक्सर बैठकर साधुओं की पवित्रता पर बहस करते थे। अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिए दोनों बड़े बड़े पापियों का भी जिक्र करते थे। एक बहुत बड़े व मशहूर पापी एबसालोम की अधिक चर्चा होती। कभी कभी बहस अजीब रूप धारण कर लेती थी। किसी एक शब्द को लेकर झगड़ा होता। 'मैं अपने ढंग से कहता हूँ और अपने ढंग से तुम।' गुस्से से लाल होकर नाना चिल्लाता। और बकने लगता, 'बाशा! शीशा।'

तमाखू का चक्करदार धुआँ छोड़ता हुआ पीटर अपने ताव में कहता 'खुदा को चाहे जिस तरह याद करो। वह तो वही रहता है। जैसी चाहे प्रार्थना करो।'

पीटर कद में छोटा पर कसा हुआ व्यक्ति था। जब भी वह चलता तो पांवों के नीचे पड़ने वाले लकड़ी के टुकड़े, टूटे शीशे के टुकड़े या हड्डी के टुकड़े को एक ओर फेंकता चलता और कहता, 'इनका कोई उपयोग नहीं।'

कभी कभी वह एकान्त में किसी कोने में बैठकर सोचा करता। उस समय उसका भतीजा पूछता,

'क्या बात है चाचा?'

'मुझे अकेले ही छोड़ दो।' वह उसी उदासी में उत्तर देता।

इन लोगों का एक और पड़ोसी था। हर इतवार को वह खिड़की पर अपनी बंदूक के साथ बैठ जाता और कुत्ते, बिल्लियों व मुर्गियों पर गोली चलाता। और इसके बीच में जो भी आ जाता उस पर वह क्रुद्ध होता। एक बार 'शशा मातुश' इसके इस शौक का शिकार बन गया। उसके कपड़े के कोट के कारण उसके टांग में ही सभी छर्रें भर गए। मुझे उस समय की उसकी नीली आकृति भी याद है। मेरे नाना ने उसे

उसकाया कि वह उसकी शिकायत करे परन्तु उसने उत्तर दिया, 'इतना क्यों परेशान करूँ ?' परन्तु एक दिन जब उसकी छोटी बन्दुकची का छर्रा नाना के पावों में लग गया तो नाना ने उसका अन्त कर दिया उसने दूसरे लोगों को इकट्ठा किया और सबों को गवाह बना कर अधिकारियों के पास शिकायत लिख दिया। बस इतना बहुत काफी था। फिर अचानक वह व्यक्ति भाग गया।

परन्तु उसकी बन्दुकची की आवाज रोज ही गली में सुनाई पड़ती। सुनते ही चाचा पीटर अपनी रविवारी टोपी पहनकर दरवाजे पर आ जाता। उस मकान के अन्य किराए-दार भी आकर इकट्ठे हो गए। वह फौजी अफसर तथा उसकी पत्नी भी खिड़की से झांकने लगे।

कभी कभी बेकार ही चाचा पीटर वहाँ दौड़ धूप मचा देता। और कहीं छिपकर वह बन्दूकची बार बार हवा में गोली छोड़ता जाता। और बिना किसी घबड़ाहट के ही हम लोगों के पास आकर पीटर बहुत संतोष से कहता। 'सभी बार खाली गए!'.

एक बार कुछ छर्रे उसके गले व कंधे पर लगे और जब नानी सुई से उन्हें खोद खोद कर निकाल रही थी तो भाषण भी दे रही थी, 'तुम उस जानवर को इतना बढ़ावा क्यों देते हो। किसी दिन वह तुम्हें अंधा कर देगा।'

'नहीं, अकुलीना!' चाचा पीटर ने बहुत गम्भीरता से कहा, 'वह गोली नहीं छोड़ सकता।'

'लेकिन उसे बढ़ावा क्यों दे रहे हो?'

'बढ़ावा। उसे चिढ़ाता हूँ और बड़ा मजा आता है।' हथेली पर छर्रे रख कर उन्हे देखता हुआ वह कहता। 'यह भी गोली है भला? मेरी वह मालकिन। रानी तातियाना के यहाँ

एक सचमुच का फौजी अफसर था मारमाउन्टलीच । वह गोली के सिवा कुछ और न छोड़ता था । इगनाज की पेटी में उसने एक बोतल बांध दिया और उसे चालीस कदम की दूरी पर खड़ा किया । फिर इगनाज को हिलने को कहा । वह हिलता रहा और अफसर ने गोली चलाई । बोतल चकनाचूर होकर गिर पड़ी । हाँ केवल एक बार उस बेवकूफ इगनाज की गलती से उसके गुठने में चोट आ गई थी । फौरन डाक्टर आया । और एक मिनट में ही उसकी टाँग काट दी । उसकी टाँग को गाड़ दिया गया ।'

'फिर उस बेवकूफ का क्या हुआ ?'

'उसका कुछ नुकसान न हुआ । एक बेवकूफ के लिए भला हाथ या पांव की आवश्यकता ही क्या है । उसकी बेवकूफी ही उसे खाने पीने को दे देती है यही काफी है । फिर एक बेवकूफ को अपनी दिलचस्पी के लिए सभी खुश रखते हैं ।'

ऐसी बातों से नानी को अधिक दिलचस्पी न होती परन्तु मैंने पूछा, 'क्या किसी को मार न सकता था ?'

'जरूर, क्यों नहीं मार सकता ? एक बार वह कुश्ती लड़ा था। एकबार तातियाना के यहां एक उहलान आया । उसमें और मारमाउन्ट में झगड़ा हो गया । फौरन ही दोनों ने अपनी पिस्तौलें सम्हाल लीं । फिर लड़ने के लिए पार्क में गए । वहां रास्ते में ही दोनों ने एक दूसरे पर गोली छोड़ी । उहलान ने मारमाउन्ट के पेट में गोली मारी । मारमाउन्ट को कब्रगाह भेज दिया गया और उहलान को काकेशश भेजा गया । यह सब कार्य पलक मारते ही हो गया । इसी प्रकार सब हुआ । वहां शायद लोगों ने उसकी चर्चा चलानी भी समाप्त कर दी । लेकिन लोगों को उसके सामान की चिन्ता थी ।'

'सामान बहुत न रहा होगा ।' नानी ने कहा

'हां बहुत नहीं था ।' कह कर पीटर ने मेरी ओर इस प्रकार देखा मानो मैं बहुत बड़ा हो गया होऊँ । उसकी निगाह के कारण मैं तनिक चिन्तित हुआ । परन्तु उसने मुझे जाम दिया । रोटी पर लगाने के बाद चाकू में जो कुछ लगा रह गया था सो भी उसने मेरी ही रोटी पर लगाया । वह बाजार से मेरे लिए मिठाइयां लाता और—उसका व्यवहार सदा ही हमारे लिए दोस्ती का रहता ।

'सुनो जवान,' वह कहता, 'बड़े होकर तुम क्या करने को सोच रहे हो । सेना की नौकरी या नागरिक नौकरी ?'

'फौजी, सेना की ।'

'बहुत अच्छे ! आजकर फौजियों के दिन अच्छे हैं । हां, पादरियों का समय भी अच्छा ही है...... केवल प्रार्थना करना या मंत्र पढ़ना कोई बड़ा काम नहीं । मैं तो कहूँगा कि पादरी का काम फौजी से भी सरल है । लेकिन मछुए का काम सबसे आसान है । तुम्हें आदत पड़नी चाहिए बस !'

फिर उसने सब बताया कि कितनी प्रकार की मछलियां होती हैं और उन्हें किस किस ढंग से पकड़ना चाहिए ।

'जब तुम्हारा नाना तुम्हें बेंत मारता है तब तुम क्रोधित क्यों होते हो ?' उसने मुझसे पूछा, 'ऐसी कोई बात नहीं है । बेंत तो पढ़ाई के साथ रहेगी ही । और जो बेंत तुम्हें पड़ती है वह तो कुछ नहीं है । काश, कि तुमने तालीयाना को किसी को पीटते देखा होता । उसके पास क्लिताफर नामक एक व्यक्ति था, सिर्फ इसी काम के लिए । और अपने काम का वह उस्ताद भी था । कभी कभी आस पास के लोग आकर उससे कहते—'मेहरबानी करके उसे जरा एक को पीटने के लिए भेज दीजिए ।' और वह उन पर कृपा कर देती ।

फिर वह वर्णन करता कि किस प्रकार सफेद मलमल के कपड़े पहन कर सिर पर आसमानी रंग का रूमाल बांध कर लाल कुर्सी पर बरामदे में बैठकर क्रिस्ताफर की ओर देखती ।

'यह क्रिस्ताफर रायजान का रहने वाला था जो जिप्सी की तरह लगता था । उसकी मूछें कानों के ऊपर तक चढ़ आती थीं । वह दाढ़ी मूड़ कर रखता था जिससे उसका चेहरा नीला मालूम होता । वह अपने को ही बेवकूफ समझता था इससे ज्यादा बातें न करता तथा ।'

इस तरह की कहानियां मैं अपने नाना व नानी से भी सदा सुनता रहा हूं । इसलिए मैंने उससे कहा कि दूसरे ढंग की कहानी सुनाओ ।

इसे सुनकर उसके चेहरे की झुर्रियां मानो नाच उठीं और हँसकर उसने कहा, 'तुम बहुत लालची हो । अच्छा ! हममें एक रसोइया था ।'

'किसका रसोइया था !'

'उसी तातियान के !'

'तुम तातियाना को तातियान क्यों कहते हो ? क्या वह पुरुष थी ।'

वह हँस पड़ा । 'वह स्त्री ही थी परन्तु अजीब शक्ल की ! काली, सीधी जैसी । तुम्हें मैं रसोइया की बात बता रहा था ।, और उसने कहानी शुरू कर दी ।

कभी कभी छुट्टियों को या रविवार को मेरे ममेरे भाई आते थे । मामा याकूब का शाश्का और मामा जैक का शाश्का । जब वे आते तो हम लोग छतों पर चढ़ते वहां से पड़ोसी घरों के आंगन में किसी के बच्चों को खेलता देखते । उनके साथ जो

आदमी था वह हरे रंग का कोट पहने था जिसके किनारों पर किसी जानवर के बाल लगे थे! परन्तु उसका छोटा सा सिर पोला व गञ्जा था। दोनों में से किसी एक शास्का ने यह प्रस्ताव रखा कि एक एक बिल्ली का बच्चा चुराना चाहिए और फौरन ही उन्होंने सारा कार्यक्रम बना लिया। वे दोनों नीचे दरवाजे से भीतर जाते और मैं उस व्यक्ति को बातों में फँसाता इसी बीच एक बच्चा गायब!

'लेकिन मैं उसे किस प्रकार बातों में फँसाऊँगा?'

'उसके गंजे सिर पर थूंक देना!' उसने प्रस्ताव किया।

क्या किसी व्यक्ति के सिर पर थूंकना पाप नहीं है? परंतु मैंने सुना है और देखा भी है कि कभी कभी बहुत बुरे का भी फिर जाते हैं। सो मैंने किस्मत के भरोसे अपना पार्ट अदा किया।

फौरन ही गोलमाल मचा! उस घर से एक सुन्दर युवक के नेतृत्व में पुरुष और स्त्रियों की लम्बी फौज हमारे आँगन में आगई। उस समय फौरन ही दोनों शास्का गली में चुपचाप आगए और यों अभिनय करने लगे जैसे उन्हें इस घटना का कुछ भी पता नहीं। मुझे अकेले ही मार पड़ी जिससे बतेलेग्या के घर वाले तनिक शांत हुए।

मार से मेरे सारे शरीर में दर्द हो रहा था। मैं रसोई घर में पड़ा था कि चाचा पीटर आया। बिल्कुल सजा बजा कहीं जाने को तैयार। उसने कहा 'भले आदमी बहुत सूझ का काम किया था तुमने। उस बेहूदे बूढ़े को यही सजा मिलनी चाहिए थी।—उस पर थूकना ही उचित था। इस बार चट्टान गिरा कर उसका सिर तोड़ देना, अच्छा।'

मेरे सामने फिर एक छाया स्पष्ट हो गई। वही साफ सुथरा बच्चों जैसा दिखने वाला बूढ़ा। उसका बिल्ली के बच्चों के साथ का खेलना परन्तु उसी समय मुझे अपने ममेरे भाइयों की भी याद आई और मुझे गुस्सा आ गया। परन्तु फिर पीटर को देखते ही सब भूल गया। उसके चेहरे पर मुझे वही दया के भाव मिले जो पीटते समय नाना के चेहरे पर थे।

इस समय पीटर की बात मुझे अच्छी न लगी। मैं चीख पड़ा, 'भागो यहाँ से' मुझे घूरता हुआ वह वहाँ से चला गया।

तब से मेरी उसकी खटक गई और मैं उससे दूर ही भागता रहा। परन्तु एक भेदिए की तरह मैं उसके हर काम पर नजर रखता था

परन्तु बेतलेंगा वाली घटना के ठीक बाद ही दूसरी शर्मनाक घटना घटी। बेतलेन्गा का पूरा घर मुझे बहुत अच्छा लगता। इसके किराएदारों में अधिकांश महिलाएं थीं जिनसे मिलने दिन भर कुछ अफसर या विद्यार्थी आते रहते। फलस्वरूप गाने तथा हँसने की अटूट धारा सदा ही बहती रहती। अपनी साफ खिड़कियों से ही वह काफी सुन्दर मालूम होता।

परन्तु नाना को उनसे कोई दिलचस्पी न थी। वह कहता कि वहाँ सभी लोग नास्तिक हैं तथा खुदा के शत्रु हैं, खासकर वे औरतें।

बगल वाला ओवसिकोव की कोठी सदा गम्भीर रहती। पत्थरों की बहुत ऊँची कोठी। एक व्यक्ति जो बहुत लम्बा था, जिसके दाढ़ी न थी परन्तु मूँछें इस प्रकार उमेठता था कि दोनों कोने सूई की तरह नुकीले थे, कभी कभी उसके बाग में दिखाई पड़ जाता। फिर कभी कभी एक दाढ़ी वाला बूढ़ा और

लंगड़ा भी दिखाई पड़ता जो लंगड़ाता हुआ अस्तबल की ओर जाता जहाँ बहुत खूबसूरत तथा पीले रंग की एक घोड़ी बंधी रहती। वह सीटी बजाता हुआ घोड़ी को बगल में ठोंकता और खुश होता।

लगभग रोज ही शाम को तीन बच्चे भी बाग में आकर खेलते। सभी एक से कपड़े पहनते। भूरे रंग का कोट पैंट। सभी के चेहरे गोल थे तथा आँखें चमकदार थीं। वे सभी एक दूसरे से इतना मिलते जुलते कि दिवाल की जरा सूराख से उनकी बड़ाई छोटाई केवल ऊँचाई से जान पाता। मैं यों खड़ा होकर उन्हें देखता कि वे मुझे न देख पाते। उनका खेल का ढंग मेरे लिए अनोखा था। परन्तु खेल में वे इतने खुश होते थे कि मुझे सब कुछ अच्छा लगता। मुझे उनके कपड़े भी अच्छे लगते और सब से अधिक उनका आपसी प्रेम मुझे भाया। कभी कोई गिर पड़ता तो दूसरे हँसते। परन्तु उनके हँसने में चिढ़ाने का भाव न होता इससे हँसी अच्छी ही लगती। गिरने वाले की मदद के लिए दूसरे फौरन दौड़ पड़ते। और अपने रुमाल से उसकी धूल झाड़ देते। मैंने ऐसे खुश बच्चे पहले न देखे थे।

एक दिन पेड़ पर चढ़ कर मैंने उनके लिए सीटी बजाई। वे रुक गए फिर सभी पास आए। मैंने समझा कि शायद वे मुझे ढेले मारेंगे। मैं नीचे उतरा फिर अपने जेबों व कमीज के आगे के भाग में ढेले भर कर पुनः ऊपर चढ़ा। परन्तु तब तक मुझे भूलकर वे दूसरे कोने में जाकर खेलने लग गए थे। इससे मुझे दो प्रकार की निराशा हुई। एक तो कि मैं उनसे लड़ने नहीं गया था। दूसरे ठीक उसी समय एक खिड़की से किसी ने उन्हें पुकारा—बच्चो भीतर आने का समय हो

गया ।—और फौरन ही परन्तु धीरे धीरे तीनों भीतर चले गए जैसे एक के पीछे दूसरी बत्तकें चलती हैं ।

रोज ही मैं इस आशा में कि वे मुझे खेल में शामिल होने की दावत देंगे मैं उसी जगह पेड़ पर चढ़ता परन्तु कभी भी दावत न मिली । परन्तु मैं सदा ही अपने विचारों में उनके साथ ही होने की कल्पना करता । फलस्वरूप उनके खेल में ही मैं हँस पड़ता या चिल्ला उठता । जिससे वे लोग मुझे देखकर पास आते और मैं शरमा कर उतर आता ।

आँख मुदौवल के खेल में एक दिन बीचवाला भाई 'चोर' हो गया । सो नियमानुसार वह कोने में खड़ा होकर गिनती गिनने लगा । और दूसरे भाई छिपने लगे । बड़ा भाई । बरामदे में खड़े एक स्लेज (गाड़ी) पर चढ़ गया । परन्तु छोटा वाला छिपने की जगह न पाकर कुएँ के चारों ओर ही घूमता रहा । 'चोर' भाई की गिनती समाप्त हो रही थी अतः छोटा वाला भाई जल्दी से कुएँ पर चढ़कर वहाँ लटकती बालटी में घुस गया । फिर एक हल्की सी आवाज के बाद बाल्टी नीचे जाने लगी और आँखों से ओझल हो गई । मैं बिल्कुल ही काठ हो गया कि बहुत तेजी से वह नीचे जा रहा था । परन्तु अपने को सचेत कर मैं उनके बाग में कूद पड़ा और चिल्लाने लगा, "वह कुएँ में गिर पड़ा है ।"

मँझला भाई मेरे साथ ही कुएँ तक गया । उसने रस्सी पकड़ ली परन्तु वह खुद ही जब खिंचने लगा तो रस्सी छोड़ दी । परन्तु मैंने उसी समय रस्सी पकड़ ली । तब तक बड़ा भाई भी आकर रस्सी खींचने में मेरी मदद करने लगा । बार बार वह कहता, 'होशियारी से ।'

एक मिनट में ही छोटे भाई को हम लोगों ने खींच लिया और बाहर निकाला। छोटा भाई बुरी तरह डर गया था। उसके दायें हाथ से थोड़ा सा खून निकल रहा था और ओंठ में रगड़ लग गई थी। उसने हल्की मुस्कान के साथ आँख मूँदी फिर हँसा और पूछा मैं कैसे गिरा था?

'यह तेरी मूर्खता थी!' मझले भाई ने कहा। उसके चेहरे को पोंछते हुये उसने कहा। परन्तु बड़ा भाई डर गया था। उसने कहा, 'अब हमें अन्दर जाना चाहिये। इस बात को हम छिपा नहीं सकते।'

'क्या तुम्हें इसके लिये मार पड़ेगी?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाया फिर मेरी ओर हाथ बढ़ाकर कहा, 'तुम बहुत जल्दी आये।'

मैं बहुत खुश हुआ और उसका हाथ थामने को हाथ बढ़ाया कि वह अपने भाइयों की ओर मुड़ गया। 'हमें भीतर जाना चाहिये नहीं इसे सर्दी लग जाएगी। मुझे केवल यही कहना चाहिये कि यह गिर पड़ा था, कुएँ का नाम न लेना चाहिये।'

'नहीं।' छोटे वाले ने कहा, 'कहना चाहिये कि कीचड़ वाले गड्ढे में गिरा था। ठीक है!'

और वे भीतर चले गए।

यह सब इतने कम समय में ही हो गया कि जब मैं फिर पेड़ के पास आया तो उसकी डालें तब तक हिल रही थीं तथा पीली पत्तियाँ गिर रही थीं।

इसके बाद उन भाइयों को लगभग एक सप्ताह तक मैंने न देखा परन्तु जब वे आये तो पहले से ज्यादा खुश। मुझे पेड़ पर देखकर बड़ा भाई पुकार उठा। 'नीचे आकर हमारे साथ खेलो।'

उस दिन बरामदे में पड़ी उसी स्लज पर हम सब बैठे। एक दूसरे को खूब देखा और और खूब बातें कीं।

'तुम्हें कभी बेंत पड़ी है?' मैंने पूछा।

'जरूर!'

मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसे बच्चे भी मेरा ही तरह पिटा करते हैं। इससे मुझे अत्यन्त क्लेश हुआ।

'तुम चिड़ियों को क्यों पकड़ते हो?' छोटे ने पूछा।

'मुझे उनका गाना अच्छा लगता है।' मैंने उत्तर दिया।

'उन्हें पकड़ना बुरा है। उन्हें भी आजाद होकर घूमने देना चाहिए।'

'परन्तु मैं यह नहीं चाहता।'

'तो तुम मेरे लिए भी एक पकड़ दोगे?'

'तुम्हारे लिए? कैसी?'

'वह जो पिंजड़े में भी फुदकती है।'

'तुम गौरैया चाहते हो।'

'उसे बिल्ली मार डालेगी और पापा भी उसे पसन्द न करेंगे।'

'हाँ वह पसन्द न करेंगे।' बड़े ने कहा।

'तुम्हारे माँ है?' मैंने पूछा।

बड़े ने कहा, 'नहीं।' परन्तु मझले ने कहा, 'जो है वह हमारी सगी माँ नहीं है। हमारी तो मर गई।'

'विमाता है क्या?' मैंने पूछा।

'हाँ।' बड़े ने सिर हिलाया

इस पर तीनों बच्चे जैसे काले पड़ गये। मैंने नानी की कहानियों से जान लिया था कि विमाताएँ क्या होती हैं। अतः उनकी सूनी दृष्टि का मैं अर्थ समझ गया। मैं समझ गया कि विमाता कितनी क्रूर होगी।

'तुम्हें तुम्हारी सगी मां मिल जायगी। देख लेना।' मैंने उन्हें सांत्वना दी।

बड़े ने कहा, 'ऐसी बातें नहीं होतीं। जब वह मर गई है तो कैसे मिलेगी?'

'नहीं होतीं? परन्तु बहुत बड़ी तदाद में मृतक लोग और वे भी जो टुकड़े टुकड़े काट डाले गए हों वे भी जीवन के मंत्र के पानी के पड़ने पर जी गए हैं। खुदा सदा मौत नहीं भेजता। मौत तो, किसी न किसी चुड़ैल के किए होती है।'

फिर बहुत जल्दी से मैंने नाना की बताई कहानियाँ सुनाना शुरू किया तो बड़ा हँस पड़ा, 'अरे वही परियों वाली कहानियाँ। सब मालूम हैं।' परन्तु दोनों दूसरे भाई मुंह बाए एक दूसरे का हाथ पकड़े ध्यान मग्न सुनते रहे।

शाम हो रही थी। छत के ऊपर का बादल लाल हो रहा था कि तभी कड़ी और नुकीली मूछों वाला वह बूढ़ा आदमी हमारे सामने आ खड़ा हुआ। उसने एक लम्बा सा पादरियों जैसा चोंगा तथा बालों वाली टोपी पहन रखी थी। उसने मेरी ओर हाथ दिखाकर कहा, 'यह कौन है?'

बड़ा उठा और नाना के घर की ओर सिर हिलाकर कहा, 'यह उस घर से आया है।'

'इसे किसने बुलाया?'

सभी बच्चे स्लेज से उतरे और चुपचाप घर में चले गए। इस समय पुनः इन्होंने मुझे बत्तकों की याद दिला दी। उस व्यक्ति ने मेरे कंधे को पकड़कर अपनी ओर खींचा। फिर दरवाजे के पास लाकर बाहर कर दिया। मैं डर कर चीख पड़ता परन्तु मैं बोल नहीं पाया। मैं बाहर गली में था और दरवाजे पर खड़ा होकर वह उँगली दिखाकर मुझे सचेत कर रहा था, 'फिर कभी यहाँ मत आना।'

मुझे भी गुस्सा आ गया। मैं चिल्लाया, 'अरे बूढ़े भूत, मैं खुद कभी यहाँ आना नहीं चाहता।'

एक बार फिर उसकी बाहें उठीं और मैं खींच लिया गया तभी उसकी आवाज यों लगी जैसे सिर पर किसी ने हथौड़ा मारा हो। 'तेरा नाना घर पर है।'

मेरे अभाग्य से वह घर पर ही था। सिर निकाल कर दाढ़ी ऊंची करके उसने अपनी फीकी रोशनी वाली आखें से उस बूढ़े को देख कर कहा, 'देखिए, इसकी माँ बाहर है और मैं काम में फँसा रहता हूँ। इससे इसकी देख रेख कोई नहीं कर पाता। क्या तुम उसे क्षमा नहीं कर दोगे कर्नल।'

कमरे में चारों ओर देख कर कर्नल चला गया। मुझे मार पड़ी और मैं पीटर की गाड़ी पर चढ़ गया 'भले आदमी फिर कोई बुरी हरकत!' पीटर ने पूछा, 'इस बार क्या किया?'

जब मैंने उसे सब बता दिया तो उसने पूछा, 'लेकिन तू उनसे दोस्ती क्यों करना चाहता है। वे संपोले हैं। और तुम्हें तो इसका फल मिल गया न!'

वह बहुत देर तक इसी प्रकार कहता रहा। पहले तो मार से हो रहे दर्द के कारण हमने उनसे बदला लेने की सोची। तभी सोचा कि अवश्य ही उन तीनों बच्चों को भी मार पड़ी होगी। फिर हमें कोई शिकायत न रह गई।

'उन्हें मार नहीं पड़नी चाहिए।' मैं चिल्लाया, 'वे बड़े प्यारे बच्चे हैं। तुम जो कुछ भी कह रहे हो झूठ है।'

उसने एक अर्थभरी दृष्टि से मुझे देखा फिर एकाएक मुझे गाड़ी से अलग होने को कहा। मैं कूद पड़ा और कहा, 'मूर्ख!'

उसने मुझे दौड़ा लिया, परन्तु बेकार मैं दौड़ता रहा और उसने चिल्लाना शुरू किया. 'मैं मूर्ख हूँ। झूठ बोलता हूँ। रह जा मुझे पकड़ लेने दे तो।'

तभी नानी रसोई घर से निकल आई और मैं उसके पास भाग गया। उसने शिकायत करनी शुरू की।

'मुझे इस छोकरे के कारण तनिक भी शांति नहीं। यह सदा ही हमें कोसता रहता है। मेरी माँ और हर को गाली देता है।'

उसकी झूठी शिकायत को सुनता हुआ मैं उसे घूरता रहा तभी नानी ने कहा, 'तुम झूठ बोल रहे हो पीटर यह सच है। वह कभी किसी को नहीं कोसता।' परन्तु यदि नाना होता तो वह अवश्य ही पीटर की बात मान लेता।

फिर उस दिन से हम दोनों के बीच युद्ध मचा रहा। वह सदा ही मेरी गलती खोजने में व्यस्त रहता। उसने हमारा पिंजड़ा खोल कर चिड़ियों को उड़ा दिया। उनके पीछे बिल्ली दौड़ाई जिसने कुछ को तो अवश्य ही पकड़ लिया। वह सदा ही बेकार के कारणों को बढ़ा चढ़ा कर नाना से मेरी शिकायतें करता रहता। नाना सभी पर विश्वास कर लेता। अब उसके प्रति मेरा विश्वास पक्का हो गया कि वह बूढ़ों का कपड़ा पहने एक बच्चा ही है।

इसके बदले में मैं यह करता कि उसके जूते को छिपा देता फिर उनकी सियन खोल देता ताकि जब वह पहने तो रास्ते में ही वे टुकड़े टुकड़े हो जाएं। एक दिन उसकी टोपी में मैंने काली मिर्च छोड़ दी। वह एक घंटे तक लगातार छींकता रहा जिससे उसका उस दिन का सब काम पड़ा रह गया।

रविवार को खास तौर से वह मुझपर निगरानी रखता था। कभी कभी वह उन बच्चों से मिलने के हमारे गुप्त कार्य को

देख लेता तो भागा हुआ नाना को बताने जाता। परन्तु किसी प्रकार भी यह खतरा कम न हुआ और बच्चों से मेरी घनिष्ठता बढ़ती ही गई। उनकी चारदिवाली और मेरे घर के बीच में एक छोटी सी गली थी। इसमें घास पात और झाड़ियाँ उग आई थीं। उन्हीं के साए में मैंने उनकी चारदिवाली में एक रास्ता फोड़ा जो दिखाई न पड़ता था। वे बच्चे भी एक एक करके या कभी दो भी आकर हमसे मिलते थे। उसी रास्ते के सहारे हम लोग बातें करते बहुत धीरे धीरे। दो भाई तो बातें करते और कोई तीसरा दूर खड़ा यह देखा करता कि कहीं कर्नल तो नहीं आ रहा है।

उनके दुःखी जीवन से मुझे भी क्लेश हो रहा था। हम लोग पिंजड़े की चिड़ियों की बातें करते और भी बहुत सी दूसरी बातें करते परन्तु कभी भी उन बच्चों ने अपने पिता या कि माता की बात नहीं की। वे सदा ही किसी नई कहानी की माँग करते और मैं नानी की कहानी दुहरा देता। जैसे कि मैं कहानी की घटनाओं को जानता होऊँ। अगर कभी भूलता तो उन्हें इन्तजार करना पड़ता और आकर मैं नानी से ठीक ठीक पूछ कर आता। नानी सदा खुश रहती।

मैंने उन्हें अपनी नानी के विषय में खूब बताया। एक दिन बड़े ने तनिक झेंप के साथ कहा, 'लगता है कि तुम्हारी नानी बहुत अच्छी है! हमारे भी एक बहुत अच्छी नानी थी।'

अपने अतीत की बातें कहते हुए उसका गला भर आता था। एक दिन जब हम लोग बातें कर रहे थे तभी बिना हमारे जाने ही अचानक पीटर आ उपस्थित हुआ और चीखा, 'फिर!'

और हम सभी उड़ गए।

मैं अनुभव कर रहा था कि धीरे धीरे पीटर अधिक गम्भीर होता जारहा था और उसकी बात करने की आदत कम हो रही थी। जब वह ठीक रहता तो लम्बी आवाज के साथ दरवाजा खुलता था और जब वह थका या व्यथित होता था तो एक कराह की तरह धीरे से दरवाजे की आवाज आती और खो जाती थी।

उसके भतीजे ने शादी करली थी और अपनी पत्नी के साथ देहात चला गया था। अस्तबल में पीटर अब अकेला ही रहता था। अस्तबल की खिड़की अब टूट चली थी तथा वहाँ, चमड़े, तेल और तमाखू की किंचित जबा देने वाली दुर्गन्ध सदा ही व्याप्त रहती थी जिससे मैं बहुत जल्दी ही दूर भाग जाता था। उसकी अब यह आदत पड़ गई थी कि रात को सोते समय भी वह लैम्प जलाए रखता था जिससे नाना को सदा ही आपत्ति रहती थी, 'एक दिन तू मुझे जला कर छोड़ेगा।'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा।' वह उत्तर देता। 'इससे परेशान नहीं होना चाहिए। मैं लैम्प को पानी से भरे बर्तन में रखता हूं।' अब वह अक्सर नानी की शाम की दावत में गायब रहता, इससे उसके साथ उसके नाम का डिब्बा भी न दिखाई पड़ता। अब वह पहले से अधिक बूढ़ा हो चला था। चेहरे की प्रत्येक झुर्रियाँ गहरी होती जारही थीं तथा उसके चलने से लगता जैसे पाँव ठीक न पड़ रहे हों। एक पंगुल की तरह।

एक दिन सुबह सुबह, जब रात को बहुत बर्फ पड़ी थी, नाना के साथ मैं रास्ता साफ कर रहा था तभी अचानक दरवाजा खुला और एक सिपाही भीतर आया। आकर पहले उसने दरवाजे को भीतर से बन्द कर लिया। फिर अपना

मोटा व भद्दा अँगूठा दिखा कर नाना को उठने का इशारा किया ।

नाना उठा तो वह झुका और कुछ इतने धीरे से कहा कि मैं न सुन सका । नाना ने आश्चर्य से कहा, 'यहाँ, कब, या खुदा !'

फिर हाँफते हुए कहा, 'या मेहरबान खुदा !'

सिपाही ने इशारा किया, 'शि........................धीरे बोलो !'

चारों ओर देखकर नाना ने मुझसे कहा, सामान लेकर भीतर जाओ ।

मैं एक कोने में छिपकर उन्हें देखता रहा । वे पीटर के अस्तबल में गए । मैंने देखा कि सिपाई ने एक हाथ का दस्ताना उतार कर दूसरे हाथ पर पटका और कहा, 'वह जानता था कि हम लोग उसके पीछे लगे थे । उसने गली में घूमने के लिए घोड़े को लावारिस छोड़ दिया है और अवश्य ही खुद यहीं कहीं छिपा हुआ है ।'

नानी को बताने मैं भागकर रसोईघर में गया । उसका सिर उसके काम के साथ साथ हिल रहा था । उसने बिना किसी उत्सुकता के ही बातें सुनकर कहा, 'भाग जा, शायद उसने कुछ चुराया है । तेरा इससे क्या काम ?'

जब मैं बाहर गया तो नाना दरवाजे पर खड़ा था । उसके सिर को टोपी उतार ली थी और आकाश की ओर देख रहा था । गुस्सा उसके चेहरे पर साफ दिखायी पड़ रहा था और गुस्से से ही उसका एक पाँव भी काँप रहा था । मुझे देख कर पाँव पटक कर उसने पुकारा, मैंने तुमसे

भीतर जाने को कहा है ?' परन्तु मुझे साथ लेकर वह रसोईघर तक गया और पुकारा, 'मालकिन जरा सुनना !'

नानी और नाना दूसरे कमरे में चले गए। वहाँ वे फुस-फुसा कर बातें कर रहे थे। जब नानी रसोईघर में लौट कर आई तो उसके चेहरे पर के भावों से मैं जान गया कि जो कुछ हुआ है वह बहुत भयानक और खतर-नाक है।

'नानी तुम इतनी डरी सी क्यों लगती हो ?' मैंने पूछा।

'तू खामोश रह !' कहकर वह शांत ही रही।

फिर उस सारे दिन तक जैसे घर पर कोई भयानक छाया मंडराती रही। नाना नानी फुसफुसाकर बातें करते परन्तु दोनों की आँखों में भयंकर बेचैनी थी।

नाना ने खाँसकर नानी से कहा, 'घर भर में रोशनी कर दो।'

हम लोग जल्दी से खाने पर बैठे और बिना स्वाद लिए ही यों जल्दी जल्दी बेचैनी से खाने लगे जैसे कोई अभी आने वाला हो। नाना बहुत थका सा लगता था और धीमे आवाज में उसने कहा, 'आदमियों पर भी क्या राक्षसी साया रहती है।..................सभी जगह..........अरे वाह !'

नानी ने कोई उत्तर न दिया।

जाड़े का वह रुपहला दिन बहुत चिन्ता में बीता। शाम के पूर्व ही दूसरा सिपाही आया। चूल्हे के पास बैठ कर बातें करने लगा। नानी ने पूछा, 'इसका पता कैसे लगा ?'

'हमीं लोगों ने सब पता लगाया। तुम चिन्ता मत करो।'

मैं खिड़की पर बैठा था कि बगल वाले पेत्रोनवा के घर से रोने की आवाज आई, 'दौड़ो, देखो क्या हो रहा है।'

सिपाही के पंजे से पकड़ी जाकर उसने रोना गिड़गिड़ाना शुरू किया, 'जब मैं गाय दुहने गई तो वहाँ······वहाँ काशरीन के बाग में जूते की तरह लगता है? मैंने समझा······'

नाना ने उसे डाँटा। 'तू मूर्ख है, झूठी है। मेरे बाग की चारदिवाली कितनी ऊँची है। भला तू कैसे देख सकती है। झूठी!'

'मैं झूठ क्यों बोलूंगी? मैंने पांव के निशान देखे। वहाँ तक गई। कि तभी तुम्हारे बागीचे में बर्फ की ढेर के पार 'वही' था।'

'कौन, कौन, यह प्रश्न कई बार किया गया था परन्तु उसने उत्तर न दिया। परन्तु दूसरे ही क्षण सभी एक दूसरे को धक्का देते हुये बाग में घुसने लगे। वहीं कोने में गड्ढे से लग कर वह पड़ा था। उसका सिर उसकी छाती पर था।

उसकी भयानक शक्ल से मैंने अपनी आँखें मूँद लीं। आँख खोली तो देखा कि उसके दाहिने हाथ में उसकी छुरी थी और उसका दूसरा हाथ कटा, बर्फ पर पड़ा था। इस समय वह अपने जीवन काल से अधिक मासूम मालूम होता था। उसने अपनी आत्महत्या की थी। उसके चारों ओर का भयानक वातावरण मुझे चिन्तित कर रहा था। बिना कुछ समझे हुये पेत्रोनवा चीखने लगी और सिपाही ने डाँटा, और तेज़ी से नाना ने कहा, 'खबरदार उसके पाँवों के निशान पर पाँव न पड़े!'

एकाएक जमीन पर कुछ देखकर नाना क्रोध से भड़क उठा और सिपाही को डांटने लगा, 'देखो, तुमने क्या बखेड़ा मचा रखा है ? अब यह खुदा के हाथ में है। खुदा का निर्णय, सुनो !.......तुम यह सब बेकार.......?'

इन शब्दों से बाग में सन्नाटा छा गया। हर ने लम्बी साँस ली और अपने पर क्रास बनाया। भीड़ बढ़ने लगी। कुछ लोग पेत्रोनवा के चारदिवाली पर चढ़े और गिर पड़े। उन्हें चोट लगी। अचानक नाना ने कहा, 'पड़ोसियों तुम्हें तनिक भी होश नहीं है। तुम लोग हमारी रसभरी (मकोइआ) की झाड़ी नष्ट कर रहे हो।'

नानी रो रही थी। उसने मेरा हाथ पकड़ा और घर के भीतर आई।

'उसने क्या किया ?

'तुमने नहीं देखा क्या ?'

उस सारी रात घर भर में शोर मचा रहा। पुलिस ने वहाँ पहरा लगाया था। अगर उधर कोई भी आता जाता तो सिपाही चीखता, 'कौन है ?'

नानी उन्हें चा। पिलाती रही। खाने की मेज पर एक दाढ़ीवाला बैठा था। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। उसने कहा। उसका असली नाम अब तक पता नहीं लगा।...... वह इलेत्मा में पैदा हुआ था। अब तक सिर्फ यही पता लगा है।........और यह गूँगा स्तेफेन...... यह उसका नकली नाम था...... वह ठीक था, न गूँगा न बहरा।.................वह सब जानता था.............और एक 'और भी तीसरा साझीदार है.........अभी तक पता नहीं लगा।'

'या खुदा।' पेत्रोनवा चीखी, उसे पसीना छूट रहा था।

भट्ठी के किनारे बैठा मैं सब को देख रहा था कि सभी

दस

एक शनिवार की सुबह को मैं खड़ा पेत्रोव्ना के बाग में कुछ लाल व सुन्दर चिड़ियों का बर्फ के ऊपर इस डाल से उस डाल पर उड़ना देख रहा था। चिड़ियों की फुर्ती देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही थी। मुझे इससे अधिक खुशी भला क्या होती मेरे सामने बर्फ से ढँकी जमीन, बर्फ का ही सन्नाटा और चिड़ियों का मन मोहक संगीत। स्लेज की आवाज।

बाहर मैंने बगीचे की दीवाल पर चढ़कर देखा, गली में एक बहुत प्रसन्नचित्त व्यक्ति सीटी बजाता हुआ तीन घोड़ों को हांक रहा था जो एक बंद स्लेज में जुते थे। मेरे हृदय की धड़कन तेज हो गई और मैंने पूछा, 'किसे लाए हो ?'

उसने मुझे तनिक अवहेलना से देखा अपने हाथ को ऊपर उठाते जिसमें वह रास पकड़े था फिर लपककर अपनी जगह पर बैठते हुए उसने कहा, 'पादरी को।'

मुझे उसपर यकीन न आया। अगर पादरी होता तो हम लोगों के बीच क्यों आता। तभी गाड़ीवान ने चाबुक मार कर

घोड़ों को तेज किया और घोड़े खेतों की ओर बढ़ गए। मैं थोड़ी देर तक खड़ा उन्हें देखता रहा फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

रसोई घर में आते ही मुझे जो आवाज सुनाई पड़ी वह मेरी माँ की आवाज थी जो साफ सुनाई पड़ी। वह कह रही थीं, 'अब क्या तुम मुझे मार ही डालना चाहते हो?'

मुझे इतना उत्साह हुआ कि मैंने वह बर्फीले कपड़े भी न उतारे और भीतर भागा कि नाना ने मेरी बांह पकड़ ली, 'तेरी माँ वापस आ गई.........उसके पास जा.........परन्तु रुक...रुक!' फिर उसने मुझे यों झटका दिया कि मैं गिरते-गिरते बचा। फिर उसने कहा, 'जा!'

भीगे हुए दरवाजे पर मैंने धक्का दिया। मेरे हाथ पांव भी बर्फ के कारण सुन्न हो रहे थे। फिर भी घबड़ाहट में जब मैं भीतर गया तो मुझे कुछ भी दिखाई न पड़ा।

'यह रहा!' मां ने कहा। 'अरे वाह, यह कितना बड़ा हो गया! क्या बात है, क्या तू मुझे पहचान नहीं रहा है? इसके कपड़े कैसे हैं? देखो, इसके कान सफेद हो रहे हैं। जल्दी देखो माँ।'

मुझपर झुककर उसने मेरे बर्फीले कपड़े अलग किए तथा यों घुमाती रही मुझे, जैसे मैं उसके हाथ में केवल एक गेंद होऊँ। उसकी लम्बी चौड़ी आकृति बहुत ही भव्य लग रही थी। वह सर्दों के लबादे की तरह ही का एक लम्बा लाल रंग का कोट पहने थी ऐसा कपड़ा इसके पूर्व मैंने न देखा था।

उसका चेहरा मेरे स्मरण से अधिक ताजा था और उसकी आंखें अधिक बड़ी और गहरी और उसके बाल अधिक गहरे

सुनहले। ज्यों ज्यों वह मेरे कपड़े उतार रही थी उसके लाल ओंठ व्यथा से फैलते जा रहे थे। वह मुझे दरवाजे के पास ले गई और पूछा, 'कुछ बताओ! क्या तुम्हें मुझे यहाँ देख कर खुशी नहीं हुई? ओह कितनी गीली व गंदी कमीज है।'

तब उसने मेरे कान पर गर्म तेल रगड़ कर उन्हें ठीक किया। परन्तु जब वह मुझपर झुकी थी उस समय उसके शरीर से जो खुशबू आरही थी वह इतनी सुहावनी थी कि मेरा दर्द उसी समय चला गया था। मैं इतना खुश था कि बोल न सका और उससे चिपक कर उसकी आँखों में ही घूरता रहा। तभी मैंने सुना कि नानी कह रही थी, 'यह कितना धूर्त है.... इसे कोई काबू में नहीं रख सकता। उसे नाना का भी डर नहीं लगता। बारबरा!'

'जाने दे माँ। खुदा के लिए जाने दे!'

और मुझे माँ के सिवा सब कुछ बुरा, पुराना लग रहा था! मुझे खुद भी लग रहा था कि मैं नाना की तरह बूढ़ा हूँ।

अपने घुटनों से मुझे दबाकर अपने मुलायम हाथों से मेरे बाल पकड़ कर वह कह रही थी, 'उसे कोई देखने वाला चाहिए। और अब स्कूल लायक भी हो गया है। क्या तुम पढ़ना सीखना चाहोगे?'

'मैं जो भी चाहता था सीख चुका हूँ।'

'लेकिन अभी कुछ और जानना होगा। तुम कितने ताकतवर हो।' फिर वह बहुत देर तक मेरे साथ खेली और हँसी से हमें हँसाती रही।

जब नाना भीतर आया तो उसका चेहरा सूखा था परन्तु आँखों से आग बरस रही थी। माँ ने मुझे एक ओर कर दिया

फिर बहुत तेज तथा रोष भरे स्वर में पूछा, 'पिता, क्या तय किया ? क्या चाहते हो कि मैं चली जाऊँ ?'

वह खिड़की पर चुपचाप खड़ा रहा। अपने नाखून से छड़ों पर जमी बर्फ खुरूचता रहा। ऐसे मौकों पर मैं बहुत सतर्क हो जाता हूँ। तभी नाना ने कहा,

'एलेक्सी ! बाहर जाओ !'

'क्यों ?' माँ ने पूछा। और मुझे अपने पास खींच लिया। 'तुम इसी कमरे में रहोगे।' फिर वह उठी फिर नाना के पीछे जाकर खड़ी हो गई जैसे लाल बादल ने उसे ढंक लिया हो फिर कहा, 'पिता, मेरी बात सुनो।'

एक झटके के साथ वह घूमा और डाँटा, 'चुप रहो !'

माँ ने बहुत शान्त होकर कहा, 'मैं तुम्हें यों चीखने न दूँगी।'

नानी उठी और पुकारा, 'वारवरा, आ इधर।'

नाना ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'चुप रहो। पहले बताओ वह कौन था। वह कैसे आया।' फिर क्षण भर बाद बिल्कुल बदली आवाज में कहा, 'वारवरा, तूने हमारी बहुत बदनामी की है।'

'कमरे से बाहर जा।' नानी ने मुझे कहा और मैं रसोई घर में चला गया। वहाँ मुझे घुटन होने लगी। मैं फिर भट्टी पर चढ़ गया जहाँ से सब कुछ सुनाई पड़ता था। उनकी बातें कभी तेज कभी धीमी होती रहीं। वे कभी सब एक साथ बोलते फिर यों चुप हो जाते जैसे सभी सो गए हों। वे किसी एक बच्चे की बात कर रहे थे जिसे मेरी माँ ने अभी पिछले दिनों जन्म दिया था और पालन पोषन के लिए कहीं और चला गया था। मुझे उलझन यह थी कि मैं समझ नहीं रहा

था कि आखिर नाना क्यों नाराज था। माँ ने उससे बिना आज्ञा लिए ही एक बच्चे को जन्म दिया था बच्चे को यहाँ नहीं लाई इसलिए।

बाद में वह भी रसोईं घर में आया, बहुत परेशान थका हुआ और उसका चेहरा उदास था। उसके पीछे पीछे नानी थी जो अपने ब्लाउज से आंखें रगड़ रही थी। नाना एक बेंच पर बैठकर झुका हुआ अपना ओंठ चबाने लगा। और नानी उसके सामने गुठनों के बल बैठकर उसे समझा रही थी। 'उसे क्षमा कर दो, मालिक! उसे तुम्हें यों बाहर न ढकेल देना चाहिए। क्या तुमने बहुत बड़े शाही खानदानों या लखपतियों के यहाँ होने वाली इस प्रकार की घटनाओं की चर्चा नहीं सुनी! तुम जानते हो कि औरतें क्या हैं। आओ उसे क्षमा कर दो। संसार में कोई भी निर्दोष नहीं है।'

दिवाल से उँढगकर नाना ने उसे घूरकर देखा फिर यों अट्टहास करके हँसा कि सुनने में लगा कि वह रो रहा हो। उसने कहा, 'अब फिर! अगर तेरे ही तक बात हो तो कुछ भी माफ किया जा सकता है। समझी!' नानी उस पर झुकी और उसका शरीर पकड़ कर हिलाया फिर कहा, 'भले आदमी। अपना मजाक मत बनने दो। यहाँ हमारा जीवन तो जैसे कब्र का जीवन है। हमारे लिए कोई खुशी कोई शांति नहीं है। अगर यही रहा तो शीघ्र ही हम लोग भी भिखमंगे हो जाएँगे।'

फिर नानी उसके बगल में खड़ी हो गई और कहा, 'क्या तुम इससे घबड़ाते हो कि भीख माँगना पड़ेगा। तुम्हें सिर्फ घर में रहना होगा। मैं माँग लाऊँगी। मुझे भिक्षा मिल जायगा तुम चिन्ता मत करो।'

इस पर उसे भी हँसी आ गई। उसने बकरे की तरह सिर हिलाया और नानी ने उठकर नाना को अपनी बाहों में भरना चाहा परन्तु वह बहुत छोटा था।

'अरे तू बड़ी मूर्ख है।' नाना ने कहा, 'केवल तू ही तो मेरे लिए बची है। तुझे सब मालूम है कि इनके लिए हमने क्या क्या पाप नहीं किए और इन्हें देख अब।'

इस बात से मेरा भी जी भर आया। और मेरे आँसू अपना बांध तोड़ कर बाहर आ गए। मैं भट्ठी पर से कूदकर उनके पास आ गया। मेरी सिसकियाँ खुशी की थीं—इनकी इतनी प्यारी बातें सुनकर। उनके दुःख और संतोष के लिए माँ के आने की खुशी के कारण—उनके प्यार के लिए। इसी लिए मैं रो पड़ा था। नाना धीमी आवाज में कह रहा था। 'तो अब तेरी माँ आ गई। अरे' 'तू!'

तभी हम दोनों को दूर करके वह क्रोध में चिल्ला उठा। 'वे हमारा नाश करना चाहते। मेरी ओर से मुंह फेर लिया है।...जा उसे बुला ला। यहाँ क्यों खड़ी है?'

नानी भाग कर गई और नाना सिर झुका कर खुदा से कहने लगा, 'देखो, दया के बादशाह, देखो, हमारे साथ क्या हो रहा है।'

खुदा से जब वह कुछ कहता तो लगता कि वह अपने को खुदा का बड़ा दूत मानता है—यह मुझे अच्छा न लगता।

ज्यों ही माँ रसोई घर में आई कि उसके लाल लबादे की रोशनी चमक उठी। वह नाना नानी के बीच में बैठी और उसकी दोनों बाहें उनके कन्धे पर थीं। वे अब बिल्कुल बदल गए थे। माँ की बातें दोनों बिना रोक-टोक के यों सुन रहे थे जैसे उसी के बच्चे हों। मैं अब तक थक गया था और कुर्सी पर ही सो गया।

उस शाम को नाना नानी ने अच्छे कपड़े पहने और बहुत खुश होकर कहीं गए। जाते समय माँ के सामने खड़े होकर नाना ने कहा, 'देख अपने बाप को, बकरे की तरह लगता है न !' मां हँस पड़ी।

जब हम दोनों अकेले रह गये तब मां ने मुझे अपने बगल में बुला लिया और उसी कुर्सी पर बैठकर पूछा, 'बता तुझे यहां अच्छा लगता है ? मैं समझती हूं अच्छा न लगता होगा।'

'मुझे नहीं मालूम !'

'नाना तुझे बेंत मारता है ? क्यों ?'

'नहीं इतना ज्यादा नहीं।'

'मुझे सब बताओ। जो भी चाहो बताओ। बताओ।'

मैं नाना को बात का विषय नहीं बनाना चाहता था। सो मां ने फिर पूछा, 'कुछ और बताओ।'

मैंने उसे पड़ोस के तीनों बच्चों के बारे में और कर्नल द्वारा वहाँ से भगाए जाने की बात बताई। इसपर उसके हाथ कस गए और उसने कहा 'अजीब बात है।' और शून्य दृष्टि से जमीन पर देखती रही।

'नाना तुम पर नाराज क्यों था ?' मैंने पूछा।

'मैंने जो किया है उसे वह बुरा समझता है।'

'जो कि तुम बच्चे को नहीं लाईं इसलिए ?'

उसने मुझे घूर कर देखा, अपने होंठ दाबे फिर हँस कर मुझे गोद में तेजी से कस लिया। 'अरे बदमाश ! इस बात के लिये तुझे मुँह बन्द रखना होगा। समझे ? एक शब्द भी नहीं। बल्कि जो भी तूने सुना है सब भूल जा।'

फिर बड़ी देरी तक वह मुझे वह बातें बहुत गम्भीरता से बताती रही। जो मैं समझ न पाया। फिर पूछा, 'तू कब सोता है?'

'मुझे कुछ देर यहाँ और रहने दो।'

'हाँ ठीक तू तो पहले ही सो चुका है।' उसने जैसे याद कर कर लिया हो।

'क्या तुम कहीं जाने की सोच रही हो?'

'कहाँ?' उसने यों कहा और मुझे प्यार भरी आंखों से देखा कि मैं भी रुआँसा हो गया।

'आखिर क्या बात है?' उसने पूछा।

'मेरे गले में दर्द है।' दर्द तो दिल में था कि मुझे जाने क्यों यह विश्वास था कि माँ बहुत कम समय के लिए आई है।

'तू अपने बाप की तरह हुआ जा रहा है।' उसने कहा, 'क्या नाना ने तुझे उसके बारे में बताया है?'

'हाँ!'

'दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे।'

'मैं जानता हूँ।'

मां ने उठकर रोशनी बुझा दी। और कहा 'अब ठीक है।' अंधेरे में चांदनी के प्रकाश में सब दिखाई पड़ रहा था—धुँधला।

'जब तुम यहाँ नहीं थीं तो कहाँ रहती थी।'

उसने किसी शहर का बहुत याद करके नाम लिया। जैसे उसे वह भूल चुकी थी।

'तुमने यह कपड़ा कहाँ लिया।'

'मैंने बनाया। मैं सभी कपड़े खुद सीता हूँ।'

मैं चाहता था कि मेरी मां सबों से भिन्न हो पर इतनी नहीं कि जब मैं कुछ पूछूँ तभी मुंह खोलती थी। थोड़ी देर के बाद उठ कर वह बैठ गई। हम और वह दोनों ही बड़ी देर तक एक दूसरे से चिपके बैठे रहे। फिर जब वे आ गए। उस दिन बहुत अच्छा खाना बना जैसे त्योहार हो और खाने के समय सभी इस प्रकार धीरे धीरे बोल रहे थे जैसे पास ही कोई सो रहा हो।

उसके बाद ही मां ने मुझे रूसी पढ़ाना शुरू किया। मां मेरे लिए कुछ किताबें लाई थी जो मैं शीघ्र ही पढ़ने लग गया। वह एक कविता सदा पढ़ाती वह यह है—

एक चौड़ी सड़क लम्बी सड़क
खेतों से आगे, मनुष्य का निवास
किसी कुदाल से बराबर नहीं हुआ,
इसे तो धूल की परतों ने बनाया है।

मैं इसमें एक शब्द का ठीक उच्चारण न कर पाता था। माँ ने बिगड़ कर कहा, 'रुक कर सोचलो। फिर समझ में आ जायगा।'

मुझे भी आश्चर्य है कि आखिर मैं उस शब्द को ठीक क्यों नहीं कह पाया। मुझसे अधिक मां को आश्चर्य था। वह अब उठी और मुझे कुन्दजेहन कहने लगी। यह सुन कर मुझे बहुत कष्ट हुआ क्योंकि मैंने उसे याद करने की हर प्रकार से कोशिश की। मैं अपने मन में जब दुहराता तब तो ठीक रहता परन्तु ज्योंही मैं शब्द को मुँह से बाहर लाता कि मेरी जीभ गड़बड़ा जाती। तब मैंने फिर उससे मिलते जुलते बहुत से शब्दों को याद किया और किसी प्रकार उस पर विजय पाई।

एक दिन पढ़ाई के समय जब मां ने पुनः पूछा तो मैंने गलत सलत बता दिया। जिसके माने ही बिल्कुल दूसरे थे।

खीझ कर माँ उठ गई। टेबिल का किनारा पकड़कर बोली 'तू क्या बके जा रहा है?'

'मुझे नहीं मालूम।' मैंने उत्तर दे दिया।

'तुम सब ओर अच्छी तरह जानते हो।'

'हाँ थोड़ा थोड़ा।'

'क्या थोड़ा थोड़ा?'

'कुछ बहुत प्यारा।'

'जा कोने में खड़ा हो।'

'क्यों?'

'जा कोने में खड़ा हो' उसकी आवाज बहुत गम्भीर थी।

'किस कोने में?'

उसने उत्तर तो न दिया परन्तु उसका घूरना इतना अजीब था कि मैं घबड़ा गया। मुझे पता न लगा कि आखिर वह क्या चाहती है। अन्त में निराश हो कर मैंने पूछा, 'मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। कि तुम क्या चाहती हो?'

थोड़ी देर चुप रह कर उसने पूछा, 'क्या कभी नाना ने तुझे कोने में खड़ा नहीं किया?'

'कब?'

'मैं कब की बात नहीं पूछती। क्या उसने कभी भी तुझे कोने में भेजा था?'

'जहाँ तक मुझे याद है, कभी नहीं।'

'ओफ, इधर आ।'

उसके पास जा कर मैंने पूछा, 'तू मुझ पर इतनी नाराज क्यों है?'

'इसलिए कि तू जान कर उस कविता को गलत पढ़ता था ।'

मैंने उसे समझाने की सभी कोशिशें कीं कि जोर से कहने में मैं गलत कह जाता हूँ ।

'तुम ठीक से याद नहीं करते क्यों ?'

मैंने मन में दुहराया । फिर तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब इस बार मैं सब ठीक ठीक सुना गया ।

'जा भाग जा ।' उसने कहा और बैठी कुछ सोचती रही ।

मां मुझे कविता पढ़ाती ही रही और मैं बहुत कठिनाई से उन्हें पचा पाता । अक्सर तो सुनाते समय जानें किस तरह एक शब्द की जगह दूसरा शब्द कह जाता या पूरी लाइन यों भूल जाता कि बहुत कोशिश करने पर भी वह याद न आती एक बार मां ने नाना से इसकी चर्चा की तो उसने कहा, 'यह उसकी धूर्तता है, उसकी याददास्त बड़ी तेज है । मैंने उसे प्रार्थना सिखाई थी और वह सीख गया था । उसकी शरारत है । उस पर बेंत पड़नी चाहिए ।'

नानी ने मुझे समझाया, 'तू कहानियाँ याद कर लेता है और गाने भी । गाने और कविता में तो कोई भी अन्तर नहीं, समझे ?'

मैंने देखा कि मैं ही दोषी ठहराया जा रहा हूँ । मैं बहुत ध्यान से कविता याद करता परन्तु खुदा जाने कहाँ गड़बड़ी हो जाती ।

मेरे दरवाजे पर आते हैं, भिखारी
बूढ़े और अनाथ, [illegible]
मैं उन्हें खाना देता हूँ
[illegible] ।'

इसमें मैं जोड़ देता,

पत्रोविना के हाथ उसकी गाय के लिए,
फिर भी अपने लिए शराब लेते हैं।'

रात को नानी के पास लेट कर बहुत थकान के बीच भी मैं बताता कि मैंने आज क्या याद किया है तथा अपनी ओर से क्या जोड़ दिया है। कभी कभी तो उसे भी अच्छा लगता जो मैं जोड़ता परन्तु वह कहती, 'नारियों का मजाक मत बनाओ। उनपर खुदा की मेहरबानी है। ईसा और दूसरे सभी साधू भी भिखारी ही थे।'

तब मैं गुनगुनाता,

'सभी भिखारी लगते हैं मुझे बुरे
और नाना भी।
खुदा मुझे क्षमा करे,
मेरे इस पाप को;
परन्तु नाना सताता है
मुझे हर समय।'

'यह क्या बक रहा है। तेरी जीभ कट जाए।' नानी डाँटती यदि नाना सुन ले तब ....।'

'वह चाहे वह भी सुन ले।'

तब धीरज से तथा दया के स्वर में नानी कहती, 'तू अपने माँ को इस प्रकार न घेर। तेरे बिना ही उसे बहुत बहुत कष्ट हैं।'

'क्या कष्ट हैं?'

'कुछ नहीं। उसका कष्ट तुम नहीं समझ सकते।'

मेरे दिन बहुत बेचैनी में बीतते। क्योंकि माँ जब भी कविता पढ़ाती मेरे लिए कठिनाई अत्यधिक बढ़ती जाती।

गणित मुझे कुछ आसान लगी परन्तु व्याकरण तो जैसे मेरे मान की ही न थी। इन सबों के अलावा जो बहुत अधिक कष्टदायक बात थी वह यह कि नाना के इस घर में मां का जीवन बहुत कष्टकर होता जा रहा था। दिन प्रति दिन वह अत्यधिक उदास होती जा रही थी। वह घन्टों खिड़की पर बैठी बाग की खामोशी देखा करती। इससे उसके दिन बड़े रूखे बीतते।

पढ़ाते समय भी उसकी आँखें मुझपर से हटकर कभी कभी खिड़की या दीवाल पर जा टिकतीं। वह जाने किस धुन में मुझसे प्रश्न करती कि व कभी कभी मेरा उत्तर भी न सुन पाती, यानी इतनी खोई खोई सी रहती कि गुस्सा उसे बहुत जल्दी और अकारण ही आ जाता। इस व्यवहार से मुझे बहुत कष्ट होता क्योंकि मैंने परियों की कहानियों में सुना था कि सभी माँ बहुत प्यारी होती हैं।

कभी कभी मैं कहता, 'तुम्हारा जी नहीं लगता क्या ?'

सुनते ही वह क्रोध में पागल हो उठती। 'तू अपना काम कर।'

थोड़े दिनों बाद हमें पता लगा कि नाना की कोई योजना है जिससे नानी और माँ बहुत अधिक परेशान रहती हैं। अक्सर एक सूने कमरे में नाना व माँ बातें करते। कभी कभी सारे घर को माँ रोती चीखती सिर पर उठा लेती और कहती, 'नहीं मैं नहीं।' और मैं सुनता कि दरवाजा खुलता और नाना भूँकता रहता।

एक रात को यह हुआ। नानी रसोईघर में बैठी बड़बड़ा रही थी और नाना की एक कमीज सी रही थी। जब दरवाजा खुला तो वह चुप होगई फिर आहट लेकर कहा, 'वह किसी पड़ोसी के यहाँ गई है।'

अचानक नाना रसोईघर में आगया। मेरी नानी के सिर पर एक धौल लगाई और कहा, 'तू अपना मुंह क्यों नहीं बन्द रखती ?'

नानी ने बड़ी शान्ति से कहा, 'तुम बूढ़े और बेवकूफ भी हो। समझते हो मैं चुप रहूँगी ? मैं जब भी तुम्हारी किसी योजना का पता पाऊँगी तो उसे सचेत कर दूंगी।'

इस बार नाना ने दोनों घूँसे से नानी के सिर पर प्रहार किया। उसने अपने को बचाने की कोशिश न की बल्कि चीखी, 'अरे मूर्ख आदमी! पीटो, मारो! जितना भी चाहो! मारो! मारो!'

जहाँ मैं खड़ा था वहीं से मैंने तकिया, कम्बल और जूते उस पर फेंकने शुरू किये। परन्तु उसने ध्यान न दिया। वह इतना क्रोधित था। उसने नानी को धक्का देकर गिरा दिया और उसके सिर पर ठोकर मारी और क्रोध में काँपता अपने कमरे में चला गया।

नानी उठी और बेंच पर बैठकर बालों को ठीक करने लगी। जब मैं कूदकर उसके पास गया तो उसने सीधे शब्दों में कहा, 'वह सब तकिया वगैरह जहाँ की हैं वहाँ रख आओ! तूने उसे क्यों फेंका। तेरा इससे क्या मतलब था। वह बूढ़ा बेवकूफ तो अपने होश के बाहर है न!'

फिर वह कराहती हुई मेरे पास आई और सिर नीचा करके कहा, 'देखो तो मेरे सिर में कुछ दुख रहा है।'

उसके बालों को अलग कर के मैंने देखा कि एक बालों वाली पिन चुभ रही थी। एक को निकाला तो दूसरी दिखी। परन्तु तब तक मेरी उँगलियाँ भींग गई थीं, मैंने कहा, 'मुझे डर लग रहा है। माँ को बुलाता हूँ।'

मुझे ढकेल कर उसने कहा, 'क्यों, उसे क्यों बुलाएगा। खुदा की मेहरबानी से उसने यह सब नहीं देखा।'

फिर उसने अपनी ही उँगलियों से दो पिनें और खोजीं और उन्हें निकाल कर मैंने पूछा, 'क्या यही दर्द करता था?'

'थोड़ा दर्द था। कल मैं गरम पानी से सिर धो डालूँगी तब सब ठीक हो जाएगा।'

फिर उसने मुझे समझाया, 'प्यारे, देखो माँ से मत कहना कि उसने मुझे पीटा है। वादा करो। इससे उनके मन में और गांठ पड़ेगी, समझे। वादा करो।'

'अच्छा।'

'भूलना मत! याद कर लो। देखो मेरे चेहरे पर तो कोई निशान नहीं है? बस ठीक। हम लोग इसे अब छुपा लेंगे।'

बहुत गहराई से अनुभव कर के मैंने कहा, तुम बिल्कुल साधू हो! तुम सब कष्ट सह लेती हो और ऊफ भी नहीं करतीं।'

'यह क्या बेवकूफी है? साधू! तुमने कभी कोई साधू देखा है?'

वह काम में लग गई और मैं नाना से बदला लेने की सोचने लगा। नाना ने कभी भी मेरे सामने नानी पर इतना अत्याचार नहीं किया था। मैं अब तक उसके चेहरे को नहीं भूला था—गुस्से से लाल चेहरा, सिर के बाल भी लाल। गुस्से से मेरा भी हृदय भरा था। मैं अपने आप पर भी खीझ खिजला रहा था कि मैंने इस तरह क्यों नहीं पीटा कि नाना को चोट लगती!

कुछ दिनों के बाद । जब मैं कुछ लेकर उसके कमरे में गया तो देखा कि वह छाती खोले जमीन पर झुका कोई कागज पढ़ रहा था। उसके बगल की कुर्सी के पास उसका प्यारा कैलेंडर टंगा था जिसमें हर पृष्ठ पर उसके प्रिय देवताओं के रंगीन चित्र थे। जिनपर उसे नाज था। मैं उन्हें छू भी न पाता था। आज जब नाना उठकर खिड़की के पास गया कि रोशनी में वह कागज को साफ साफ पढ़ ले तो फौरन ही मैंने वह कैलेंडर उतारा और नीचे भागा। नानी की कैंची लेकर मैंने देवताओं के चित्र काटने शुरू किये। परन्तु मैं दो भी पूरा न कर पाया था कि नाना दरवाजे पर खड़ा क्रोध से काँप रहा था, 'किसने तुमसे कहा कि मेरा कैलेंडर ले आ।'

झुककर उसने सभी कटे कागज उठाये और मेज पर उन्हें बिछाया। ज्यों ज्यों वह कागज उठा रहा था उसके जबड़े हिलते जाते, दाढ़ी काँपती जाती और बवंडर की तरह साँस यों चलती कि मेज के कागज उड़ने लगते।

'यह तू ने क्या किया ?' अन्त में उसने कहा और मेरा पांव पकड़ कर मुझे जमीन पर पटक दिया।

नानी आगई और मुझे पकड़ लिया। नाना उस पर भी टूट पड़ा, मैं इसे मार डालूँगा।'

ठीक उसी समय मामी आई और जब उसने नाना को हटाया तो मैं भट्ठी के पीछे छिप गया।

खिसिया कर नाना खिड़की के पासवाली बेंच पर बैठ गया। बोला, तुम सभी मुझे मार डालोगे। तुम सभी मेरे शत्रु हो ' तुम सभी।'

'कितने लज्जाकी बात है !' माँ ने बहुत धीरे से कहा, 'तमाशा बना रखा है।'

जोश में नाना उठा । बेंच को धक्का दिया । फिर आँख बंद कर लिया । मैं जानता था कि माँ के सम्मुख वह तनिक झेंपता है इसीलिये आंख बन्द रखता है ।

"मैं सभी कागज कपड़े पर गोंद से चिपका कर ठीक कर दूँगी ।' माँ ने कहा, 'अब यह पहले से भी अच्छा हो जाएगा । यह तो सड़ गया था ।'

माँ उन्हीं रोषपूर्ण शब्दों में कह रही थी जिसमें वह मुझे पढ़ाया करती थी ! नाना उठा, अपनी कमीज झाड़ी, और थूका फिर कहा, 'लेकिन यह आज ठीक हो जाना चाहिए ।'

दरवाजे की ओर जाते हुए वह रास्ते में रुका और मुझे उँगली दिखा कर कहा, 'और इसे मार पड़नी चाहिए ।'

'जरूर !' माँ ने कहा, फिर मेरी ओर घूम कर पूछा, 'तूने यह सब क्यों किया ?'

'मैं यही करना चाहता था । वह अब नानी को फिर न पीटे नहीं तो मैं उसकी मूँछें काट डालूँगा ।'

नानी ने अपना फटा हुआ फ्राक ठीक किया और कहा, 'तुझे अपना वायदा याद नहीं है क्या ?'

माँ अब मेरी ओर घूमी, 'उसने नानी को कब पीटा है ?'

'क्या वारवरा, उससे यह प्रश्न करते तुझे शर्म नहीं आती ? तुझे इससे क्या करना है ?'

माँ नानी के पास गई और उसे अपनी बाँहों में लेकर कहा, 'ओह मेरी माँ ? ।'

'ओह मुझे छोड़ दे । न, और तेरी माँ ! भाग यहाँ से ।'

दोनों ने खामोशी में एक दूसरे को घूर कर देखा ।

इस बार आने के बाद माँ उस फौजी अफसर की प्यारी सी बीबी की सहेली बन गई थी ! वह उसके साथ पड़ोसियों के यहाँ आती जाती थी । उसमें देखभाल की तोड़ी को कुछ

बहुत सुन्दर महिलाएँ तथा कुछ अन्य अफसर लोग भी थे। नाना को यह कभी पसन्द न था। एक दिन उसने खाने के समय माँ पर चम्मच फेंक कर कहा था, 'अपनी पुरानी आदतों पर फिर आगई ! हम लोगों की रात भर नींद हराम रहती है।'

उसने किराएदारों को निकाल दिया। सामने वाले कमरे के लिए कुछ मेज कुर्सियाँ लाया, 'अब किराएदार न रखूँगा।' उसने घोषणा की।

इसके बाद लोग हमारे यहाँ ही मिलने आते। रविवार और छुट्टियों को नानी की बहन, मातरेना, एक लम्बी नाक वाली सिल्क के लबादे में आई। उसके लड़के भी साथ आए। बासील, जो अच्छे स्वभाव का था और विक्टर जो गहरे रङ्ग के कपड़े पहनता था।

मामा जैक भी अपने गिटार के साथ आया। उसके साथ एक गंजी खोपड़ी वाला, झुककर चलने वाला, घड़ीसाज काला सूट पहने आया। उसे देख कर मुझे एक सन्यासी याद आया। उसके केवल एक आँख थी। वह रंग का काला था। बहुत कम बोलता, 'अपने को अधिक मत तंग करो।'

उसे देखते ही मुझे एक घटना याद आई जो मैं भूल गया था। बाहर जोरों से बैंड बज रहा था। हम लोगों ने देखा कि कुछ सिपाही थे और आदमी काले कपड़े पहने थे। वे एक गाड़ी के आगे पीछे चल रहे थे जो जेल से शहर के पार्क की ओर जारही थी। गाड़ी पर जंजीरों से बंधा एक आदमी रुई की टोपी पहने बैठा था। उसकी छाती पर सफेद अच्छरों से लिखी एक काली तख्ती लटक रही थी। और रह रह कर जंजीरों की आवाज भी आ रही थी। उसकी तस्वीर मुझे याद आ गई जब माँ ने कहा, 'मेरा बेटा !' और

घड़ीसाज से परिचय कराया। मैंने डर कर अपने को पीछे कर लिया।

'अपने आप को तङ्ग मत करो।' उसने इस ढङ्ग से कहा कि मुँह झुककर दाहिनी ओर कान तक खिंच गया। फिर मेरी पेटी पकड़कर मुझे अपने पास खींचा फिर कहा, 'ठीक है, ठीक है।'

मैं उससे छुटकारा पाकर एक चमड़े वाली आराम कुर्सी पर बैठ गया जिस पर आसानी से सोया भी जा सकता था वह इतनी बड़ी थी। नाना बड़ी शान से कहा करता था कि यह कुर्सी कभी राजकुमार प्रुजिन्स की थी। मैं उसी कोने से देख रहा था कि ये वयस्क लोग किस प्रकार खुश बने रहने की कोशिश कर रहे थे तथा वह घड़ीसाज किस प्रकार अपनी भावभंगिमा बदल रहा था। उसका चेहरा छोटा था। जब भी वह हँसता था तो उसके मोटे होंठ बाईं ओर घूम जाते थे। कभी कभी वह अपनी काली छोटी जीभ अपनी मूँछों पर फेर लेता यह मुझे बहुत दिलचस्प मालूम हुआ। और मैं अपनी आँखें उसपर से हटा न सका।

उन सबों ने चा पी उसमें 'रम' भी छोड़ा। उससे एक इस प्रकार खुशबू उठी जैसे जली हुई अफीम हो। उन्होंने कई प्रकार के चीज, मक्खन, बिस्कुट और शहद भी खाया और नानी की पाक-कुशलता की तारीफ की। फिर खूब खा पी कर वे फिर अपनी अपनी कुर्सियों पर आ बैठे। फिर मामा जैक से कहा गया कि वह कुछ सुनायें।

मामा ने फौरन ही झुककर अपना गिटार उठा लिया। उसने उस समय जो भी सुनाया वह बे मौके की चीज थी मुझे वह तनिक भी न भाया। तभी नानी ने कहा, 'जैक, कुछ और सुनाओ, एक जमाने का संगीत, याद है, मार्सेला,

जो हम लोग गाया करते थे।'

अपनी सिल्क की पोशाक को पहराकर रंगरेज की पत्नी ने कहा, 'यह सब पुराने ढङ्ग के गीत हैं।'

मामा ने नानी को यों देखा जैसे उसे वह बहुत दूर से देख रहा हो।'

तभी बहुत रहस्यमय ढंग से नाना ने घड़ीसाज से कहा कि वह मेरी माँ की ओर गौर से देखे। जिसे देखकर उसके चेहरे का अजीब ढंग हो गया।

माँ मालरेना के बच्चों के बीच में बैठी थी। वह बहुत गम्भीरता से वसील से बातें कर रही थी। वह कह रही थी, 'हाँ, उसपर विचार करना होगा।' जबकि विक्टर एकाएक अपने जूते से जमीन पर ठोकर मार कर चीख पड़ा, 'पिता, अन्डी!' और आश्चर्य से रंगरेज की पत्नी ने कहा, 'वह थियेटर का गाना गा रहा है जो अभी देखकर आया है।'

ऐसी तीन शाम की दावतों के बाद एक दिन दोपहर को वह घड़ीसाज आया। मैं माँ के साथ उसके कमरे में था। वह सिलाई कर रही थी कि एकाएक दरवाजा खोलकर नानी डरी हुई आई और तनिक तेज आवाज में फुस-फुसाई 'बारबरा वह आ गया!' और फिर वापस चली गई।

माँ ने सिर भी नहीं उठाया न उधर देखा ही। तभी फिर दरवाजा खुला और इस बार नाना आया। बोला, 'बारबरा कपड़े बदल ले। तुझे जाना है।'

वह बैठी ही रही और उसकी ओर देखे बिना ही पूछा, 'कहां?'

'जाओ भी, खुदा के लिये! बहस की दरकार नहीं है। वह

काफी अच्छा आदमी है। उसकी रोजी भी ठीक है। वह अलेक्स का अच्छा पिता साबित होगा।'

नाना का कहने का ढंग असाधारण रूप से बहुत सीधा सादा था। और अपने दोनों हाथों से अपनी बगल थपथपा रहा था।

बहुत शान्ति से माँ ने कहा, 'मैंने कह दिया कि यह न होगा।'

नाना उसपर हावी हो गया। क्रोध में चीख पड़ा, 'चलेगी या चाहती है कि तेरे बाल पकड़ कर घसीट लिया जाए?'

'तो तुम मुझे उसके पास घसीट ले जाओगे? तुम?' सफेद होकर माँ ने कहा। वह उठ खड़ी हुई। बहुत धीरे से उसने अपने बाल खोल दिये और बोली, 'लो अब घसीटो।'

नाना ने दाँत पीसे। घूँसा तान लिया और कहा, 'बारबरा जल्दी कपड़े बदल लो।'

माँ ने उसे ढकेल दिया। दरवाजे तक गई और कुंडी पकड़ कर पूछा, 'क्यों तुम क्यों, नहीं आ रहे अब?'

'तुझे धिक्कार है।' नाना ने धीरे से कहा।

'मैं मुँहचोर नहीं हूँ!' उसने कहते हुए दरवाजा खोला और नाना ने बढ़ कर उसके बाल पकड़ लिये और अपने घुटने के पास गिरा लिया और बड़बड़ाया, 'बारबरा, तू चुड़ैल! हमारा सत्यानाश चाहती है। तुझे तनिक भी शर्म नहीं है?' तभी वह चीख पड़ा, 'मालकिन, मालकिन!'

नानी पहले से ही माँ के पास में थी। नानी ने खींच कर माँ को पुनः कमरे के भीतर किया और दरवाजे बन्द कर दिया और कहा, 'तुम, बेशर्म, कहाँ ले जा रहे हो?' फिर नाना

पर झुककर उसके शरीर को झिझकोरा और कहा, 'ओफ, तुम बूढ़े राक्षस !'

जब उसे उठाकर कुर्सी पर डाला तो निर्जीव की तरह उसका सिर झूल रहा था।

'और तुम जल्दी से कपड़े पहन लो।' नानी ने कहा।

'लेकिन यह समझ लो कि मैं उसके साथ नहीं जा रही हूँ।'

नानी ने मुझे दूर कर के कहा, 'जा थोड़ा पानी ला।'

दूसरे कमरे से मैं सुन रहा था कोई बैठके में भारी कदमों चहलकदमी कर रहा था। जबकि माँ के कमरे से सुनाई पड़ रहा था, वह कह रही थी, 'मैं खुद कल कहीं चली जाऊँगी।'

रसोईघर में मैं खिड़की पर यों बैठ गया जैसे कोई स्वप्न देख रहा होऊँ। मैं सुन रहा था कि नाना, गाली दे रहा था चीख रहा था। तभी दरवाजा खुला और सब कुछ खामोशी में खो गया।

तभी मुझे अपने काम की याद आई। मैं एक पीतल के बरतन में पानी लेकर भागा कि दरवाजे सेही देखा, घड़ीसाज बैठके से निकलकर बाहर जा रहा था, उसका सिर झुका था और हाथ में बालों वाली टोपी थी। नानी भी हाथ बांधे उसके पीछे पीछे चल रही थी और कह रही थी, 'सब समझ लेना, खुद समझ लेना, बल प्रयोग से प्यार नहीं होता'

थोड़ा रुककर वह बाहर होगया और नानी घूम पड़ी। उसकी आकृति देखकर कहना कठिन था कि वह हँसना चाहती है या रोना। मैं देखकर उसके पास गया पूछा, 'क्या बात है ?'

उसने मुझसे पानी का बर्तन छीन लिया और पानी मेरे पावों पर गिर पड़ा। 'अब लाए हो। दरवाजा बन्द कर लो।' वह वापस माँ के कमरे में गई और मैं वापस रसोईघर में। वहाँ से सुना कि वे यों बातें कर रही थीं जैसे उनका कोई असहनीय बोझ हल्का हुआ है।

फिर एक अच्छे दिन! जंगलों को पार करके जाड़े की धूप की किरणें खिड़कियों की राह आ रही थीं। खाने की मेज सजाई गई। नाना के पसन्द की हरी वोद्का भी लाई गई। मैंने खिड़की से देखा तो चारों ओर बरफ ही दिखी। यहाँ तक कि सभी मकान बर्फ की टोपी पहिने थे। खिड़कियों पर टंगी पिंजड़ों की चिड़ियाँ भी सूर्य की किरणों का आनन्द ले रही थीं। मैना गा रही थी, गौरइया चहक रही थी।

परन्तु इतना होने पर भी पता नहीं क्यों वह दिन मुझे अच्छा न लग रहा था। सब कुछ अस्तव्यस्त मालूम हो रहा था। मुझे लगा कि मैं चिड़ियों को आजाद कर दूं। इसीलिये मैं ज्यों ही उनका पिंजड़ा उतारने चला कि अचानक नानी भीतर आई। वह अपना नाम ले ले कर चीख रही थी और अपना पुट्ठा पीट रही थी। 'धिक्कार है, अकुलिना बूढ़ी बेवकूफ!' कहकर चूल्हे पर से उसने मांस का एक टुकड़ा निकाला, हाथ से जला भाग गिराया और फिर सब जमीन में फेंक दिया, 'सब जल गया। यह सब तेरी ही गलती है। ओफ! तुझे शैतान ले जाये। तुझे मौत आये! उल्लू अपनी आँखें खोल! तेरी किस्मत ही फूटी है!"

और रोती हुई उसने तवा उलट पुलट कर गोश्त को देखा और उसकी उँगलियों पर बड़े बड़े आंसू गिरने लगे।

जब नाना व माँ कमरे में आये तो मेज पर की तश्तरियाँ

में गोश्त के टुकड़े रखते हुये बोले, 'देख, यह सब तेरा काम है।'

माँ चुप थी परन्तु काफी खुश थी। उसने नानी को चूम लिया और सांत्वना के स्वर में कहा कि इसके लिए चिन्ता न करो। नाना भी थक कर बैठ गया और रूमाल से मुँह पोंछने लगा। फिर बोला, 'काफी है। हमारे हिस्से भर को गोश्त ठीक है। वारवरा बैठ जाओ। यह अन्तिम बार है।'

तभी नानी ने तेज आवाज में कहा, 'तुम अपना खाना खाओ। तुम्हारा यही काम बाकी है।'

माँ की तेज आँखें अधिक चमक रही थीं। मुझसे वह बोली, 'क्या तू डर गया था ?'

सचाई यह थी कि मैं डरा तो न था परन्तु कुछ परेशान व चिन्तित था। अब हर रविवार या छुट्टियों को जब गाजे बाजे के साथ दावतें होतीं तो मैं सोचता कि क्या वे वही लोग हैं जो छः महीने पहिले एक दूसरे को टुकड़े टुकड़े काट डालने को तैयार रहते थे। यद्यपि अब मैं इनके प्रत्येक व्यवहार का आदी हो गया था इससे मुझे अधिक चिन्ता न रहती।

धीरे धीरे मैं जान गया कि सभी लोग अब दुःख को खिलौने की तरह खेलकर भूल जाने के आदी हो गए हैं और कष्टों को लेकर अधिक चिन्तित नहीं होते।

ग्यारह

इस घटना के बाद माँ ने सारे घर का काम अपने ऊपर ले लिया। अब वही घर की मालकिन थी। नाना बहुत बूढ़ा और महत्वहीन हो गया था।

अब वह यदा कदा ही घर के बाहर निकलता। अपने कमरे में बैठकर एक पुस्तक पढ़ता रहता जिसका नाम था, 'मेरे पिता की रचनाएँ'। वह उसे सदा ही अपने सन्दूक में रखता था। और एक दिन मैंने देखा था कि उसे छूने से पहले वह हाथ धोया करता था। उस पर लाल चमड़े की जिल्द बँधी थी। शुरू के नीले पृष्ठ पर रंगीन स्याही से लिखा था,

'आदरणीय वसीली काशिरीन को बहुत आदर व सम्मान से।'

इसके नीचे किसी का हस्ताक्षर था जिसे मैं नहीं जानता था। पास ही उड़ती हुई एक चिड़िया का चित्र था।

नाना बहुत सावधानी से चमड़े का एक हिस्सा खोलता, अपना चाँदी के फ्रेम वाला चश्मा पहन लेता फिर खूब लम्बाई से देखता फिर नाक पर उसे अच्छी तरह ठीक करता।

कई बार मैंने पूछा कि वह कौन सी किताब है तब वह कहता, 'यह तेरे जानने के लिए नहीं है। थोड़ा इन्तजार करो। जब मैं मर जाऊँगा तो तेरे लिए छोड़ जाऊँगा। मैं अपना कोट भी तेरे लिये छोड़ जाऊँगा।'

जब वह माँ से बात करता तो बहुत मुलायम बन कर यद्यपि बात ही वह काफी कम करता। जब वह माँ की बातें सुनता रहता तो उसकी आँखें मुझे पीटर, गाड़ीवान की याद दिलातीं। बात को आगे न बढ़ा कर वह कह देता, 'काफी है, जो जी में आवे करो।'

नाना के सन्दूक में बहुत अच्छे अच्छे कपड़े रखे थे।..... सिल्क की कमीजें, फटी हुई साटन की सदरियां, लम्बे सिल्क के लबादे, चाँदी के काम वाले कपड़े। मोती जड़े हुए टोपे; रंगीन रुमाल और अनेक रंगीन कपड़े। कभी कभी वह उन्हें अपने हाथ में टांग लेता, और उनको लेकर माँ के कमरे में जाता, फिर उन्हें टेबुज या कुर्सियों पर डाल देता। माँ को कपड़ों का बेहद शौक था तो वह कहता, 'जब मैं युवा था तब यह कपड़े अधिक सुन्दर व कीमती थे। लेकिन वे लोग अधिक अच्छे थे। वे अब वापस तो नहीं आ सकते। इन्हें देखो यदि तुम्हारे काम आसकें।'

एक दिन माँ अपने कमरे में गई। थोड़ी देर बाद लौटी तो गहरे नीले रंग का बिना बटन का कोट और मोतियों से सजी टोपी पहने थी। नाना के सामने जाकर उसने झुक कर कहा; 'मेरे महान पिता की इसके बारे में क्या राय है?'

नाना आश्चर्यजनक रूप से खुश हुआ। उसके चारों ओर घूमा और हाथों को उठाना फिर कहा, 'वाह बारबरा आज अगर तेरे पास धन होता तो कोई भी बड़ा आदमी तुम्हारे पाँव पड़ता।'

माँ दो घरों में जाकर खूब हँसी मचाती रही। दोनों मैक्सिमोव भाइयों के यहाँ। एक, पीटर खूबसूरत और तन्दुरुस्त अफसर, अच्छी दाढ़ी, नीली आँखों वाला, वही आदमी जिसके गंजे सिर पर थूकने के कारण नाना ने मुझे पीटा था। और दूसरा, एवजीने, लम्बा पर पतला और पीला, जिसकी छोटी दाढ़ी नुकीली थी और आँखें बहुत बड़ी बड़ी। उसके लम्बे कोट में सोने के बटन थे और कंधे पर भी सोने का काम था।

उस साल क्रिसमस का पूरा सप्ताह बहुत अच्छा रहा। माँ रोज शाम को बहुत सुन्दर कपड़े पहन कर अतिथियों का स्वागत करती। और कभी कभी और भी अच्छे कपड़े पहन कर सबों के बीच चमकती सी बाहर जाती। जब कभी वह अपने मित्रों के साथ चली जाती तो घर खाली खाली सा लगने लगता और लगता जैसे घर जमीन में धँसा जा रहा हो तथा हर कोने में सन्नाटा छा जाता। नानी बूढ़ी बत्तख की तरह चारों ओर घूमती रहती। और नाना चूल्हे के पास बैठा अपनी पीठ गर्माता तथा कहता, 'जो भी हो, काफी है। हम लोग परिवार को ही देखें।'

क्रिसमस के बाद माँ ने मुझे और मामा माइक के शश्का को स्कूल भेजा। मामा माइक ने दूसरा विवाह कर लिया था। विमाता को यह लड़का बिल्कुल अच्छा न लगता था सो वह दुर्व्यवहार करती। और नानी के आग्रह से वह हम लोगों के साथ रहने को ही बुला लिया गया था। एक महीने तक स्कूल जाने के बाद जहाँ तक मुझे याद है कि मैं केवल इतना ही कह पाया, 'मेरा नाम पेश्कोव है।' जब भी कोई पूछता तो मैं यही पूरा उत्तर देता। परन्तु मास्टर मुझे अधिक पसंद करते, 'सुनो बूढ़े लड़के, मुझे पूरी बात। मैं तुमसे डरूँगा नहीं।'

मुझे स्कूल से घृणा हो गई परन्तु शाश्का को वहाँ अच्छा लगने लगा। परन्तु एक दिन क्लास में पढ़ाई के समय उसे नींद आ गई और नींद में ही चिल्ला पड़ा, 'नहीं, 'नहीं।' इस पर सभी हँस पड़े और वह चुपचाप उठकर चला आया। दूसरे दिन स्कूल जाते समय स्कूल के पास चौराहे पर वह रुक गया और बोला, 'तुम जाओ, मैं नहीं जाऊँगा। मैं घूमने जा रहा हूँ।'

झुक कर उसने अपनी किताबें बर्फ में गाड़ दीं और भाग गया। यह जनवरी का महीना था, रुपहरी सूरज की रोशनी चारों ओर फैली थी। मैं माँ को धोखा न देने के इरादे से स्कूल गया। दूसरे दिन शाश्का की गड़ी पुस्तकें न मिलीं यह बाहर रहने का दूसरा बहाना था। तीसरे दिन, जाने कैसे नाना को सभी सच बातें पता लग गईं और हम लोग हाजिर किए गए।

रसोई घर में एक गोल मेज पर, नाना, नानी और माँ बैठे थे। हम लोगों से बहुत से सवाल पूछे गए। मैं उस समय के शाश्का के धूर्तता के जवाबों को कभी न भूलूँगा जो नाना को वह दे रहा था।

'तुम स्कूल क्यों नहीं गए?'

'मैं रास्ता भूल गया?'

'रास्ता भूल गए?'

'हाँ मैंने बहुत खोजा, खोजता रहा।'

'लेकिन तुम तो अलेक्सी के साथ गए थे न! वह रास्ता जानता है।'

'लेकिन मैं अलेक्स को भी भूल गया था।'

'उसे भी भूल गए थे?'

'हाँ।'

'सो कैसे ?'

एक मिनट सोचकर शाश्का ने कहा, 'बड़ी तेज बर्फ गिरी और मुझे कुछ भी न दिखा।'

उसके उत्तर से सभी को मुस्कान आई। बात साफ थी। शाश्का भी मुस्कुरा पड़ा। लेकिन दांत पीसकर नाना ने कहा, 'तुमने अलेक्सी की पेटी या हाथ क्यों नहीं पकड़ लिया ?'

'पकड़ा था।' शाश्का ने कहा, लेकिन हवा इतनी तेज थी कि हाथ छूट गया।'

उसकी बातें मुझे भी अच्छी न लगीं।

हम दोनों को मार पड़ी। एक बूढ़ा आदमी जिसका हाथ टूटा था उसे केवल इसलिए नौकर रखा गया कि वह हम लोगों को स्कूल छोड़ आया करे ताकि रास्ते से शाश्का गायब न हो जाय। लेकिन यह सब बेकार था। दूसरे दिन चौराहे पर पहुँच कर शाश्का ने दाएँ पाँव का जूता उतार कर बाएँ तरफ फेंका और बाएँ पैर का दाएँ तरफ और मोजा पहने ही भाग खड़ा हुआ। बड़ी मुश्किल से बूढ़े ने दोनों को खोजा और मुझे भी घर लाया।

उस दिन, नाना, नानी और माँ सारा दिन शहर में उसे खोजते फिरे। अन्त में चिरकोव के शराब खाने में ग्राहकों को नाच दिखाते हुए उसे पकड़ा। वे उसे घर ले आए। परन्तु उसकी बदमाशी के लिए पीटा भी नहीं। उस दिन मेरे सामने उसने अपने पाँवों के घावों को दिखा कर कहा, 'मेरी विमाता और पिता और दादा कोई मेरी फिक्र नहीं करता फिर मैं क्यों उनके साथ रहूँ। मैं दादी से पूछूँगा कि डाकू लोग कहाँ रहते हैं। बस उनके पास जाकर उनके गिरोह में शामिल हो जाऊँगा। ...अब तुम समझ जाओगे कि क्यों··· अच्छा कैसा रहे यदि हम दोनों साथ भाग चलें।'

लेकिन मैं उसका साथ नहीं दे सका। क्योंकि मैंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि मुझे अफसर बनना है। दाढ़ी वाला रोबीला अफसर, जिसके लिए स्कूल जाना आवश्यक था। जब मैंने अपनी योजना उसे बताई तो थोड़ी हिचक के पश्चात वह बोला, 'बुरी योजना तो नहीं है। जब तक तुम अफसर हो पाओगे तब तक मैं डाकुओं का सरदार हो जाऊँगा। फिर तुम हमारा पता लगाओगे और हम दोनों में से एक को किसी दूसरे की हत्या करनी पड़ेगी। परन्तु मैं तुम्हें न मारूँगा।'

'और मैं भी तुम्हें न मारूँगा।'

इस बात पर हम दोनों एक मत थे।

जब नानी आई तो हम लोगों को देखकर बोली, कहो क्या हाल है?'

हम लोगों पर दया दरसाते हुए वह शाश्का की सौतेली माँ को गाली देने लगी।—मोटी नदेमदा, भट्टीवाले की बेटी पूरी विमाता। फिर उसने योगी इओना की कहानी सुनाई जिसे लड़कपन में ही विमाता मिल गई थी।

'इओना का पिता एक मल्लाह था। वह सफेद झील के पास रहता था।'

'अपनी युवा पत्नी के कारण उसकी दुर्दशा हो गई। उसकी पत्नी ने उसे ऐसी शराब पिलाई जिसमें नींद लाने वाली जड़ी मिली थी। जब वह सो गया तो उसे उसने एक बहुत सकरी नाव में डाल दिया जो बिल्कुल कब्र की तरह थी। नाव को खेकर वह झील के बीच में ले गई। वहाँ उसने एक गुप्त गड्ढा खोद रखा था। वहाँ ले जाकर उस चुड़ैल पत्नी ने नाव उलट दी! और बहुत गहरे में उसका पति डूब गया।

'धीरे धीरे वह डाइन किनारे आ लगी। उसने जो

भी बाहर आ कर कहा भले आदमियों ने उसका विश्वास किया और सबों ने दुःख प्रकट किया, 'खेद की बात है कि तुम्हारा दाम्पत्य जीवन इतना क्षणिक रहा। बहुत जल्दी ही तुम्हें वैधव्य का कष्ट सहना पड़ेगा। लेकिन सभी का जीवन तो खुदा के हाथ में है। जब वह किसी पर खुश होता है तभी मौत देता है।'

'लेकिन उस चुड़ैल के सौतेले बेटे को उस पर तनिक भी विश्वास न था न उसके झूठे आँसुओं पर ही। उसने चिल्ला कर कहा, 'ऐ विमाता तू आदमियों को धोखा देने को ही पैदा हुई है। तुम्हारे तमाम मातम में मुझे विश्वास नहीं है। तू जो भी अनुभव करती है वह दुःख नहीं बल्कि खुशी है। तुझे खुदा के सामने परीक्षा देनी होगी। किसी से भी कहो कि ऊपर आकाश में खुली हुई छुरी फेंके और यदि वह निर्दोष है तो छुरी मुझ पर गिरेगी और यदि वह दोषी है तो वही मरेगी।'

'विमाता ने उसे घूर कर देखा। उसकी आँखों से घृणा बरस रही थी। उसने कहा, 'तू बेवकूफ है। तू जूठन है! भला इससे तुझे क्या मिलेगा? उससे तुझे तो कोई उत्तर मिल न जायगा।'

'भले लोग चारों ओर खड़े परेशानी में सोचते रहे कि आखिर इसका क्या किया जाय। उन्होंने पंचायत की और एक वृद्ध तथा सम्मानित मल्लाह आगे आया और बोला, 'मेरे दाएं हाथ में लोहे का चाकू दो। मैं फेकूँगा, देखो किस पर गिरता है।'

'उसके हाथ में चाकू दे दिया गया। यही तो उनका उत्तर था। उसने चाकू फेंका और हवा में चिड़िया की तरह वह उड़ा। अपना अपना शीश उठा कर सभों ने उत्सुकता से ऊपर

देखा परन्तु आश्चर्य की बात कि चाकू वापस न आया। रात हो गई और चाकू न आया।

'झील के ऊपर एक रोशनी छा गई। विमाता ने समझा कि उसकी जीत है। वह खुश होने लगी कि उसी क्षण अचानक छुरी आकर उसकी छाती में प्रवेश कर गई।

'सभी का रक्षक खुदा की इस न्यायकुशलता पर सभी घुटने टेक कर बैठ गये। फिर उस बूढ़े ने इओना को अपना पुत्र बना लिया और फरफेन्ट नदी के किनारे उसे एक आश्रम बनवा दिया।'

दूसरे दिन मैं जागा तो सारी देह में लाल निशान थे। चेचक निकल रही थी। ऊपर के कोठे में सब से अलग मैं लिटा दिया गया। जहाँ आँख मूंदे तथा हाथ पांव मोड़े पड़ा रहता, चुपचाप खामोश। केवल नानी मेरे पास आती और बच्चों की तरह मुझे एक चम्मच से खाना खिला देती। फिर जी बहलाने को मुझे रोज एक नई कहानियाँ सुनाती जो स्पष्ट था कि उसके समाप्त हो रहे खजाने की अन्तिम होती।

एक बार मेरे देह की पट्टियाँ खुल चुकी थीं, केवल हाथों पर बँधी थी ताकि मैं खुजला न सकूँ। मैं बड़ी उत्सुकता से नानी की प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि अपने निश्चित समय से वह आज न आई थी। जिससे मुझे बड़ी चिन्ता हो रही थी। अचानक मैंने देखा कि ऊपर के जिस कमरे में मैं लेटा था उसके दरवाजे पर जमीन में धूल से सनी मुँह के बल, हाथ फैलाए नानी पड़ी थी। उसका सिर यों झूला था कि मुझे उसी पीटर गाड़ीवान की याद आ गई। उसी अंधेरे में एक बिल्ली हरी आँखों से उसे ताकना कर देख रही थी। मैं बिस्तरे से कूदकर खिड़की के जरिए फर्श पर उतर पड़ा। इससे खिड़की का शीशा टूट गया, माँ उसी समय भीतर आई। किसी ने

वहाँ न देखा ! मैं काफी देरी तक बर्फ पर पड़ा रहा। मेरा पाँव तो न टूटा था परन्तु कंधे पर शीशे से खरोंच अवश्य लग गए थे। मैं तीन महीनों तक खाट पर पड़ा घर का शोर सुनता रहा लोगों का आना जाना। दरवाजों का बुरी तरह भड़भड़ाना।

मैं पड़ा हुआ छत पर बर्फीले हवा का चलना भी देखता। दिन में मैं कौवों का चिल्लाना सुनता। रात को काफी दूर से भेड़ियों का मातम मनाने जैसा चीखना भी सुनता। इसी प्रकार इन्हीं गानों के बीच मेरा समय बीतता। इसके बाद बसन्त आया। दिन प्रति दिन गरमी बढ़ती रही। बिल्लियाँ गरमी पाकर छत्तों पर से अपने बच्चों को बुलातीं। आधी पिघली हुई बर्फ अस्तबल की छत पर से गिर रही थी। और घन्टियों की आवाज अधिक साफ हुई जा रही थी।

जब नानी आई तो उसकी सांसों में वोद्का की गंध थी। उसकी सुगन्ध दिन प्रति दिन बढ़ती गई। फिर तो बाद में वह अपने साथ उसे एक बड़े से सफेद प्याले में लाने लगी जिसे वह मेरी खाट के नीचे छिपा कर रख देती और कहती, 'तुम नाना से इसके विषय में एक शब्द भी न कहना, प्यारे बेटे !'

'तुम यह क्यों पीती हो ?'

'अरे वाह ! तुम्हें यह समझने के लिए बड़ी उम्र तक इन्तजार करना पड़ेगा।' कहकर वह एक घूँट पी लेती। अपनी बाहों से मुँह पोछती और एक हँसी हँस कर कहती, 'मुझे बताओ, मेरे बेटे, आज रात को क्या सुनोगे ?'

'आज मुझे मेरे बाप के बारे में बताना।'

'कहाँ से शुरू करूँ ?'

मैं जहाँ से पहली बार उसने रोका था उसे याद दिलाता

और वह यहीं से शुरू करके झरने की तरह शब्दों का स्रोत बहाती रहती।

मेरे पिता के विषय में यह चर्चा कुछ ही दिन पूर्व शुरू हुई थी जब एक शाम बहुत थकी मांदी, दुःखी नानी ने आकर कहा, 'मैंने तुम्हारे बाप को सपने में देखा है। वह सीटी बजाता हुआ खेतों में घूम रहा था। एक चितकबरा कुत्ता मुँह खोले व जीभ लटकाए उसके पीछे दौड़ रहा था। मैं नहीं जानती कि क्यों परन्तु वह मुझे सपने में दिखा है। लेकिन एक बात है मैं उसे बहुत देर तक देखती रही शायद उसकी आत्मा को शांति नहीं मिली।'

उसी दिन से शुरू कर के कई रातों में उसने मुझे मेरे बाप का जीवन चरित बताया जो उसकी कहानियों से तनिक भी कम अजीब न था।

मेरे बाप का बाप एक सिपाही था जो बाद में बड़ा अफसर हो गया था। अपने कर्मचारियों पर वह इतना अन्याय करता था कि बाद में उसे साइबेरिया जाना पड़ा। वहीं मेरा बाप पैदा हुआ था। उसका बचपन काफी खराब बीता, वह कई बार घर से भागा था। एक बार तो उसे खोजने को जंगल में शिकारी कुत्ते छोड़े थे। दूसरी बार अपने बेटे को उसने इस अमानुषिक ढंग से पीटा था कि पड़ोसियों ने उसे छिपा लिया था।

'क्या वे सदा ही बच्चों को यों ही सताते थे?'

'हाँ!' नानी ने उदासी से कहा।

मेरे बाप की माँ बहुत छोटी उम्र में ही मर गई थी। और मेरा बाप केवल नौ वर्ष का था जब उसका बाप भी मर गया। शहर में क्रास बनाने वाले एक व्यापारी के यहाँ वह काम सीखने लगा। परन्तु वहाँ से वह भाग गया और आँधों

को मेले का रास्ता बता बता कर अपनी रोजी कमाने लगा। सोलह वर्ष की उम्र में वह निजनी आया और नाव बनाने वाले एक बढ़ई के यहाँ काम करने लगा। बीस साल की उम्र में वह एक चतुर बढ़ई बन गया और कोबालिन की गली में नाना के घर के पड़ोस की दूकान का वह कर्ताधर्ता बन गया।

'एक दिन बारबरा और मैं बाहर रसभरी (मकोइया) बिन रही थी कि सेब के वृक्ष के नीचे वह हँसमुख युवक खड़ा दिखाई पड़ा। उसका सिर और पांव दोनों नंगे थे। लेकिन वह सफेद कमीज व मखमल की पतलून पहने था। सिर के बड़े बालों को चमड़े की एक रस्सी से बांधे था। इसी प्रकार पहले तेरी मां व बाप ने एक दूसरे को देखा था। इसके पहले ही मैंने उसे एक दिन खिड़की से देखा था और मन में कहा था, 'अच्छा लड़का है।' तभी मैंने उससे कहा, 'कहो क्या बात है, इस रूप में क्यों चले आ रहे हो?'

'और वह [illegible] बैठ कर बड़ी अजीजी से बोला था, 'क्यों [illegible], सब कुछ बारबरा के लिए। खुदा के लिए हमारी शादी करा दो।'

'यह ऐसी घटना थी कि मैं एक क्षण के लिए अपना मुँह न खोल सकी। मैंने चारो ओर देखा, तेरी मां थी। एक सेब के पेड़ के पीछे से वह उसे इशारे कर रही थी। वह इस समय बिल्कुल लाल थी, रसभरी की तरह लाल और उसकी आंखों में आंसू भरे थे।'

'अरे बदमाश!' मैं चीखी, 'यह सब क्या हुआ? बारबरा क्या तू पागल हो गई है? और तुम युवक! तुम कौन हो? कहाँ से आते हो? क्या तू उसे भगा कर ले भागने वाला है?'

'तब तेरा नाना बहुत बड़ा आदमी था। उसने अपने सभी

लड़कों को उनका हिस्सा दे दिया था फिर भी उसके पास चार मकान व काफी रुपया था। कुछ ही दिन पूर्व उसे कामदानी हैट और कामदानी कपड़े भेंट में मिले थे क्योंकि अपनी मन्डली का वह सात वर्षों तक लगातार सरदार था। उन दिनों वह काफी बड़ा दिखता भी था। मैंने तब वही कहा जो मुझे अपने अधिकार के साथ कहना चाहिए था जिससे दोनों उदास हो गए।

'तब तुम्हारा बाप बोल उठा, 'मैं जानता हूँ कि काशिरिन महोदय कभी राजी न होंगे इस लिए हमें भाग जाना पड़ेगा हमें केवल तुम्हारी मदद की आवश्यकता है।'

'मेरी एक भी न सुनी तेरे बाप ने। उसने कहा कि यदि मैं ढेले भी मरूँगी तो भी वह नहीं मानेगा।'

'तब तक बारबरा उसके पास चली गई और उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'बहुत दिनों से शादी का हमने निश्चय कर लिया है—हमारी शादी मई में ही हो ही जानी चाहिए थी। हम लोग तो तभी पति पत्नी बन चुके हैं।'

'पर खुदा, मुझे तो ऐसा धक्का लगा जैसे उन्होंने मुझे धकेल दिया हो।'

नानी हँसने लगी। हँसी से उसका सारा शरीर हिलने लगा। फिर उसने नस सूँघा, आंखें पोंछी और शांति की सांस लेकर कहने लगी, 'अभी तुम यह नहीं समझते। नहीं समझ सके कि शादी क्या बला है। लेकिन यह तो जान ही लो कि शादी के पहले कोई लड़की मां बने यह कितना भयानक है। यह तुम अपने दिमाग में रखलो ताकि बड़े होकर किसी लड़की को बेवकूफ न बनाना। यह बहुत बड़ा पाप है। लड़की जाति से निकाल दी जाएगा और बच्चे को दोगला कहा जायगा। इसे कभी न भूलना! औरतों के प्रति सदा दयालु रहना। उन्हें

दिल से प्यार करना । अपने मौज के लिए ही प्यार मत करना मैं तुम्हें यह बहुत बड़ी सीख दे रही हूँ ।'

'लेकिन जानते हो मैंने क्या किया ? मैंने तेरे बाप को चपत लगाई बारबरा को बाल पकड़ कर घसीट लिया । लेकिन तेरे पिता ने शान्ति से कहा, 'झगड़े से यह तय न होगा ।' और बारबरा ने कहा, 'पहले हमें तय करना है कि क्या किया जाय फिर झगड़ा बाद में होगा ।'

'मैंने पूछा कि उसके पास रुपया है । मेरे पास काफी रुपया है ।' उसने कहा 'लेकिन उससे मैंने बारबरा की अंगूठी बनवाई है ।'

'कितना ?'

'लगभग एक सौ रुबल ।'

'उस समय कठिन दिन थे । चीजों के दाम ऊँचे थे । मैंने तेरी माँ व बाप को देखा । सोचा, कितने बच्चे हैं, भोले हैं दोनों ।'

मैंने अंगूठी को गाड़ दी है । ताकि कोई न देखे । हम उसे बेच सकते हैं ? तेरी मां ने कहा ।'

'दोनों ही अजीब बच्चे थे । किसी तरह हम लोगों ने निश्चय किया कि एक सप्ताह में ही शादी कर दी जाए और मैंने वायदा किया कि पादरी का प्रबन्ध मैं ही करूँगी । पर हम सभी तेरे नाना के डर से कांप रहे थे । फिर भी किसी तरह सब इन्तजाम हो ही गया ।

'लेकिन तेरे नाना के कारखाने का एक व्यक्ति हम लोगों की योजना की गंध पा गया था । वह जासूसी कर रहा था । मैंने सभी अच्छे कपड़े जो अपनी शादी के लिए बनवा सकती थी बनवाया और पहना कर उसे दरवाजे तक ले गई जहाँ तेरा बाप गाड़ी लिए इन्तजार कर रहा था । उसने सीटी बजाई

और फिर दोनो चले गए। जब मैं वापस घर में आई तो वह व्यक्ति मिला और उसने कहा, 'मैं बुरे दिल का व्यक्ति नहीं हूँ। मेरी इच्छा नहीं कि मैं किसमत के रास्ते में जाऊँ। परन्तु मुझे रास्ते से दूर रहने के लिए तुम्हें पचास रूबल देने पड़ेंगे।'

मेरे पास बिल्कुल रुपये न थे। जब होते थे तब भी मैं बचाती न थी सो एक मूर्खा की तरह मैंने कह दिया, 'मेरे पास रुपये हैं ही नहीं। मैं नहीं दे सकती।'

'अगर वायदा करो कि बाद में दोगी तो भी मैं इन्तजार कर लूँगा।'

'लेकिन मुझे रुपये भी कहाँ मिलेंगे कि वायदा पूरा करूँ।' 'क्या धनी पति के पास से चुराना भी कठिन है!'

'लेकिन मैं भी पागल हो गई थी। मैं उसे आसानी से रोक सकती थी परन्तु मैंने उसपर थूक दिया और वह जो भी जानता था वही पुकार पुकार कर बाहर दौड़ने लगा।'

उसने अपनी आंखें बंद करलीं। फिर मुस्करा कर कहना शुरू किया, 'आज भी मुझे याद है कि मैंने कितना खतरा उठाया था। तेरा नाना जंगली पशु की तरह मुझपर टूट पड़ा। उसने पूछा कि क्या उसका मजाक बनाया जा रहा है। सच तो यह था कि बारबरा को लेकर उसने भी एक योजना बनाई थी कि उसकी शादी वह किसी बहुत बड़े व्यक्ति से करने की सोची थी। परन्तु यह तो खुदा ही जानता है कि किसकी गांठ किससे जुड़ेगी।'

'नाना घर भर में यों उछला जैसे उसके कपड़ों में आग लगी हो। उसने आइक जैक और गाड़ीवान को पुकारा। मैंने देखा कि तेरे नाना ने चमड़े का एक सोंटा लिया और आइक ने अपनी बंदूक ले ली। उस समय हमारे घोड़े सबसे अच्छे थे तथा मैंने देखा कि ये उन सबों को रास्ते में ही पकड़ लेंगे।

सो मैंने चाकू से घोड़ों की जोत काट दी। फलस्वरूप वही हुआ जिसकी मैंने आशा की थी। रास्ते ही में जोत खुल गई और तेरा नाना, माइक तथा गाड़ीवान मरते मरते बचे। जब तक गाड़ी ठीक की गई और वे पहुँचते कि तेरे बाप व बारबरा ने पहुँच कर गिरिजा में सकुशल शादी की रस्म पूरी करली।

वहाँ पहुँच कर सभी तेरे बाप से लड़ने लगे परन्तु वह बहुत खुश और मजबूत था। माइक की तो एक ही धक्के में बाँह टूट गई। गाड़ीवान भी घायल हुआ। फिर नाना और वह जासूस भाग आए।'

'यहाँ तक कि जब लड़ाई हो रही थी तब भी तेरे बाप ने अपना मस्तिष्क खराब न किया बल्कि नाना से उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि हममें शान्ति बनी रहे। मैंने वही किया है जो खुदा को मंजूर था।'

'इस पर नाना गाड़ी में वापस आ गया। और वहीं से चिल्ला कर कहा, 'बारबरा, अलविदा! तू अब मेरी बेटी नहीं। न मैं तुझे कभी देखने आऊँगा चाहे तू रहे या भूखी मर जाये।'

और घर आकर उसने मुझे गाली दी और पीटा परन्तु मैं केवल रोई और चुप हो रही।'

'फिर सब समाप्त हो गया। जो भी होना होता है होता ही है। उसने कहा, 'समझी अकुलिना, तेरे अब कोई बेटी नहीं है। याद रखना।'

मैंने सब सुना। मुझे यह कहानी सुनकर आश्चर्य हुआ क्योंकि नाना ने माँ की शादी की बिल्कुल दूसरी कहानी बताई थी। उसने बताया कि उसने शादी रोक दी थी, माँ को घर में बन्द किया था फिर शादी में खुद भी गिरिजा में उपस्थित था। मैंने नानी से यह न पूछा कि

किसकी कहानी सत्य थी परन्तु नानी की कहानी अधिक अच्छी लगी इससे मैंने उसे ही अधिक महत्व दिया ।

कहानी कहते समय नानी यों हिल रही थी जैसे किसी नाव में बैठी हो । जब कहानी अधिक दर्दनाक हो जाती तो उसका हिलना अधिक तेज हो जाता । कभी कभी अपने हाथ वह यों उड़ाती जैसे सचमुच ही कुछ उड़ा रही हो और कभी कभी अपने हाथों से अपनी आँखें मूँद लेती ।

'पहले दो सप्ताह तो,' उसने आगे कहना शुरू किया, 'मुझे मालूम ही न हुआ कि बारबरा व तेरा बाप कहाँ हैं । फिर एक छोटे से लड़के ने नंगे पांव आकर मुझे बताया । शनिवार को मैं बहाना बताकर वहाँ गई । वे काफी दूर स्वेतिन्स्क पहाड़ी के पास रहते थे । जिस कमरे में वे रहते थे वह ऊपर के हिस्से में था और नीचे कोई छोटी सी फैक्टरी थी जहाँ सदा ही शोर होता रहता था । परन्तु उन्हें इसकी चिन्ता न थी । वे दोनों ही बच्चों की तरह खेलते और रहते थे । मैं जो भी संभव था उनके लिए ले गई । चा, चीनी, अनाज, जाम, आटा, और थोड़ा रुपया भी ·······चोरी इतना बड़ा पाप नहीं है । यदि अपने लिये चोरी न की जाये ।

'लेकिन तेरे बाप ने कुछ न लिया, 'हम लोग भिखारी नहीं है ।' उसने कहा और बारबरा ने भी कहा, 'यह सब किसके लिये ?'

'सो मैंने उन्हें समझाया, 'बेवकूफों, मैं भी कुछ हूं या नहीं ? मुझे खुदा ने ही तेरी माँ बनाया है । तू मेरे हाड़ मांस का ही एक हिस्सा है । तू मेरा अपमान क्यों करती है ? क्या तुझे नहीं मालूम कि यदि धरती पर किसी

माँ का अपमान होता है तो स्वर्ग में खुदा की माँ रोने लगती है ?'

'तब तेरे बाप ने मुझे पकड़ कर कमरे भर में घुमाया। सचमुच नाचने लगा। वह कितना मजबूत था—भालू की तरह! और बारबरा—उसे अपने पति पर बड़ा घमण्ड था। मोर की तरह वह फूली न समाती थी। वह सदा उसी पर नजर रखती जैसे कोई उसका नया नया गुड्डा हो और घर का सब काम तो वह यों करती थी जैसे जिन्दगी भर यही करती रही हो! उसकी बातें सचमुच बड़ी मजेदार होती थीं।

'इसी प्रकार महीने पर महीने बीतते गये और तेरे पैदा होने का दिन भी पास आता गया। परन्तु ओफ, तेरा नाना! अजीब है वह भी। एक शब्द भी न बोला। वह यह जान गया था कि मैं उनके पास जाती थी परन्तु वह ऐसा बना रहा जैसे उसे कुछ भी मालूम न हो।

उसने घर में बारबरा का नाम लेने की भी मनाही कर दी थी। इसलिए कोई उसका जिक्र न करता। मैं भी उसका नाम न लेती। लेकिन मैं जानती थी कि कभी न कभी पिता का दिल अवश्य ही भर आएगा। और वह समय आ गया। वह तूफानी रात, लगता था जैसे हजारों भालू खिड़की के पास चिल्ला रहे हों। उस रात मैं और तेरा नाना, दोनों ही सो न सके।

'ऐसी रातें गरीबों के लिए तो बुरी हैं ही, जिनके मन में अशान्ति है उनके लिए भी बुरी हैं!'

'उसी समय तेरा नाना बोल उठा—"ये लोग कैसे हैं? क्या वे ठीक हैं?'

'तुम किसे पूछते हो—बेटी बारबरा को या दामाद मैक्सिम को।'

'तुम यह अन्दाज कैसे लगाती हो?'

'अरे मालिक, छोड़ो इस हठधर्मी को। भला इसमें तुम्हें कोई सन्तोष भी मिलता है या नहीं।'

'वह हँसा—ओफ, बदमाश! फिर थोड़ी देर बाद मेरे बाप के बारे में उसने कहा, 'मैंने सुना है कि वह बेहूदा है। क्या यह सच है?'

'बेहूदा! बेहूदा वह है जो अपना काम न करे और दूसरों के गले पड़े। क्या अपने माइक और जैक बेहूदे नहीं? इस घर में कौन कमाऊ है? कौन रुपया लाता है? तुम! भला उनसे तुम्हें क्या मदद मिलती है?'

'इसके उत्तर में उसने मुझे गालियाँ दीं। मूर्ख और जाने क्या क्या लेकिन मैं चुप रही। वह कहता रहा, 'किसी ऐसे को तूने कैसे स्वीकार किया? तुझे मालूम है कि वह कौन है कहाँ से आया है?' मैंने फिर भी कुछ न कहा। जब वह चुप हुआ तो मैं बोली, 'तुम खुद जाकर क्यों नहीं देख आते? वे अच्छी तरह रह रहे हैं।'

'मेरा जाना बड़ी बात होगी जो सम्मान के खिलाफ है। उन्हें आना चाहिए।'

'यह सुनकर मैं खुशी से चीख उठी। उसने मेरे बाल खींचे और कहा, 'तू क्या समझती है कि मेरे सीने में बाप का दिल नहीं है?'

एक वक्त था, तुम जानो, जब वह बहुत अच्छा था। जब उसने यह सोचना शुरू किया कि वह सब से अच्छा है तो बुरा होगया।'

'और एक छुट्टी के दिन वे आए। तेरी माँ और बाप।

वे नाना के सामने खड़े हो गए। तेरे बाप ने नाना के कन्धे पर हाथ रख कर कहा, 'मैं आज दहेज की बात करने तथा अपनी पत्नी के पिता का सम्मान करने आया हूँ।'

'नाना को इससे हँसी आगई। उसने कहा, 'तू लड़ने आया है। डाकू! मैं चाहता हूँ कि तू यहाँ आकर रहा कर।'

'तेरे पिता ने सीधा उत्तर दिया, 'यह तो बारबरा है। वह जो भी तय करेगी मुझे स्वीकार होगा।'

'और इस तरह शुरू हुआ। तेरे पिता की आंख अच्छी थी—साफ और चमकीली। उसकी भवें बहुत घनी थी। जब वह दोनों भवें मिलाता तो उसकी आँखें छिप जाती थीं। वह घर भर में केवल मेरी बातें मानता था। वह यह जान गया था कि मैं उसे अपने बेटों के अधिक प्यार करती हूं तो वह भी मुझे बहुत प्यार करता था। वह मुझे अपनी बाहों में उठा लेता और कमरे भर में नाचता व कहता, 'तू मेरी सगी माँ है। तू तो धरती की तरह महान है। मैं तुझे बारबरा से भी अधिक चाहता हूँ।' और तेरी माँ जब खुश होती तो...ओफ! हम तीनों बहुत ही खुश थे। हम जानते थे कि खुशी किसे कहते हैं। वह अच्छा नर्तक भी था और उसने बहुत अच्छे अच्छे गाने भी अन्धों से सीख रखे थे। तुम जानते हो न कि अन्धों से अच्छा गवैया कोई और नहीं होता।'

'वहीं घर के बाहर वाले बगीचे के कमरे में वे रहने लगे। वहीं एक दोपहर को तू पैदा हुआ था। जब दोपहर को खाना खाने तेरा बाप आया तो तू उसके स्वागत को पैदा हो चुका था। वह बहुत खुश हुआ। उसे यह अनुमान तो था नहीं कि बच्चे जनने में क्या कष्ट होता है। उसने मुझे रास्ते से ही लौटा दिया कि मैं नाना से कह आऊँ कि उसके एक और नाती हो

गया है। नाना भी उस पर हँसा था—'मैक्सिम ! तू कितना शैतान है ?'

'लेकिन तेरे मामा उसे पसन्द न करते थे। वह शराबी न था। बातों में खरा था और वह खूब धूर्तता करता था। एक बार अचानक तेज आँधी चली ! हम सभी घबड़ा गए।'

'फिर जिस प्रकार अचानक वह शुरू हुई थी बन्द भी हो गई। इससे हम सभी खूब डर गए। तेरे नाना को शक हो गया। वह चीख पड़ा, 'अवश्य ही यह मैक्सिम की धूर्तता है। बाद में पता लगा कि कई बोतलों से उसने यह आवाज बनाई थी। नाना ने उसी दिन उसे डाँटा, 'याद रख तेरी यही करामातें तुझे पुनः साइबेरिया वापस ले जाएँगी।'

'जाड़ों के दिनों में अचानक जंगलों से कुछ भेड़िए शहर में आ गए, कुत्ते मरने लगे। घोड़े भी मरे और एक दो पहरेदार भी घायल हुए। सारे शहर में सनसनी फैल गई। तेरा बाप बर्फ वाले जूते पहन कर बंदूक लेकर निकल गया और दो को मार लाया। उसने उनके चमड़े निकाले। सिर में भूसा भरा। शीशे की आंखें लगाईं। सब कुछ बहुत सफाई से किया। जब तेरा मामा माइक उधर निकला तो भाग आया। डर के मारे उसके रोयें खड़े थे। आंखें भयभीत थीं—बड़ी मुश्किलों से उसने कहा, भेड़िया !' सभी जो पाया लेकर मारने दौड़े। वह भेड़िया संदूक पर सिर रखे बैठा था। उस पर गोली छोड़ी गई फिर पता लगा कि वह क्या है ! तेरे बाप की इस करामात ने सचमुच नाना को रुष्ट कर दिया।

तेरा मामा जैक उसमें कुछ दिलचस्पी लेता था। उन लोगों ने नकली चेहरे लगाकर रात को खिड़कियों से झांक झांक कर शहर भर को डराना शुरू किया। एक पादरी को डराया वह

भाग कर सिपाही के पास चला गया। सिपाही भी डर गया। मैंने और बारबरा ने बहुत समझाया कि यह बन्द करो। लेकिन वे अपने ही मन का करते रहे। तेरा पिता इस प्रकार के करामातों में बहुत मजा लेता।

'लेकिन अपनी दवा का उसे ही स्वाद मिल गया। माइक सदा ही नाना के पास रहता था। उसने एक योजना बनाई। जाड़े के प्रारम्भ में वे चारों चले आ रहे थे। तेरा बाप दोनों मामा और एक अन्य व्यक्ति। रास्ते में ही सलाह कर के वे लोग इस इरादे से बर्फ की ओर गए कि तेरे बाप को ढकेल दें।'

मामा लोग इतने बुरे क्यों बन गए थे?'

'ऐसा नहीं कि वे बुरे थे। बस वे बदमाश हैं। माइक कुछ अधिक और जैक कम। उन्होंने उसकी हत्या का पूरा प्रबंध किया था पर वह बच गया। परन्तु खुदा उसकी आत्मा को शांति दे कि जब पुलिस अफसर ने पूछा तो उसने सारा अपराध अपने ऊपर ले लिया—'यह सब मैंने ही किया। मैंने शराब पी ली थी।'

'यह सचाई नहीं है।' अफ़सर ने कहा, 'तू कभी नहीं पीता।'

और जब वह घर आया तब जैक व माइक नहीं आए थे वे एक शराब खाने गए थे। अपनी सफलता पर प्रसन्नता मनाने। तेरी मां व मैंने मैक्सिम को घूर घूर कर देखा। वह बदला हुआ था। उसका चेहरा नीला पड़ गया था। उँगलियाँ फटी थीं और उनपर सूखा हुआ खून जमा था। उसके बाल ऐसे लगते जैसे बर्फ के बने हों।

'तेरे साथ उन्होंने क्या किया ?' बारबरा ने चीखकर पूछा,

'अफसर ने समझ लिया कि कुछ गड़बड़ी है सो उसने कई सवाल पूछने शुरू किये ।

'मैंने बारबरा को अफसर के पास छोड़कर एकान्त में तेरे पिता से पूछना शुरू किया कि क्या बात थी ।

'पहला काम तो यह है ।' उसने कहा कि माइक व जेक से कहो कि वे यही कहें कि उन्होंने मुझे यामस्की गली में छोड़ दिया था । वे पोक्रोवेस्की सड़क की ओर और मैं प्रीब्राडोर्स्की की ओर चला गया था । इसमें फर्क न पड़े अन्यथा पुलिस फँसायेगी ।'

मैं भाग कर नाना के पास गई कि वह जाकर अफसर को बातों में फँसाये रहे और मैं अपने बेटों को इस दुष्टता की कृपा के लिये सब समझा दूँ ।

'नाना उठा कपड़े पहने और कहा, 'मैं जानता था कि यह होगा, जरूर होगा ।'

मैं जब अपने बेटों से मिली तो मैंने अपना मुंह ढाँक लिया था । वे डर गये । जेक ने कहा, 'मैं कुछ नहीं जानता । गलती माइक की है ।'

'लेकिन हम लोगों ने अफसर को समझ लिया था वह भला आदमी था । उसने कहा, 'होशियार रहना मैं जान लूँगा कि क्या गड़बड़ी है ।' कह कर वह चला गया ।

'फिर तेरा नाना तेरे बाप के पास गया, बोला, 'तुम्हें बहुत धन्यवाद । मैं जानता हूं कि तेरे स्थान पर कोई दूसरा होता तो इस समय क्या कहता । बेटी, मैं तेरा कृतज्ञ हूं कि तू ऐसे भले आदमी को मेरे घर में लाई ।' नाना अच्छा भाषण भी दे सकता था ।

'जब मैं और बारबरा अकेले बचे तो बाप रोने लगा, 'माँ, आखिर उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? मैंने उनका क्या नुकसान किया है ?' वह मुझे सदा 'माँ' कहता था। एक बच्चे की तरह।

'मैं भी रो पड़ी। इसके सिवा भला क्या करती ? मैं अपने बेटों पर दुःखी थी। तेरी माँ ने जल्दी में अपनी ब्लाउज के बटन गलत बन्द कर लिये और ऐसी दिखाई पड़ी जैसे लड़ाई से उठी हो। उसने चीखकर कहा, 'चलो जाना चाहिये। मेरे भाई मेरे शत्रु हैं। आगे वे जाने क्या करें। हमें चल देना चाहिये।'

मैंने उसे चुप कराना चाहा। 'आग में कूड़े मत डालो। क्या घर में अभी ही कम धुआँ है ?'

'तभी नाना ने दोनों को भेजा कि तेरे बाप से माफी मांगे। बारबरा उछल पड़ी। उसने माइक को एक चपत लगाई, कहा, 'यों तुम्हें माफ किया जायगा। और तेरे बाप ने कहा, 'भाइयों ! ऐसा क्यों किया ? बिना हाथ के हम कैसे काम कर सकेंगे।'

तेरा बाप सात सप्ताह तक बीमार पड़ा रहा। उसने कहा, 'माँ हम कहीं और चले जाएँ। यह शहर हमारे लिये ठीक नहीं है।

'तभी उसे अस्त्राखान जाने का मौका मिला। जार वहाँ आने वाला था। तेरे बाप को एक शानदार फाटक बनाने का काम मिला। पहली ही नाव से वे चले गए। उनका जाना देखकर मैं रो पड़ी। तेरा बाप भी दुखी था। उसने मुझे भी अस्त्राखान चलने को कहा। बारबरा प्रसन्न थी। इस प्रकार वे चले गए। यही कहानी का अन्त है।'

उसने एक घूँट वोद्का पिया और एक चुटकी नस लिया। फिर खिड़की की राह नीले आकाश को देखकर कहा, 'सचमुच तेरा बाप मेरे ही हाड़ माँस का एक टुकड़ा था।'

जब वह कहानी कह रही थी तब बीच बीच में नाना चिल्ला उठता था—'यह झूठ है।' फिर वह पूछता, 'एलेक्स क्या यहाँ यह शराब पी रही थी ?'

'नहीं।'

'तू झूठा है। मैंने खुद देखा है।' परन्तु रहस्यमयी दृष्टि से देखकर वह चला जाता।

एक दिन कमरे के बीच में खड़ा होकर उसने नीचे देखा और पुकारा, 'मालकिन !'

'क्या ?'

'देखो क्या हो रहा है ?'

'क्या ?'

'तू क्या समझती है ?'

'शायद शादी का प्रबन्ध हो रहा है। तुम किसी बड़े आदमी की बात करते थे ?'

'ठीक।'

'यह रहा वह बड़ा आदमी।'

'लेकिन उसके पास कुछ नहीं है।'

'तुझे क्यों फिक्र पड़ी है'

नाना चलागया तो मैंने पूछा, 'तुमलोग क्या बातें कररहे थे ?'

'तुम सब जान जाओगे। अभी छोटे हो। यदि अभी ही सब जान जाओगे तब बड़े होकर क्या करोगे।'

'ओफ मालिक, मालिक ! अलेक्स, किसी से कुछ न बताना।

तेरा नाना बर्बाद हो गया है। कोई बड़ा आदमी जिसे नाना ने रुपया उधार दिया था दिवालिया हो गया।'

फिर वह गम्भीर हो गई।

'बताओ क्या सोच रही हो ?

'मैं तुझे कुछ बताने की सोच रही हूं। एक राक्षस था। उसका नाम था—इवस्तीगनिया। वह बहुत चतुर था। वह बड़ा घमण्डी था। वह गिरजे को देखकर कहता, कोई ज्यादा ऊँचा नहीं। गली को देखकर कहता—चौड़ी नहीं है। एक रात उसके यहाँ शैतान आया। उसने कहा—'अरे तुझे मैं नरक में ले चलूँगा तब बताना कि वहाँ गरमी है या नहीं ? इसके पहले कि वह उठे शैतान ने उसे घसीटना शुरू किया। नरक की गरमी से वह लाल हो गया पर शान के मारे बोला नहीं। ठीक उसी तरह तेरा नाना है। अच्छा जा सो जा।'

माँ कभी कभी पर बहुत कम आती। बहुत कम समय को आती। कम बोलती। परन्तु दिन पर दिन वह सुन्दरी होती जा रही थी। उसके कपड़े अच्छे होते। उसमें मुझे परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। नानी भी बदल रही थी। इससे मुझे लगा कि कुछ होने जा रहा है जो मुझसे छिपाया जा रहा है। इससे मैं परेशान रहने लगा।

नानी की कहानी अब मुझे अच्छी न लगती। एक दिन मैंने नानी से पूछा,

'आखिर क्यों मेरे बाप की आत्मा अशान्त है ?'

'मैं क्या जानूं !' कहकर उसने आँखें बन्द कर लीं। 'यह खुदा के हुक्म की बात है।'

रात को मुझे नींद न आती और मैं खिड़की की राह नीले आकाश में खिले सितारों को देखता। मेरे मन में एक कथा-

नक ने घर कर लिया । जिसका नायक मेरा बाप था। अकेला व्यक्ति, हाथ में डंडा । संसार की सड़क पर अकेला चलता हुआ । उसके पीछे एक तेज व बहादुर कुत्ता भी । बस !

बारह

एक दिन शाम को मुझे थोड़ी झपकी लग गई। मुझे लगा कि मेरे पांव सुन्न हो गए हैं। परन्तु ज्योंही मैंने पांव खाट के नीचे रखा कि लगा हाँ ठीक है और मैं चल सकता हूँ। यह विचार आते ही खुशी से मैं उछल पड़ा और खड़ा होने की कोशिश करने लगा। मेरे पाँव मेरा पूरा बोझ न सम्हाल सके। फिर भी सहारे से मैं नीचे गया और इस कल्पना में ही खुश था कि मुझे नीचे देखकर सभी हैरानी में आ जायँगे।

मैं हाथ व घुटनों के बल माँ के कमरे में गया परन्तु वहाँ अतिथि थे। उनमें से एक हरे कपड़े पहने महिला भी थी। सभी चुप थे परन्तु वही बोल रही थी, 'उसे चा पिलाओ और उसका सिर भी ढँक दो।'

उसके सभी कपड़े हरे थे। यहाँ तक कि हैट भी जिससे उसका चेहरा भी हरा मालूम होता था। उसके बाल भी मुझे घास की तरह ही हरे लगे। उसका ऊपरी ओंठ उठा और

निचला गिरा जिससे उसके हरे दाँत भी दिखाई पड़ गए। उसने उसी समय अपनी आँख बन्द कर ली।

'वह कौन है?' तनिक घबड़ाकर मैंने पूछा।

एक व्यथा भरी आवाज में नानी ने कहा, 'तेरे लिये दूसरी दादी है वह!'

और हँसती हुई माँ ने ईजेने मैक्सीमोव को मेरी ओर भेजकर कहा, 'यह तेरा बाप है।' इसके अलावा भी जल्दी जल्दी में उसने कुछ और कहा जो मैं नहीं सुन सका परन्तु मैक्सीमोव ने आकर मुझपर झुककर कहा, 'मैं तुम्हारे लिये रंग ला दूँगा।'

सारा कमरा उजाला था। तरह तरह की मोमबत्तियाँ जलाई गई थीं। कमरा जगमगा रहा था। खिड़की के बाहरी आकाश में सितारे तैरते से लगे और लगा कि मेरे चारों ओर यह सब तैर रहे हैं।

'यह बेहोश हो रहा है।' नानी ने कहा और मुझे उठाकर दरवाजे के पास लाई। परन्तु मैं बेहोश नहीं हो रहा था बल्कि केवल आँखें मूँद ली थीं। मुझे उठाये ही वह ऊपर चली। मैंने पूछा, 'तुमने मुझे सब क्यों नहीं बताया?'

'काफी है······क्या बताती?'

'तुम सभी मुझे बेवकूफ बनाती हो।'

ऊपर उसने मुझे खाट पर लिटा दिया फिर खुद भी तकिये में मुँह डाल कर रो पड़ी। तू क्यों नहीं रो रहा?' उसने टूटी आवाज में पूछा।

मेरा रोने को जी न था। बाहर घना अँधेरा व ठंडक थी। मेरी आँखों के सामने अब भी हरी चाली सी

मौजूद थी। मैंने सोने का बहाना किया और नानी चली गई।

फिर एक के बाद दूसरे मनहूस दिन बीतते गये। सगाई के दूसरे ही दिन माँ जाने कहाँ चली गई। और घर पर भारी सन्नाटा छा गया।

एक दिन सुबह सुबह नाना ने आकर खिड़की पर जमी बर्फ साफ करनी शुरू की। नानी भी पानी लेकर सफाई करने लगी तभी नाना ने पूछा,

'तुम्हें कैसा लगा ?'

'क्या मतलब ?'

'खुशी हुई या……?'

और उसपर उसने वही उत्तर दिया—'मुझे याद है, काफी है क्या बताऊँ ?'

इन दिनों मैं सीधी सादी बातों को भी बहुत अर्थ-भरी समझने लगा थी। और यदि उनके साथ किसी दुःखी या दूसरे प्रकार की घटना का सम्बन्ध होता तो उनका जिक्र किसी से न किया जाता परन्तु सबों को मालूम रहता।

नाना ने सावधानी से खिड़की के पल्ले हटा दिये। नानी हवा का रुख लेने खिड़की के पास गई। मैं उसी समय बिस्तर छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

'उठ और अभी पाँव दौड़ना मत शुरू कर देना।' नानी ने आगाह किया।

मैं बगीचे में जा रहा हूँ।'

'रुक कर जाना, अभी जमीन सूखी नहीं है।'

परन्तु मैंने उसकी एक न सुनी। सचाई तो यह थी कि नानों की सभी बातें मुझे बुरी लगतीं। बागीचे में घास

की पीली नई पत्तियाँ निकल आई थीं। सेब में फूलों की कलियाँ खिलने वाली थीं। चारों ओर चिड़ियाँ चहक रही थीं। गड्ढे के पास जहाँ गाड़ीवान पीटर रहता था वहाँ अब ऊँची ऊँची घास उग आई थी। मुझे वह अच्छी न लगी। मैंने मन में सोचा वह स्थान साफ करके गर्मियों में अपने इस्तेमाल के लिए बना लूँ ताकि बूढ़ों से दूर रह सकूँ। मैंने फौरन ही अपने विचार को कार्य रूप में परिणित करना शुरू किया। मैं बहुत गम्भीर होकर सोच रहा था।

'यह मुँह क्यों फुलाये है ?' माँ व नानी ने पूछा। मुझे कोई उत्तर न सूझा क्योंकि यह बात तो थी नहीं कि मैं किसी पर क्रुध था परन्तु घर के सभी लोगों से जाने क्यों मुझे नफरत होती जा रही थी।

दोपहर के खाने, नाश्ता व चा के समय लगभग प्रतिदिन ही वह हरी दिखाई पड़ने वाली बुढ़िया आ जाती। उसकी शक्ल मुझे बहुत अधिक बनावटी मालूम होती। वह अजीब ढंग से खाना भी खाती। उसके दाँत घोड़ों के दाँतों की तरह थे। खाते समय उसके कानों के ऊपर की हड्डी लुढ़कते गेंद सी लगती।

लेकिन वह और उसका लड़का दोनों बहुत साफ सुथरे थे। इससे उनका सामिप्य मुझे बुरा न लगता। फिर भी पहले दिन ही जब उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया तो मैं भाग गया था। इसपर वह अक्सर अपने बेटे से कहती, 'इजेने, उस लड़के को शिष्टाचार का ज्ञान नहीं है। समझे ?'

कुछ भी हो, मैं पूरी तरह उन्हें पसन्द न कर सका।

एक बार खाने के समय उसने अपनी आँखें नचाकर कहा, 'अरे, अलेक्स, तुम कैसे खाते हो? इतने बड़े बड़े ग्रास! खाना सीखो।'

मैंने मुँह का ग्रास बाहर निकाल लिया। फिर से काँटे में खोंसा और उसकी ओर बढ़ाकर कहा, 'लो, लेकिन सावधान, गरम है।'

माँ ने मुझे गिरा दिया। मुझे बड़ी ग्लानि हो रही थी परन्तु नानी ने मेरा साथ दिया। वह मुँह बन्द करके हँसी फिर कहा, 'सचमुच बहुत बदमाश है।'

मैं भाग कर ऊपर छत पर चला गया और चिमनी से लग कर बैठ गया।

एक दिन अपने भावी सौतेले बाप व सौतेली दादी की कुर्सियों में मैंने ग्रीस और सिरका पोत दिया जिससे दोनों ही अपनी कुर्सी पर बैठते बैठते उछल पड़े। यह बहुत मजेदार दृश्य था। उस दिन नाना द्वारा मुझे मार पड़ी। उसके बाद माँ बहुत व्यथित होकर मेरे पास आई। मुझे अपने पास खींच कर घुटनों से लगाकर खड़ा किया और कहा, 'सुनो! तेरे मन में इतनी घृणा क्यों भर गई है? काश, कि तू जानता कि इससे मुझे कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है।' और उसने ज्योंही मेरा सिर अपने गालों से लगा लिया कि उसके आँसू मुझ पर बरस पड़े।

इससे सचमुच मुझे आन्तरिक कष्ट हुआ। इससे अच्छा होता कि मुझे चाहे मार पड़ जाती। मैंने वायदा किया कि फिर कभी मैकरोसोव परिवार को तंग न करूँगा।

उसने बहुत प्यार से कहा, 'उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। हम लोगों की जल्दी ही शादी हो जायगी तब हम लोग मास्को चले जायेंगे। और जब वापस आवेंगे तब तुम्हें हमारे

पास रहना पड़ेगा। इजेने अच्छा लड़का है, होशियार भी है। तुम दोनों साथ रहोगे। तुम भी स्कूल जाने लगोगे फिर उसी की तरह बन जाओगे। फिर तुम डाक्टर बनोगे या जो भी चाहोगे। जो भी तुम सीखोगे तुम्हारा ही लाभ होगा। अब भाग जाओ और खेलो।'

भविष्य का जोभी स्वप्न उसने मुझे दिखाया वह मुझे बहुत सुनसान मालूम हुआ। मुझे वह बिलकुल अच्छा न लगा। मेरा मन हुआ कि मैं माँ से कह दूँ, 'शादी मत करो माँ, मैं तुम्हारा भार सम्हाल लूँगा।' परन्तु मैं न कह पाया।

बगीचे में मैं अपने लिए जो गृह निर्माण कर रहा था वह काफी उन्नति पर था। मैंने ऊँची ऊँची घास काट डाली। फर्श पर ईंटें बिछा दीं ताकि फिर घास न निकले।

'यह ठीक किया।' एक दिन नाना ने कहा। उसने मेरे काम का निरीक्षण किया। 'तुमने तो केवल घास काटी है। उसकी जड़ कहाँ निकाली? जा फावड़ा ले आ मैं खोद दूँ।'

मैंने फावड़ा ला दिया उसने कहा, 'मैं खोद रहा हूँ। तुम जड़ निकालते चलो। हां तेरे लिए मैं यहाँ कुछ अच्छे फूल के बीज बो दूँगा।' कहकर वह रुक गया और खामोश खड़ा शून्य में निहारता रहा।

मैंने उसे घूर कर देखा तो पाया कि उसकी छोटी छोटी आँखों से आँसू बरस रहे थे। मैंने पूछा, 'क्या हुआ नाना!'

उसने अपने को झिझकोरा। अपने हाथ से ही आँसू पोंछ लिए, 'योंही।' कहा और फिर खुदाई में लग गया। परन्तु कुछ क्षणों के पश्चात् कहा, 'तेरा सभी काम बेकार है। मैं शायद शीघ्र ही यह घर बेच दूँ। तेरी माँ के दहेज के लिए मुझे रुपयों की जरूरत है। हम लोग सोचते हैं कि शायद इससे तेरी माँ की खुशी लौट आये। खुदा उस पर रहम करे।'

अचानक फावड़ा फेंककर वह स्नानघर के पीछे की ओर चला गया। मैं खोदता रहा। पहला ही फावड़ा जो चलाया उससे मेरा अँगूठा कट गया। फलस्वरूप मैं माँ की शादी में गिरजा न जा सका। मैं केवल दरवाजे तक आकर उसे देखता रहा, वह मैक्सीमोव की बाहों में थी और उसकी आँखें धरती पर गड़ी थीं।

शादी बहुत ही खामोशी से हुई। शादी के बाद वे गिरजा से वापस आकर चा की मेज पर बैठे। सभी बहुत थके से लग रहे थे। माँ ने शादी वाले कपड़े उतार दिये थे। वह कमरे में अपना सामान बाँधने गई। मेरे पास आकर मेरे सौतेले बाप ने कहा, 'मैंने तुम्हें रंग देने को कहा था न, यहाँ अच्छे रंग नहीं मिलते मैं तुम्हें मास्को से रंग लाकर दूँगा।'

'मैं उसे लेकर क्या करूँगा।'

'तुम्हें क्या रंग की तस्वीरें बनाने का शौक नहीं।'

'मैं बनाना नहीं जानता।'

'तब मैं तुम्हारे लिये कुछ और लाऊँगा।'

माँ वापस आई। 'हम लोग जल्दी ही लौटेंगे।' उसने कहा, 'तुम्हारे बाप को वहाँ एक इम्तहान देना है। जब पढ़ाई समाप्त हो जायगी तभी हम लोग आ जाएँगे।'

उनका इस प्रकार बातें करना मुझे अच्छा लग रहा था क्योंकि वे मुझे यों समझा रहे थे जैसे मैं काफी बुजुर्ग होऊँ। परन्तु कोई दाढ़ी वाला व्यक्ति पढ़ने जाए यह सुनकर मुझे कुछ अजीब सा लगा।

'क्या पढ़ाई कर रहे हो।' मैंने पूछा।

'जमीन की नाप जोख की।'

इसके अर्थ मैं न समझा न आगे पूछा ही। इसके बाद

घर भर में भारी खामोशी छाई रही। नाना चूल्हे की ओर पीठ करके बैठा खिड़की पर घूर रहा था। वह हरी वाली औरत माँ को सामान बाँधने में मदद दे रही थी। नानी कहीं दिखाई न पड़ती थी वह कहीं शोकाकुल बैठी थी। शायद दोपहर से शराब पीकर कमरे में बैठी थी।

माँ बहुत सबेरे ही चली गई। जाते समय मुझे जमीन से उठाकर अपनी गोद में ले लिया। परदेसी की सी दृष्टि से मुझे घूरा फिर चूमा और विदा लिया।

'इससे कह दो कि मेरी बातें मानेगा।' नाना ने आकाश की ओर देख कर कहा।

'नाना का कहना मानना।' माँ ने मुझे शिक्षा दी।

मैं उससे कुछ और कहने जा रहा था परन्तु नाना ने रोक दिया—इससे उसपर मुझे गुस्सा आया।

गाड़ी में चढ़ते समय माँ का फ्राक किसी कीली से फँस गया जिससे क्रोध में आकर उसने फ्राक को खींचना शुरू किया। 'उसकी मदद कर। खड़ा क्यों है? अंधा है क्या?' नाना ने मुझे डाँटा। परन्तु मैं हिल भी न पाया। वेदना से मैं बिल्कुल असहाय सा बन गया था।

मैकसीमोव नीला पतलून पहने था। माँ ने उसे कुछ बण्डल दिये जिसे उसने अपनी गोद में रख लिए। वे काफी थे। उसका पीला चेहरा लज्जा से झेंप गया और उसने कहा, 'इतना काफी हैं बहुत हैं।'

दूसरी गाड़ी में वह हरी बुढ़िया और उसका बड़ा लड़का। जो फौजी अफसर था—बैठे।

'तो तुम्हें लड़ाई पर जाना है?' नाना ने पूछा।

'हाँ।'

'यह बहुत अच्छी बात है। तुर्कों को मार पड़नी ही चाहिये।'

जब वे चल पड़े। तब कई बार घूमकर माँ ने रूमाल हिलाया। दिवाल के सहारे खड़ी नानी भी हाथ हिलाती रही। नाना ने आँखें पोंछकर टूटती आवाज में कहा, 'यह सब बेकार है, इससे कोई लाभ न होगा।'

अपने फाटक पर खड़ा मैं गाड़ी को तब तक देखता रहा जब तक वह मुड़कर विलीन न हो गई। मुझे लगा जैसे मेरे अन्तर का कोई दरवाजा बन्द हो गया। अभी काफी सवेरा था। सभी के घरों की खिड़कियां बन्द थीं। गली में सन्नाटा था।

'कुछ नाश्ता कर लेना चाहिये।' मेरे कन्धे पर हाथ रख कर नाना ने कहा, 'ऐसा लगता है कि तुझे मेरे ही साथ रहना पड़ेगा।'

उस दिन हम लोग पूरी तरह बाग में ही फँसे रहे। नाना ने रसभरी की झाड़ी काटी, बेल की कलम लगाई। मैं भी साथ साथ लगा रहा।

'यह तेरी अच्छी आदत है कि तू अपने लिए अपना काम करने का आदी है।' नाना ने कहा।

मैं नाना की बातों को ध्यान से सुनता और मनन करता। अक्सर बेंच पर लेट जाता जिसपर मैंने चटाई बिछा दी थी। वह मुझे बातें बताता।

'अब तू अपनी माँ से सचमुच दूर हो गया है। उसे दूसरे बच्चे होंगे। जिनका उसके लिये तुझसे अधिक महत्व होगा।'

फिर क्षण भर रुक कर उसने कहा, 'तेरी नानी ने शराब पिया है। इसके पहले दो बार उसने शराब पी थी। एक

जब माइक फौज में गया था । परन्तु वह निकाल दिया गया । अगर वह फौजी बन जाता तो उसका जीवन दूसरे ही तरह का होता । पर ·· तू ···! मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा । इसके माने हैं कि तुम सबों को अपने पाँव पर खड़ा होना पड़ेगा । तुम्हें अपनी जीविका कमानी पड़ेगी । समझे ! सदा अपने आप पर भरोसा रखो तथा दूसरे के आश्रित मत बनो । दूसरों से दोस्ती रखकर आदरपूर्वक शान्ति से रहना । दूसरे जो भी कहें ध्यान से सुनो परन्तु करो वही जिससे तुम्हारा अपना लाभ हो ।'

मौसम अच्छा रहता तो गर्मियों में मैं बाग में ही रहता । वहीं सोता भी । कभी कभी नानी भी बिस्तर लेकर आ जाती । वहाँ पड़ी पड़ी वह अपनी कहानियाँ सुनाती रहती । 'देखो वह एक तारा टूटा । शायद कोई अतृप्त अशान्त आत्मा ने धरती माता को याद किया है । इसके माने कि कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है ।' या वह कहती, 'एक बड़ी आँख की तरह देखो वह सितारा नया उगा है ।'

'कितनी बेवकूफ औरत है यह !' नाना बड़बड़ाता, 'तुझे सरदी लग जाएगी । या बुखार आने लगेगा । नहीं तो चोर आकर तेरी हत्या कर देंगे ।'

फिर शाम आती । लगता कि शोलों की नदी आकाश से उतरी आरही है । सभी की परछाईं बढ़ जाती ।

फिर रात आती । दिन भर की अच्छी बुरी बात भूल जाती । सिर ऊँचा करके आकाश के सितारों को निहारते हुए लेटे रहना बहुत सुखदाई होता । चारों ओर का अँधेरा गहरा होता जाता । एक के बाद दूसरी ओर भी आवाज आती वह दिन की आवाज से भिन्न होती ।

कहीं किसी स्त्री के हँसने की मधुर आवाज, कहीं कुत्तों के भूँकने की आवाज। परन्तु सब अपने ढङ्ग की अनोखी।

नानी बहुत कम सोती। अपने हाथ के तकिये पर सिर रखे वह कहानी कहती रहती चाहे मैं सुनता या न सुनता। मैं तो उसकी आवाज की मधुरता के साथ ही सो जाता और उठता चिड़ियों की आवाज के साथ। सुबह के सूर्य की किरणें मुझे ढँक लेतीं और मैं उठता। सुबह की ठँडी हवा और सेब पर से गिरती हुई ओस की बूँदें।

मैं अनुभव कर रहा था कि मैं अब कुछ बदलता जा रहा था। मुझे ओवसीनीकोव बच्चों के साथ खेलने की लालच न होती। न मामाओं का आना ही मुझे भाता। उनके आने पर मुझे बाग के अपने छोटे से घर की चिन्ता रहती। कहीं वे उसे नष्ट न कर दें।

मुझे दिन पर दिन नाना की बातों से दिलचस्पी कम होने लगी जिससे अब केवल ओछापन रह गया था। अब तो उसकी यह आदत पड़ गई थी कि वह नानी से लड़कर उसे घर से निकाल देता। और वह माइक या जेक के यहाँ चली जाती। एक बार वह कई दिनों रह गई और नाना को ही खाना पकाना पड़ा। उसने अपनी उँगलियाँ जला लीं। तश्तरियाँ तोड़ डालीं। वह बार बार आकर मेरे छोटे से घर के बेञ्च पर पड़ रहता और कहता, 'इतनी खामोशी क्यों?'

'मुझे खामोशी पसन्द है। क्यों?'

फिर उसका भाषण शुरू होता, 'हम लोग बड़े आदमी न थे। किसी ने भी हमारी शिक्षा की चिन्ता न की। हमें

हमें खुद ही सीखना पढ़ना पड़ा। उनके लिए तो किताबें लिखी जाती हैं। स्कूल बनते हैं। परन्तु हम लोगों के लिये कुछ नहीं।' कहकर वह चुप हो जाता परन्तु मैं परेशान होकर सोचने लगता।

एक दिन सुबह चा के समय उसने अचानक घोषणा की, 'मालकिन ! मैंने अब तक तुम्हें खिलाया पहनाया। अब समय आ गया है कि अपना प्रबन्ध खुद करो।'

नानी ने चुपचाप सुना जैसे बात का कोई महत्व न हो। उसने शान्तिपूर्वक सुँघनी सूंघकर कहा, 'कोई बात नहीं। यदि यही होना है तो होने दो।'

नाना ने एक छोटी पहाड़ी के पास बने घर के सीलदार दो कमरे किराये पर लिये। हम लोग इसी में आ बसे। नाना ने भीतर झाँक कर कहा, तुम्हो मेरा मजाक उड़ाते हो। अच्छा बताऊँगा।'

'देख नाना को कोई कष्ट न देना।' नानी ने कहा। परन्तु नाना उसपर क्रुद्ध ही रहा।

अपने घर की सभी वस्तुएँ एक तातार कबाड़ी के हाथ बेचने में नाना को पूरे तीन दिन तक गाली गलौज और दौड़धूप करनी पड़ी। उन्हें खिड़की से देखकर नानी कभी हँसती कभी रोती और कहती, 'यही तरीका है।'

मैं भी बाग वाले अपने छोटे मकान के लिये रो रहा था।

दो गाड़ियों पर हमलोग सामान लाद कर उस घर से चले।

हम लोग नये घर में आये ही थे कि माँ आ गई। दुबली और पीली। आँखों के नीचे भयानक काला गढ़ा। वह हमें देख रही थी—अपने माँ बाप व बेटे को : जैसे पहली बार देखा हो। लम्बी अवाक टकटकी के बाद

उसने मेरे गालों को छूकर कहा, 'तुम कितने बड़े हो गए?'

मेरे सौतेले बाप ने मुझपर हाथ रखकर कहा, 'कहो बेटे, क्या हाल है। यहाँ बड़ी शीत है।'

दोनों ही बहुत थके थे, जैसे दौड़कर आये हों। उन्हें सभी शङ्का की दृष्टि से देख रहे थे। चा के समय नाना ने पूछा, 'क्या सब चीजों में आग लग गई?'

'हाँ सब कुछ जल गया। सौभाग्य था कि हम लोग बच कर आ गये।'

'देखो! मजाक मत करो।'

झुककर माँ ने नानी के कान में कुछ कहा और नानी चौंक पड़ी।

तभी अचानक ठण्डी सांस लेकर नाना ने कहा, 'जहाँ तक मैंने सुना है आग नहीं लगी थी। बल्कि यह सब जुए में गया।'

सभी चुप रहे। अन्त में माँ ने कराहने के स्वर में कहा, 'पापा—!'

'मुझे 'पापा' मत कहो।' नाना ने डाँटा, 'अब क्या, क्या मैंने पहले नहीं कहा था कि तीस की स्त्री और बीस का पुरुष—ठीक जोड़ी नहीं है। नमूना देख लो। बोलो, अब क्या कहना है।'

फिर चारों ऊँची आवाज में लड़ने लगे थे। सौतेले बाप की आवाज सब से तेज थी। मैं उठकर बाहर आ गया। माँ को मैं देखकर ही अवाक था। जब तक मैं कमरे में था तब तक तो नहीं परन्तु बाहर आकर ही मुझे उसके रूप की याद आई। आज का स्वरूप देखकर मैं हैरान होने लगा।

कुछ दिनों बाद, पूरी बातें तो याद नहीं परन्तु मैंने अपने को सारमोवो के नये वातावरण में पाया। मेरी माँ और मेरा नया बाप सड़क की ओर दरवाजे वाले दो कमरों में रहते थे। मैं नानी के साथ रसोईघर में रहता। पास ही एक फैक्टरी हर समय धुँआ उगलती रहती जिसके फलस्वरूप सारा गाँव धुँआमय रहता। सदा ही जलाइन सी गंध रहती। सुबह के समय भी हम लोग भेड़िये की आवाज सुनते।

एक स्टूल पर खड़े होकर मैं फैक्टरी का दरवाजा देखता। फाटक खुलता तो लगता कि किसी दाँत विहीन भिखारी का मुँह खुला हो। दोपहर को भी फाटक अपनी काली ओठें खोलता तो जैसे चुसे हुये बाहर निकल आते।

नानी सुबह से रात तक काम करती रहती। वह खाना बनाती, झाड़ू लगाती, लकड़ी चीरती और पानी भरती, जब वह बिस्तरे पर लेटती तो थकान से चूर रहती। कभी कभी जब खाना समाप्त हो जाता तो वह अपनी छोटी सी रुई वाली जाकेट पहन लेती और कहती, 'जरा जाकर देख आऊँ बुड्ढा कैसे रहता है।'

'मुझे ले चल!'

'तुझे सर्दी लग जाएगी। देख कैसी बर्फ गिर रही है।'

और वह बर्फ से ढँकी सड़क व खेतों की चार मील की दूरी तय करती।

माँ गर्भवती होने के कारण पीली पड़ गई थी और वह जो शाल ओढ़ती वह मुझे अच्छा न लगता क्योंकि उसमें उसका सौंदर्य दब जाता था। परन्तु उसके आँखों की चमक

आजकल तेज हो गई थी। वह कभी कभी घन्टों सड़क पर ही निहारती रहती।

'हम लोग यहाँ क्यों रहते हैं ?' मैंने पूछा।

'अरे क्या तू चुप नहीं रह सकता ?'

वह मुझसे बहुत कम बोलती केवल काम की बातें, यहाँ आओ, वहाँ जाओ, यह करो, वह करो बस !

मुझे गली में न निकलने दिया जाता। जब कभी मैं बाहर जाता तो अवश्य ही लड़ आता और मुझे मार पड़ती। एक बार मार पड़ी तो मैंने माँ से कहा कि अब मारेगी तो दाँत काट लूँगा और खेत में भाग जाऊँगा जहाँ बर्फ से गलकर मर जाऊँगा। तब माँ ने कहा, तू तो बिल्कुल जङ्गली जानवर बन गया है।'

मेरा नया बाप मुझसे सदा ही कड़ाई से पेश आता और शायद ही कभी मैंने उसे माँ से बातें करते देखा हो। वह अक्सर माँ से लड़ता और उसे बहुत भद्दी तथा अपमानजनक गालियाँ देता। ऐसे अवसरों पर मुझे कमरे से निकालकर वह दरवाजे बन्द कर लेता ताकि मैं सुन न सकूं।

एक दिन मैंने सुना कि अपना पाँव पटक कर वह कह रहा था, 'तेरे पेट के फूले होने के कारण मैं घर पर किसी को बुला नहीं सकता।'

शनिवार को फैक्टरी के दर्जनों मजदूर अपने काम मेरे नये बाप के हाथ बेचने आते थे। वह उन्हें आधे दामों पर खरीदता था। वह मजदूरों को रसोईघर में बुला लेता और एक एक को देखकर कहता,

'चलो, भागो।'

'लेकिन महाशय, मैक्सीमोव, खुदा के लिये।'

'कबल आधा।'

मुझे यह देखकर बड़ी व्यथा होती। मैं नाना के पास वापस गया जो कुनाविन गाँव में एक छोटे से कमरे में रहता था। यह कमरा एक दो मञ्जिले मकान का हिस्सा था।

मुझे देखकर वह ठठाकर हँसा, 'क्या हुआ? माँ सब से अधिक दयालु कही जाती है। परन्तु क्या हुआ?'

मैं पूरा मकान अभी देख भी न पाया था कि नानी मेरी माँ व नवजात शिशु को लेकर आई। मेरे सौतेले बाप के मजदूरों द्वारा कूपन खरीदने के कारण उसे फैक्टरी से निकाल दिया गया था। परन्तु रेलवे के टिकट आफिस में उसे नया काम मिल गया था।

इस प्रकार फिर मैं माँ के साथ रहने को विवश हो गया। फौरन ही मुझे स्कूल भेजा गया जो मुझे बिल्कुल पसन्द न था। मेरे स्कूली कपड़े नाना व माँ के पुराने कपड़ों से बनाये जाते। मैं स्कूल में कभी भी वहाँ के लड़कों से दोस्ती न कर पाया।

मेरा मास्टर बीमारी से पीला हो रहा था तथा उसे नासिका फूटने की बीमारी थी। वह दर्जे में आता तो नाक में रुई भरे रहता। कई दिनों तक प्रारम्भ में दर्जे के लड़कों में मैं सब से आगे बैठाया जाता। मास्टर सदा मुझपर आँखें गड़ाये रहता, 'अबे, पेशकोव, सफेद कमीज वाला, अपने पाँव मत रगड़। अपने जूते के बन्द बांध ले।'

हम लोगों को धार्मिक शिक्षा देने एक युवक पादरी आता था। उसके सिर के बाल बहुत अच्छे थे। वह मुझसे इसलिये नाखुश था कि मुझे बाइबिल याद न होती थी। आते ही वह पूछता, क्या तूने किताब खरीदी, पेशकोव! या नहीं, 'हाँ खरीदी।' मैं उत्तर देता, 'नहीं खरीदी, हाँ।'

'क्या मतलब, खरीद ली ?'

'नहीं ।'

'तब तुम घर चले जाओ । हाँ घर । मैं तुम्हें नहीं पढ़ाऊँगा ।

निकाल दिया जाना मेरे लिये कोई बहुत बड़ी बात न थी । पादरी की शक्ल ईसा की तरह थी, उसकी आँखें औरतों की सी थीं । उसके हाथ मुलायम थे । परन्तु उसकी शिकायत के फलस्वरूप, व्यवहार की अकुशलता के आरोप के साथ मैं निकाल दिया जाऊँगा ऐसी घोषणा की गई ।

इसके लिये माँ ने मुझे इतना पीटा कि पहले ऐसी मार न पड़ी थी । मेरे सौभाग्य से स्कूल का निरीक्षण करने बिशप क्रीसाफ आये । अपने चोंगे में वह बहुत छोटा मालूम होता । उसकी टोपी अजीब थी जैसे काली बाल्टी पहना दी गई हो । उसने हाथ हिलाकर कहा, 'बच्चों आओ हम लोग बातचीत करें ।'

मेरी पारी आई तो मुझे बुलाकर पूछा, 'कितनी उम्र है तुम्हारी ?'

फिर फौरन ही पूछा, 'तुम्हें बाइबिल की कौन सी कहानी पसन्द है ?'

फिर मैंने बताया कि मेरे पास बाइबिल नहीं है और मुझे ठीक से शिक्षा भी नहीं दी जाती । अपना चोंगा हिलाकर उसने कहा, यह कैसे हो सकता है । तुम्हें प्रार्थना आती है ?'

मेरा पादरी आया और उसने बीच में टोका, 'एक मिनट ......'मुझे बताइये ।'

मैंने प्रार्थना सुना दी ।

तुम्हें यह किसने सिखाया। तेरे बाप ने पर तू लोगों से अच्छा व्यवहार किया कर।'

'अच्छा।' मैंने कहा।

'लेकिन तुम्हारी इतनी शिकायत क्यों?'

'मुझे स्कूल अच्छा नहीं लगता।'

'नहीं कोई और बात होगी।'

उसने एक नोटबुक निकाली और नोट किया, 'पेशकोव अलेक्सी।'

बिशप ने मुझे अपने पास खींच लिया। इससे सभी को ताज्जुब हुआ। उसने कहा, 'तेरी उम्र में सभी ऐसे ही होते हैं।'

यह सुनकर सभी बच्चे हँस पड़े। फिर वह जाने लगा।

'नमस्कार पिता, फिर जल्दी ही आइयेगा।' सभी ने कहा।

'मैं फिर आऊँगा, और कुछ किताबें लाऊँगा। मुझे वह बाहर तक हाथ पकड़ कर ले गया, 'अब तुम ठीक से रहोगे क्यों? मैं समझ गया कि तुम्हारी सबों से नहीं पटती। अच्छा नमस्कार!'

बिशप के व्यवहार से मेरे अन्तर में नया जोश भर आया पादरी भी जैसे मेरे प्रति बदल गया हो।

जब स्कूल का मामला ठीक हो गया तो घर में गड़बड़ी हुई। मैंने माँ के पास से एक रूबल चुराया। चोरी की कोई अच्छी योजना न थी। एक शाम को माँ कहीं जा रही थी तो बच्चे को मेरे देख रेख में छोड़ गई। समय काटने को मैंने नए बाप की एक पुस्तक—डाक्टर के अनुभव उठा लिया। उसके पृष्ठों में एक दस रूबल और एक-एक रूबल की नोट थी। मैंने 'राबिन्सन क्रूसो' का नाम सुना था। सो जब मैं दूसरे दिन 'राबिन्सन क्रूसो' की किताब लेने गया

तो वह जाने क्यों मुझे अच्छी न लगी। मैंने एक बाइबिल दो परियों की कहानी और खाने की चीजें खरीदीं।

स्कूल की दोपहर की छुट्टी में मैंने लड़कों को सुनाना शुरू किया, 'चीन में सभी चीनी रहते हैं, वहाँ का राजा चीनी है।' उसमें बड़ा मजा आया परन्तु स्कूल में वह अधिक न पढ़ी गई। मैं घर आया तो माँ चूल्हे पर अंडा पका रही थी। उसने अजनबी सी आवाज में पूछा, 'तू ने रूबल लिया है ?'

'हाँ उस किताब से लिया है।' जाने क्यों मैं इन्कार न कर सका झूठ न बोल सका। मैं कई दिनों स्कूल न गया था। इसलिए मेरे नए बाप से इसकी शिकायत की गई थी। अब चोरी की शिकायत होगी यह मैं जानता था। मैंने माँ को सब बता दिया। वह खिड़की पर बैठी मेरे भाई शास्का को दूध पिला रही थी। वह फिर गर्भवती थी। वह सदा थकी माँदी सी रहा करती थी। उसने मुझे देखा और उसका मुँह मछली के मुँह की तरह खुला रह गया।

'कहीं गड़बड़ी जरूर है।' उसने बहुत महीन आवाज में कहा, 'सभी लोग रूबल की बात कैसे जान गए।'

'तुम खुद ही पता लगा लो।'

'जरूर ही तूने कही होगी। सच सच बताना। कल मैं पता लगा लूँगी कि स्कूल में यह बात कैसे पहुँची।'

तब मैंने उसे अपने स्कूली मित्र का नाम बताया और वह रोने लगी। मैं रसोई घर में जाकर सुनने लगा। माँ रो रही थी, 'या खुदा।' मुझे इतना क्लेश हुआ कि मैं बाहर निकला। माँ ने पुकारा, 'अब कहाँ जा रहा है ? यहाँ आ ! मत जा !'

हम लोग जमीन पर बैठ गए। शास्का माँ की गोद में था और अपने कपड़े के बटन के साथ खेल रहा था। माँ ने मुझे चूम लिया और कहा, 'हम लोग गरीब हैं, और एक एक

पैसा......एक पैसा.....' वह वाक्य पूरा न कर सकी और मुझे अपने से चिपटा लिया, 'क्या बताऊँ।'

शास्का का सिर उसकी देह को देखते हुए काफी बड़ा था। उसकी गहरी नीली आँखें लगतीं जैसे सदा ही किसी का इन्तजार करती रहतीं हैं। वह इतनी छोटी उम्र में ही बोलना सीख गया था। वह मुझे बहुत अच्छा लगता। वह भी मेरे पास रहना पसन्द करता। जब मैं उसे उठा कर उछालता तो वह मेरे कान पकड़ लेता। यह बड़ा अच्छा लगता।

परन्तु अचानक ही उसकी मौत हो गई। वह बीमार भी नहीं था। सुबह तो वह हँस खेल रहा था कि शाम को उसकी लाश देखने को मिली। यह सब दूसरे बच्चे निकोलस के पैदा होने के दूसरे ही क्षण हुआ।

मैं शीघ्र ही एक परेशानी में फंस गया। एक दिन चा के समय मैं रसोई घर में प्रवेश कर रहा था कि सुना माँ कह रही थी।

'इजीनी, इजीनी, मैं प्रार्थना करती हूँ, मत जाओ।'

'बेवकूफ।' नए बाप ने उत्तर दिया।

'मैं जानता हूँ तू उसके पास जाती है।'

'तो इससे क्या?'

फिर दोनों चुप रहे। तभी मैंने घूँसे की आवाज सुनी। मैं भाग कर भीतर गया। कुर्सी से लगी माँ घुटने के बल गिरी सी बैठी थी। शायद उसके कलेजे में घूँसा लगा था। मेजपर रोटी काटने का चाकू था। यह मेरे पिता की एकमात्र चीज बची थी जो माँ ने बचा रखा था। मैंने उसे उठा लिया और अपनी पूरी शक्ति से अपने सौतेले बाप की बगल में मारा। सौभाग्य से उसी समय माँ ने उसे धक्का दे दिया इससे उसके कोट में फंस कर छूरी केवल उसका चमड़ा छू

पाई थी। अपनी बगल दबा कर वह कमरे से भागा। माँ ने मुझे गुस्से में ढकेल दिया। तभी बाहर से आकर मेरे सौतेले बाप ने मुझे धक्का दिया।

उस शाम को काफी देर बाद जब वह चला गया तो माँ मेरे पास आई। मुझे छाती से लगा लिया और चूमा। फिर आँसुओं के बीच ही बोली, 'मुझे क्षमा करना, प्यारे बेटे...... परन्तु तुमने छूरी ले......?'

मैंने उससे साफ साफ कहा कि मैं अपने सौतेले बाप और खुद को मार डालूँगा। परन्तु मुझे इसका अवसर न मिला।

लगभग साल भर बाद मैंने देखा कि वह अस्पताल में पड़ा जीवन की अंतिम साँसें ले रहा था मैंने देखा कि किस प्रकार धीरे धीरे उसकी चमकदार आँखें पथरा रही थीं। इस शोक के क्षण में भी मैं उसकी एक भी स्मृति न भूल सका।

अक्सर, रूसी जीवन की इस प्रकार की स्मृतियों को याद करके मैं सोचता हूँ कि क्या सचमुच यह सच थी। परन्तु यह वह सच्चाइयाँ हैं जिनको सामने लाना जरूरी है ताकि इस प्रकार के शर्मनाक जीवन की जड़ ही समाप्त हो जाए।

हमारा जीवन केवल इसीलिए अजीब नहीं है कि वह बहुत कठिन हो गया है परन्तु हमारे भीतर भी तो कोई शक्ति है जिसका प्रकाश बहुत तेज है। अच्छाई का महल बढ़ रहा है और अन्त में वह दिन आएगा कि मानवता जाग उठेगी और जीवन सुन्दरता तथा मनुष्यता से भरा होगा।

तेरह

एक बार फिर मैं नाना के पास रहने आ गया।

'तेरा क्या है, डाकू ?' कह कर नाना ने स्वागत किया, 'तेरी नानी तुझे अब खिलाएगी।'

'जरूर, जरूर !' नानी ने उत्तर दिया।

'जा उधर, अगर तू चाहे तो उसे खिला।' कह कर नाना ने मुझसे कहा, 'अब मैं और वह अलग अलग रहते हैं। हमें एक दूसरे से तनिक भी मतलब नहीं है।'

नानी खिड़की पर बैठी फीते बना रही थी। नाना अधिक बूढ़ा लगने लगा था। नानी ने हँस कर अपने बटवारे का हाल बताया।

नाना ने नानी का बालों वाला कोट बेचकर रुपया सूद पर लगा दिया। अब उसकी आदत हो गई थी कि वह अपने सभी परिचितों के यहाँ जाकर अपने बेटों के अन्याय की बात करके रुपया झटकता। वह नोट लाकर नानी के चेहरे पर फेंक कर कहता, 'देख, मूर्ख ! तू इसका सौवां भाग भी नहीं ला सकती।' यह सब रुपया भी वह उधार चलाता था।

घर के खर्चों का अजीब हिसाब था। एक दिन के खाने का खर्च नाना करता और एक दिन नानी। चा और चीनी दोनों की अलग अलग थी। परन्तु चा के बरतन दोनों के एक ही थे।

वे लोग जलाने का तेल भी बाँट लेने के फेर में थे। पचास वर्ष साथ रहकर भी यह भावनाएं आपस में कैसे आती थीं। मुझे आश्चर्य होता था। मेरे विरोध करने पर नानी कहती, 'वह अस्सी के लगभग है। उसे थोड़ी मूर्खता की छूट मिलनी ही चाहिये। हम लोग सब ठीक कर लेंगे। मैं काम भी खोजूंगी।'

मैंने भी अपना सहयोग दिया। सुबह का समय तथा छुट्टियों का पूरा समय गलियों में घूम घूम कर कतरन, कागज और धातु के टुकड़े बटोरता। इससे मुझे दो पेन* मिल जाते। मैं सब कुछ नानी को दे देता। उसे जेबों में रख कर वह कहती, 'वाह, धन्यवाद। बेटे, इससे खाने भर को तो हो ही जाएगा। तूने अच्छा किया।'

कूड़े बटोरने से अधिक लाभदायक था कि ओक के किनारे के मेले से दूकानों पर से चीजें चुराई जातीं। उनसे अधिक पैसे मिलते परन्तु सभी चीजों पर दूकानदार पहरा लगाये रहते।

मैंने छोटा सा गिरोह तैयार किया। दस साल का शंका व्याखीर, तेरह साल का कसत्रम, जो कबूतरों की चोरी में सजा पा चुका था। खाबी एक तातारी बारह वर्ष का लड़का, चौड़ीनाक वाला आठ वर्ष का याज़ और हाल से अधिक उम्र का ग्रेगरी चुरका एक दरजी का लड़का। हम सभी एक ही मुहल्ले के रहने वाले थे।

*३.६ पेंस = १० कोपेक

हमारे गाँव में चोरी इतना बड़ा अपराध न था क्योंकि सभी भूखों मरते थे और कभी कभी ही उन्हें खाने का प्रबन्ध हो पाता था। हमारे दल के प्रमुख चुरका की सलाह पर हमने चोरी शुरू की परन्तु कभी भी कोई रखवाला हमारा पता न पा सका।

चोरी के माल से प्राप्त धन का हम बँटवारा कर लेते। छः हिस्से लगे। सबों को पाँच से सात कोपेक तक मिले। इससे खाने का प्रबन्ध तो हो गया परन्तु व्याखीर को घर पर माँ ने उसे पीटा क्योंकि उसके पास इतने पैसे न थे कि उसकी माँ शराब का प्रबन्ध कर सके। कसत्रूम पैसे इकट्ठा करके कबूतर पालने का कार्यक्रम बना रहा था। चुरका की माँ पंगु थी अतः वह उसके लिये पैसे बचाता। खाबी अपने गाँव वापस जाने के लिए पैसे जुटाता लेकिन वह अपने गाँव का नाम ही भूल गया था।

पूरे गिरोह में केवल मैं और चुरका ही पढ़ सकते थे। वह कहा करता, 'जब मेरी माँ मर जायगी तब मैं स्कूल जाकर मास्टर से प्रार्थना करके भरती हो जाऊँगा। पढ़ाई करके मैं बिशप बनूँगा।'

व्यखीर को पौधों व घास से बड़ा प्रेम था। किसी को घास पर बैठा देखकर वह चीख पड़ता, 'जाजा कब्र में जाकर बैठ, घास में क्यों बैठा है?'

हमारे गिरोह को तातार लोग पसन्द करते। वे कभी कभी खुश होकर हम लोगों को चा की दावत देते। फिर इतना हँसते कि आँसू आ जाते।

अब जब मैं अपने उस समय के जीवन को याद करता हूँ तो देखता हूँ कि वह दिन बुरे नहीं थे। वह

आजाद जीवन—हमारा गिरोह कितना अच्छी तरह संगठित था।

स्कूल के दिन मेरे लिए सदा बुरे रहे। मेरी लड़कों से लड़ाई हो जाती तो वे मास्टर से शिकायत करते कि वे मेरे साथ इसलिये न बैठेंगे कि मैं सेवार की तरह बदबू देता हूँ! इससे मुझे बड़ी वेदना होती।

किसी तरह मैंने तीसरे दर्जे में पदार्पण किया। साथ ही मुझे इनाम भी मिला। दो जिल्ददार कहानियों की किताबें एक कापी। नाना ने तारीफ तो की परन्तु किताबों को लेकर सन्दूक में बन्द कर देना चाहा। नानी उन दिनों बीमार थी पर नाना की बातें वैसी ही थीं, 'वह एक दिन मुझे खा जायगी। मैं किताबें लेकर एक दूकान पर गया और पैंतालिस कोपेक में बेच आया और नानी को दे दिया।

स्कूल के बाद मैं गलियों में होता जहाँ मुझे बहुत अच्छा लगता क्योंकि वहाँ मैं पैसों का प्रबन्ध कर सकता था। रविवार को तो हमारा गिरोह मिलता और सारा दिन खुशी से बीतता।

परन्तु यह खुशी का जीवन बहुत दिन न चला! मेरे सौतेले बाप ने बहुत कर्ज ले लिया था, नौकरी छूट गई थी और वह भाग गया था। मेरे दूसरे दिन माँ सौतेले भाई निकी को लेकर नाना के घर आ गई थी। नानी ने नौकरी कर ली थी। मैं बच्चे की देख भाल करता था।

माँ इतनी दुबली पतली हो गई थी कि बहुत देर खड़ी भी न रह पाती थी और जिधर एक बार देखना शुरू करती देखती ही रहती।

नाना ने बच्चे को देखकर कहा, 'इसे अच्छा खाना मिलना

चाहिये परन्तु मेरे पास इतना कहाँ कि मैं सबों को खिला सकूँ।—इसे धूप में ले जा।'

मुझे छोटा बच्चा अच्छा लगता था। परन्तु नाना निर्दयी की तरह कहता, 'अगर यह मर जाए—जल्दी ही मर जाएगा—तब तब······।'

और इस पर माँ को एक वेदनापूर्ण खाँसी आ जाती।

खाने के समय नाना निकी को रोटी खिलाता। माँ कहती कि वह रोटी पर ही जी जाएगा।

माँ अजीब सी हुई जा रही थी। वह बहुत कम बोलती। लगा कि उसके खाट के पास मौत आ गई हो और लगता कि जैसे धीरे धीरे माँ मर रही है। क्योंकि अब नाना अक्सर बातों में मौत की चर्चा करता था। खासकर रात को दरवाजे के पास खाट बिछा कर वह कहता, 'मौत हमें पकड़ रही है।'

मैं भट्टी और खिड़की के बीच जमीन पर सोता। मुझे पांव फैलाने की जगह न मिलती तो मैं पांव चूल्हे में डाल देता। वहाँ से पड़ा पड़ा नाना की प्रत्येक बात सुनता व उसकी हर हरकत को देखता।

फिर वह दिन आया। अगस्त का इतवार और दोपहर का समय। मेरे सौतेले बाप को काम मिल गया था। वहीं उसने एक घर किराया पर लिया था और कुछ दिनों में माँ वहीं जाने वाली थी।

उस दिन सबेरे जरा तेज आवाज में माँ ने कहा, 'जाकर इजेने से कहो कि यहाँ आये।' फिर उठने की असफल कोशिश करके उसने कहा, 'जाओ दौड़ो, जल्दी।'

मुझे लगा कि उसकी आँखों की पुरानी चमक वापस आ गई है। जब मैं उसे लिवाकर आया तो फौरन ही नानी ने

मुझे नस लाने को भेज दिया। नस दूकान पर तैयार न थी। दूकानदार बनाने लगा। इससे मुझे इन्तजार करना पड़ा, काफी देर लगी। जब मैं लौटकर आया तो माँ बहुत अच्छे कपड़े पहने, बाल संवारे टेबिल पर बैठी थी।

'अब तबियत ठीक है न!' मैंने पूछा पर मेरे भीतर ही अविश्वास था। मुझे घूरकर वह बोली, 'यहाँ आ, तू कहाँ गया था?'

मैंने उसे उठाया और मेज पर रख दिया। खुद भट्ठी पर बैठ कर उसकी हरकत देखता रहा।

अपनी कुर्सी से उठकर वह बड़े कष्ट से खाट तक पहुँची और लेटकर रोने लगी तथा अपने रूमाल से आँसू पोछने लगी। उसके हाथ मानों चेतनाहीन हो रहे थे क्योंकि दो बार चेहरे के बजाय उसने तकिया पोंछा।

'थोड़ा पानी।'

मैं एक प्याले में पानी ले आया। उसने थोड़ा सा पिया। उसका हाथ बहुत ठंडा था। उसने मुझे पकड़ लिया और जोरों से सांस लेने लगी। उसने मुझे देखा और आँखें बन्द कर लीं, लगा कि उसके चेहरे पर कोई छाया पड़ गई। उसका रंग पीला हो गया। माँ का प्राणान्त कब हुआ मुझे ज्ञात नहीं—जाने कब तक मैं उसे यों ही पकड़े खड़ा रहा। उसकी साँस रुक गई। मैं प्याला लिये उसके पीले तथा ठण्डे पड़ते चेहरे की ओर घूरता रहा।

नाना आया। माँ को देखकर उसने कहा, 'माँ मर गई।'

फौरन ही मेरा सौतेला बाप आया। वह छोटा सा कोट और गर्मी वाली टोपी पहने था। वह अपने साथ एक

कुर्सी लाकर पास बैठ गया। वह खामोश था, बाद में बोला, 'देखा, यह मर गई।'

नाना की आँखें गीली थीं, जैसे किसी अन्धे की आँखें।

माँ की अन्तिम क्रिया के एक या दो दिन बाद नाना ने मुझसे कहा, 'एलेक्सी' मैं तुझे अपने गले नहीं बाँधे रह सकता। यहाँ अब तेरे लिए जगह नहीं। अब तुझे दुनिया के मैदान में जाना पड़ेगा।'

और मैं दुनिया के इस विशाल मैदान में निकल पड़ा।